श्री नृसिंह पाठावली

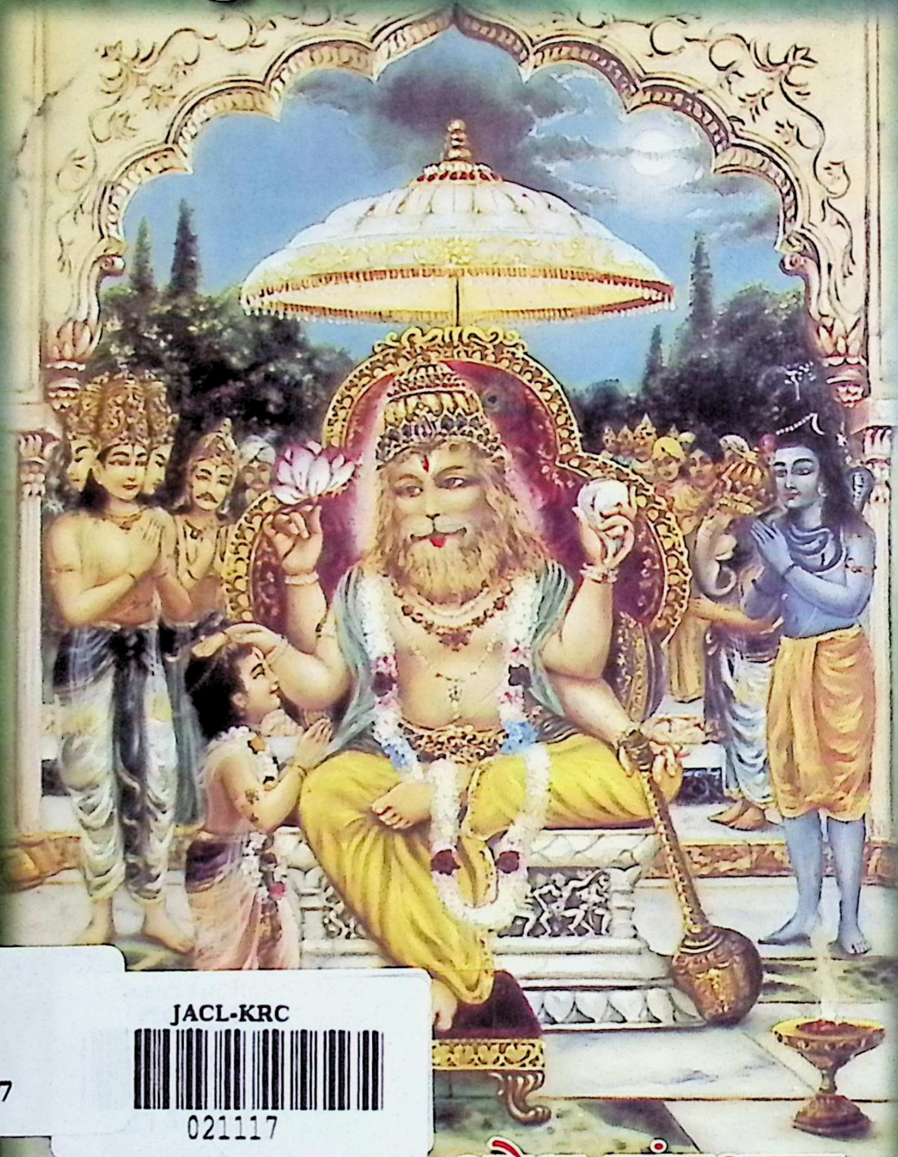

JACL-KRC
2
N
1117
021117

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन (भारत)

...तेमा रा. ७२।४६ ध. रा. ।५

१५ अक्टूबर रवि. नवमीं रा. ७।५४ पु. रा. ८।६६

015,1 (Q:223)
P05

With compliments from
Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi

SV-2024

21117

12.2 I

श्रीनृसिंह-पाठावली

Śrī Nṛsiṁha Pāṭhāvalī

प्रधान सम्पादक

डॉ० उमारमण झा

सम्पादक

गोपालचन्द्र घोष

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन–281121 (उ०प्र०) भारत

संस्कृति विभाग भारत सरकार तथा उ0प्र0 सरकार

के अनुदान से प्रकाशित

श्रीनृसिंह - पाठावली
Śrī Nṛsiṁha Pāṭhavalī

JACL-KRC
021117

प्रकाशक

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन-281121 (उ०प्र०) भारत

दूरभाष : (0565) 2540628, फैक्स: 2540276

Website : www.vrindavanresearch.org

Email : vrivbn@sancharnet.in

©वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

प्रथम संस्करण : ई. सन् 2005

मूल्य : रु. ३००

Price : Rs. 300

मुद्रण-संयोजन

विद्यालय प्रेस

केशीघाट, वृन्दावन ☎ : (0565) 2442571

समर्पण

करुणावतार भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के पार्षद आचार्य द्विज हरिदास गोस्वामी जी के वंशधर आचार्य पं० कामिनीवल्लभ गोस्वामी जी के एक मात्र पुत्र आचार्य पं० नृसिंहवल्लभ गोस्वामीजी उभय वेदान्ताचार्य, भागवत भूषण। महोदय, आपका आविर्भाव, केशीघाट के नृसिंह जी की कृपा एवं अनुष्ठान से हुआ था। परम धर्म एवं शास्त्रपरायण, निरपेक्ष, सभी सम्प्रदायों एवं आचार्यों के प्रति श्रद्धावान्, सिद्धान्त मर्मज्ञ विद्वान्, इस संस्थान से प्रारम्भिक काल से सम्बद्ध, आपकी छत्रछाया में परम तत्त्व का ज्ञान प्राप्त हुआ, आपकी ही निर्देशित एवं अभिलषित ''श्रीनृसिंह पाठावली'' आपके श्रीकर-कमलों में सादर समर्पित।

सेवक

गोपाल चन्द्र घोष

दो शब्द

बचपन की बात है। वैशाख की सन्ध्या में अचानक कानों में एक विशेषलय-छिछिर की छम, छम, छम, जै जै नृसिंहदेव की में बजते विजय घण्टों का तालबद्ध तुमुल नाद सुनकर कान खड़े हो जाते और हम बालकगण घरों से निकलकर बाजार की ओर दौड़ पड़ते। वहाँ दर्शन होते वीणाधारी नारदजी के, जिनके साथ "नारदजी खिन्नी मेवा फालसे" चिल्लाते बालकों की भीड़ चलती थी। नारदजी सन्देश देते थे दिनमुँदे होने वाली नृसिंह लीला का। थोड़ी देर बाद कूदते-फाँदते आते 'हिरनाकुस' (हिरण्यशिपु), जिनकी पगड़ी में हिरण के दो सींग खोंसे रहते, हाथ में लाठी पर कपड़े बाँधकर बनाई गयी गदा। वह उपद्रव का अभिनय करते हुए किसी के भी सिर पर गदा मार देते, ठेले वालों के सामान में से सब्जी, फल या खाने की कोई वस्तु थोड़ी सी लुटा देते थे। कोई बुरा नहीं मानता था।

दिनमुँदे चौराहे पर तख्त बिछाकर कागज या कपड़े से दो खण्डों में बना खोखला खम्भा जमा दिया जाता, जिसमें विराजमान हो जाते थे सिंह का चेहरा (मुखौटा) धारण किये नृसिंह भगवान्। प्रह्लाद बने एक बालक से हिरनाकुस का सम्वाद होता था और वह क्रुद्ध होकर खम्भे में गदाप्रहार करता तो उसके दोनों खण्डों को इधर-उधर गिराकर गर्जना करते हुए प्रकट हो जाते नरसिंहजी। घण्टों की लयबद्ध ध्वनि में भगवान् और असुर का नृत्यमय युद्ध

होता और नृसिंह उसे घुटनों पर लिटाकर उदर-विदारण कर देते। जयघोष के साथ उनकी आरती होती फिर वे निकल पड़ते नगर भ्रमण के लिए। कोई-कोई बिगड़ैल हिरनाकुस ज्यादा कूदफाँद करता और नृसिंह जी के हाथ से छूट-छूट भागता तो दर्शक उसे पकड़कर बलपूर्वक भगवान् के घुटनों पर डाल देते। वृन्दावन में न जाने कब से लोकोत्सव के रूप में यह नृसिंह लीला चली आ रही है, जो दो दिन बालकों को विशेष रूप से मस्त किये रखती है।

भारतवर्ष में सन्तों और भक्तों के प्रति बड़ी श्रद्धा है। वैष्णव भक्तों में ध्रुव और प्रह्लाद बालभक्त के रूप में देश विख्यात हैं। एक माता का सताया तो दूसरा पिता का। असुर जाति में होने के कारण प्रह्लाद की भक्ति अधिक महिमामयी है। उन्हें पिता द्वारा दिये गये कष्ट भी बहुत सहने पड़े। क्या-क्या यातनाएँ नहीं झेलनी पड़ीं। हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक 'होली' का त्यौहार तो उनकी कथा से ही जुड़ा है। हिरण्यकशिपु की बहिन होलिका का दहन भारतवर्ष के गाँव-गाँव में प्रतिवर्ष होता है, जो भक्त की रक्षा और अत्याचारी के विनाश की युगों से चली आ रही स्मृति है।

भक्त प्रह्लाद की कथा अनेक पुराणों में उल्लिखित है। अठारह पुराणों में श्री नृसिंह पुराण भी एक है, जिसमें वे ही प्रधान देव हैं। उपासना के क्षेत्र में उनकी प्रसन्नता और उपासक की कामना पूर्ति हेतु अनेक अनुष्ठान, साधन तथा सिद्धि के उपाय हैं। तन्त्रोपासना में मन्त्र, ध्यान, कवच, स्तोत्र, पटल, सहस्रनाम उपलब्ध हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी अनेक भाषाओं में प्रह्लाद चरित और नृसिंहावतार विषयों पर काव्य, नाटक आदि की रचना हुई है।

भगवान् विष्णु के भक्तवत्सल एवं भक्तरक्षक अवतारों में श्रीनृसिंहावतार की बड़ी महिमा है। अपने बालक भक्त के दृढ़ आस्था-विश्वासपूर्ण वचनों की सत्यता सिद्ध करने और प्राण बचाने के लिए

उन्होंने नरपशु रूप में खम्भे से प्रकट होकर असुर पिता का वध किया और पुत्र की रक्षा की। हिरण्यकशिपु-वध के पश्चात् भी उनका क्रोध शान्त नहीं हो रहा था, त्रैलोक्य प्रकंपित, देवगण स्तम्भित, लक्ष्मीदेवी सशंकित और साहस रहित थीं। तब ब्रह्माजी ने बालक प्रह्लाद को आगे भेजा उनका संहारक क्रोध शान्त करने। भगवान् नृसिंह ने शान्त होकर बालभक्त को गोदी में बैठा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरकर पशुवत् चाटने लगे। उन्होंने असुरवध में विलम्ब और बालक प्रह्लाद को पहुँचे कष्टों के लिए क्षमा भी माँगी। भगवान् का यह भक्तवत्सल संरक्षक स्वरूप भक्तों के लिए नित्य स्मरणीय, ध्येय बन गया।

भारत में श्रीनृसिंहोपासना धुर पूर्व से लेकर पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक सर्वत्र व्यापक है। अन्य देशों में भी इसके प्रचलन के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। शास्त्र से लेकर लोक तक इसकी सर्वप्रियता है। मूर्तिकला, चित्रकला-साहित्य तथा संगीत में नृसिंह, लीला अंकित, चित्रित, अभिव्यंजित होती रही है।

श्री नृसिंहजी की पर्याप्त मान्यता है। स्थान-स्थान पर अनेक मन्दिर हैं। युगल रसोपासना के गढ़ वृन्दावन में ही कई देवालय हैं, जिनमें दारु, धातु अथवा पाषाण के विग्रह हैं। गढ़वाल के जोशीमठ में एक सुप्रसिद्ध नृसिंह मन्दिर है, उसमें विराजमान श्री नृसिंह-विग्रह की एक भुजा दूसरी की तुलना में क्षीण है। जनश्रुति है कि यह भुजा निरन्तर क्षीण होती जा रही है। जब टूटकर गिर जायेगी तो वर्तमान श्री बदरीनाथ मन्दिर सदा के लिए बन्द हो जायेगा और उनके बजाय नीचाई पर स्थित 'भविष्य बदरी' पूजित होंगे, इस मन्दिर में श्री नृसिंह चतुर्दशी पर लोकनृत्य होता है, जिसमें नर्तक पर नरसिंह आ जाते हैं। कहते हैं एकबार आविष्ट नर्तक पूरे बकरे को ही कच्चा खा गया था। नृसिंह चतुर्दशी पर जगह-जगह नृसिंह लीलाएँ एक विशेष

प्रकार के लोकनृत्य के रूप में होती हैं। रातभर-दिनभर सिंह का आभास दिलाने वाली पोशाक, भारी-भारी मुखौटों और सिर पर चँवरों के केसर कलाप से हरि स्वरूप में सुसज्जित नर्तक नगर के राजमार्ग और गलियों में नाचते-फिरते हैं। उनके साथ लगे रहते हैं वराह, गणेश, हनुमान के स्वरूप और घण्टे घड़ियाल बजाते बालक, किशोर, युवा। मथुरा और राजस्थान के कई नगरों में भी ऐसी लीलाएँ होती हैं।

साठ सत्तर साल पहले यह नरसिंह-नृत्य युवाजनों के बल की परीक्षा होता था। चार-पाँच किलो का मुखौटा, बड़े-बड़े भारी चँवर सिर पर धारण किए वैशाख की भरी दुपहरी में तपती सड़कों पर नंगे पाँव नाचना बड़ों-बड़ों के बस की बात नहीं। ब्राह्मण युवा ही नृसिंह बनते थे। मेरे पिताश्री पं० श्यामसुन्दर लाल ने कई बार खूँटीदार खड़ाऊँ पहनकर नृसिंह-नृत्य किया था और एक हाथ से चक्रदण्ड लगाये थे, जो भारी मुखौटा पहने बड़ा दुष्कर और कठिन कार्य था। बुजुर्ग लोग आज भी उसकी चर्चा करते हैं।

रोग, शोक, भूत-प्रेत बाधा के विनाशन और विजय प्राप्ति हेतु श्रीनृसिंह की साधना, अनुष्ठान आदि किए जाते हैं। वैसे उन्हें उग्र देवता माना जाता है किन्तु दयालु और भक्त वत्सल भी। मेरी दादी ने भूत-भय भगाने के लिए बचपन में मुझे एक साबर मंत्र सिखाया था, जो अभी तक याद है-

हनुमान बलवान बारह बरस के ज्वान।
हाथ में लड्डू मुख में पान।।
चन्दन की चौकी रूपे के पाये।
भाग जाओ भूतनी नृसिंह देव आये।।

शोध संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री गोपाल चन्द्र घोष बड़े अध्येता और उपासना आदि की परम्पराओं के ज्ञाता हैं। उन्होंने

स्मरण मंगल, श्री गोपाल पाठावली, राधिका पाठावली आदि अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है। श्री नृसिंह पाठावली उसी माला का अगला पुष्प है। इसमें उन्होंने कहाँ-कहाँ से क्या-क्या लिया है, यह ग्रन्थ की भूमिका एवं सूचीपत्र से स्पष्ट है। साधकों तथा उपासकों के लिए यह अतीव उपादेय है। विश्वास है कि पहले ग्रन्थों की भाँति यह भी सुधीजनों में समादृत हो जायेगा। अनेक शारीरिक कष्टों को सहते हुए श्री घोष जी शिव संकल्प से जो सारस्वती साधना कर रहे हैं, उसकी प्रशंसा में शब्दों का संकोच हो जायगा। मैं उनके अनामय और दीर्घ आयुष्य की प्रार्थना करता हूँ। जिन-जिन महानुभावों ने इसके संकलन, लेखन, मुद्रण और प्रकाशन में जो-जो सहायता दी है, उसके प्रति श्री घोष जी आभार प्रकट कर चुके हैं। उन्हीं के स्वर में मेरा भी स्वर सम्मिलित है।

श्री वामन जयन्ती, 2062 विक्रमी — **-गोविन्द शर्मा**

दिनांक: 15 सितम्बर, सन् 2005 — निदेशक

FOREWORD

It is a matter of immense pleasure to us that Vrindavan Research Institute is bringing to light a composition of Mantras and Stotras relating to Narasimha, an incarnation of Lord Vishnu who killed Hiranya Kasyapu, a demon. This present work is known as Nrsiṁha Pāthāvalī or Narasiṁha Pāṭhāvalī.

Vrindavan Sodha Sansthan was established in 1968 by a public spirited philanthropist scholar, Dr. R.D. Gupta of the School of Indian and African Studies, University of London.

The primary aim of the institution is to collect, preserve, study and publish the manuscripts and to promote the Braj Culture.

Under such scheme Mr. Gopal Chandra Ghosh has taken a great pain to compose and edit a text namely Nṛsiṁha Pāṭhāvalī.

Narasiṁha or Nṛsiṁha is a famous incarnation of Lord Vishnu who protects all human beings as well as creatures. In the present text there are several stotras, mantras and prayogas.

The present text will be a valuable addition to the publications of vrindavan Research Institute.

The learned editor spared no pains to make it useful by adding several stotras of lord Narasimha who removes all troubles of the devotees.

DR. Uma Raman Jha
Director & Chief Editor

श्रीनृसिंह पाठावली सूचीपत्रम्

१.	श्रीमहानृसिंह यन्त्रम् (सविधिः)		
२.	अथर्वणीये	–	नृसिंह पूर्वतापनीयोपनिषत्।
३.	,,		नृसिंह षट् चक्रोपनिषत्।
४.	ब्रह्म संहितायाम्	–	त्रैलोक्य विजय नृसिंह कवचम्।
५.	ब्रह्माण्ड पुराणे	–	नृसिंह कवचम्।
६.	ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे	–	नृसिंह मन्त्र स्तवराजः।
७.	भविष्योत्तर पुराणे	–	लक्ष्मीनृसिंह हृदय स्तोत्रम्।
८.	नृसिंह पुराणे	–	लक्ष्मीनृसिंह कवचम्।।१।।
९.	,, ,,	–	लक्ष्मीनृसिंह कवचम्।।२।।
१०.	,, ,,	–	नृसिंह स्तोत्रम्।
११.	,, ,,	–	लक्ष्मीनृसिंह सहस्रनाम स्तोत्रम्।
१२.	नृसिंह पटले	–	नृसिंह अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्।
१३.	मार्कण्डेय कृतम्	–	नृसिंह गद्य स्तोत्रम्।
१४.	दाक्षिणात्य	–	नृसिंह शावर मन्त्रराजः।
१५.	जगद्गुरु श्रीमच्छंकराचार्य कृतम्	–	सङ्कष्टनाशन लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्रम्।
१६.	जगद्गुरु श्रीमन्मध्वाचार्य कृता	–	नृसिंह नख स्तुतिः।
१७.	केनचित् कृतः	–	नरसिंह महिमा स्तवः।
१८.	आचार्य पं० केशवदेव शास्त्री	–	नारसिंह महामंत्र प्रयोगः
१९.	नृसिंह शावर मन्त्र प्रकीर्णः।		
२०.	प्रह्लाद विरचितः नृसिंह स्तवः, श्रीमद् भागवते		
२१.	परिशिष्ट		

स्वयं प्रकट भगवान नृसिंह देव

केशीघाट, वृन्दावन

श्रीश्रीलक्षीनृसिंहाय नमः

''भूमिका''

प्रह्लाद संह्लादक भक्तवत्सल,
भक्ति प्रभाव प्रकटि नृसिंह हे।
स्वद्वेष्टवक्षःस्थल पाटन प्रभो,
शिष्टेष्टमूर्त्ते जय दुष्टभीषण।।
अन्तः कृपाति मृदुल,
बहिराटोप सुन्दर।
प्रह्लादांग वलेहोत्क,
स्फुटद् ब्रह्माण्डगर्जित।।
।।नमः।।८।।

–(श्रीपाद सनातन गोस्वामी कृतः कृष्णलीलास्तव)

हे प्रह्लाद के सम्यक् आनन्ददाता! हे भक्तवत्सल! हे भक्ति प्रभाव से आविर्भूत होने वाले श्री नृसिंह देव! अपने शत्रु हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण करने वाले हे प्रभो! आप सत्पुरुषों की मनोभिलाषा को पूर्ण करने वाले हैं और दुष्टजनों के लिए भय देने वाले हैं। हे प्रभो! आपकी जय हो। आपका हृदय करुणा से कोमल है और बाहर से आपकी गर्व भरी गर्जना भी सुन्दर है। आप भक्त प्रह्लादजी के अंगों को अति उत्सुक होकर चाटने वाले हैं।

आपकी विकट गर्जना से ब्रह्माण्ड छिन्न-भिन्न होने लगता है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

(प्रणाम-८) (यह उद्धरण श्रीश्यामलाल जी हकीम सम्पादित सनातन गोस्वामी कृत ''श्रीकृष्ण लीला स्तव'' से लिया गया।)

श्रीपाद सनातन गोस्वामी जी ने श्रीकृष्ण लीला स्तव नामक ग्रन्थ की रचना की है। उक्त ग्रन्थ में दशम स्कन्ध वर्णित श्री कृष्ण लीला के साथ ही साथ, चौबीस अवतारों, श्री चैतन्यदेव, श्री जगन्नाथ देव, श्रीमद् भागवतादि की छन्दोबद्ध वन्दना की है। नृसिंह देव की स्तुति में उनके स्वरूप का परिचयात्मक वर्णन है। भगवान के असंख्य अवतारों में चौबीस अवतार मुख्य हैं, जिनका श्रीमद् भागवत में विशद वर्णन किया गया है। परात्पर प्रभु का अवतरण दुष्टों का दमन, शिष्ट अर्थात् शरणागत आर्त्त भक्तजनों के रक्षणार्थ तथा सनातन धर्म की रक्षा हेतु ही होता है। ''**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।**

–(श्रीमद्भगवदगीता ४–८)

श्रीमद् भगवद्गीता की विभिन्न टीकाओं में अष्टादश टीकाओं के रचनाकारों ने बहुत सारगर्भित टीका की है। इस श्लोक के विवेचन में, कई महानुभावों ने कहा है–स्थान, काल, पात्र एवं प्रयोजनानुसार भगवान अवतार ग्रहण करते हैं। उनमें भी श्रेणी विभाग है–पूर्णावतार, अंशावतार, युगावतार, गुणावतार, आवेशावतार, प्रयोजनावतार एवं त्वरित प्रयोजनावतार आदि। त्वरित प्रयोजनावतारों में, सत्ययुग में, गजेन्द्रमोक्षणकारी श्रीहरि अवतार एवं प्रहलाद भक्त के वचन रक्षणार्थ स्तम्भ विदीर्ण कर नृसिंह अवतार का प्राकट्य भक्तवात्सल्य एवं कारुण्य का अद्भुत प्रकाश है।

आर्यावर्त्त में सत्ययुग में, मूलस्थान अर्थात् 'मुलतान' नामक स्थल में, शाप भ्रष्ट जय और विजय ने, हिरण्याक्ष तथा हिरण्यकशिपु नामक दैत्यराज के रूप में जन्म लिया। दोनों बहुत ही पराक्रमी एवं

अत्याचारी थे। भगवान वराहदेव के हाथ हिरण्याक्ष का वध हुआ, इससे कुपित होकर, हिरण्यकशिपु स्वर्ग एवं मर्त्य लोक में अत्याचार करने लगा। उसने कठोर तप करके ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त कर रखा था कि-वह दिन में, या रात्रि में नहीं मरेगा, नर या पशु द्वारा नहीं मारा जावेगा, अस्त्र-शस्त्राघात से आहत नहीं होगा और न घर में या बाहर ही मरेगा, ब्रह्माजी ने तथास्तु कह दिया। समय पाकर देवराज इन्द्र से घोर युद्ध हुआ और राजपाट देवताओं के हाथ आया। वह जंगलों में छिप गया उस समय उसकी रानी कयाधु जो कि गर्भवती थी, उसे नारदजी ने कृपापूर्वक अपने आश्रम में शरण दी और नित्य हरिकथा श्रवण कराते रहे। उसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ा। वह बालक जन्मजात भगवद्भक्त प्रहलाद के नाम से विख्यात हुआ। शैशवावस्था से वह भगवान नारायण का ध्यान, धारणा, नाम-कीर्त्तन करता था। नाम उपासना एवं ध्यान में प्रभु का साक्षात्कार होता था। अन्य दैत्य बालकों पर भी उसके सत्संग का प्रभाव पड़ा। हिरण्यकशिपु चरम विष्णुद्रोही था और क्रूर स्वभाव का था। नित्य भाँति-भाँति की यातनाएँ प्रहलाद को देने लगा। भगवान सभी परिस्थिति में उसकी रक्षा करते रहे। प्रहलाद चरित्र सभी पुराणों एवं उपपुराणों में वर्णित है। दु:सह उत्पीड़न से भी प्रहलाद अपने लक्ष्य से विचलित न हुआ। उसे सर्वत्र अपने प्रभु का दर्शन होने लगा। तभी एक दिन उसके पिता से पूछे जाने पर कि-तू जो कहता है, तेरा भगवान सदा सर्वत्र व्याप्त है, क्या इस पत्थर के खम्भे में भी है? उसके हाँ कहते ही हिरण्यकशिपु ने खम्भे में गदाघात किया और क्षणमात्र में प्रभु नारायण भयंकर गर्जना करते हुए स्तम्भ को विदीर्ण कर आधे नर और आधे पशु (सिंह) के रूप में प्रकट होकर अट्टहास करते हुये, हिरण्यकशिपु की ओर लपके। युद्ध हुआ, दिन रात्रि के सन्धिक्षण गोधूलि वेला में नर और पशु, नरसिंह रूप में, अस्त्र-शस्त्र नहीं अपने तीक्ष्ण नखाग्र भागों से, घर भी नहीं बाहर भी नहीं, देहली में, जल में न स्थल में,

उन्होंने अपनी जंघा पर रखकर हिरण्यकशिपु का वक्षस्थल विदीर्ण कर दिया। उनके उग्र रूप और भयंकर गर्जना से त्रिलोक काँपने लगा। देवता, गन्धर्व, किन्नरादि स्तुति गान करने लगे। प्रहलाद जी की स्तुति से वे शान्त हुए।

गजेन्द्र को निराकार से साकार रूप चिन्तन एवं स्तुति करने में समय लग गया, तब प्रभु प्रकट हुए परन्तु प्रहलाद की दृढ़ भक्ति निष्ठा एवं सत्य रक्षणार्थ प्रभु ने नरसिंह रूप में अवतार लेकर भक्तवत्सलता की पराकाष्ठा प्रदर्शित की है। श्रीमद्‌भागवत, विष्णुपुराणादि में इसका विस्तार से वर्णन है। नृसिंह अवतार का स्मरण ध्यान, समस्त विपदाओं से मुक्त कराने में चरम सहायक है। नृसिंह स्मरण से ऊर्जा स्फुरित होती है। एक बात चिन्तनीय है कि–नृसिंह पुराण को अष्टादश पुराणों में स्थान प्राप्त न हो सका। उपपुराणों की श्रेणी में रखा गया। क्या कारण है यह तो स्वयं वेदव्यास ही जानें, परन्तु ब्रज में एक लोकक्ति प्रसिद्ध है यथाः–

''कहीं कहीं गोपाल की गई सटक्की भूल।
मेवा तो काबुल करी, ब्रज में दिये बबूल।।''

फिर भी नृसिंह देव की महिमा में कोई ह्रास नहीं हुआ, बल्कि पाश्चात्य जगत में भी नृसिंह उपासना विकसित हो रहीं है। यूरोप में हयग्रीवदास द्वारा ''नृसिंह धाम'' की स्थापना इसका ज्वलन्त उदाहरण है। मुझे विभिन्न तीर्थ स्थानों में जहाँ भी दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, प्रायः सभी स्थानों में भगवान नृसिंह देव का किसी न किसी रूप में प्रभाव एवं उनकी महिमा का आभास हुआ। जगन्नाथ पुरीधाम के श्रीमन्दिर में, पूर्व एवं दक्षिण द्वार पर मन्दिरों में नित्य पूजित अर्चा विग्रह रूप श्रीनृसिंहदेव विराजमान हैं। जगन्नाथजी के निज मन्दिर के पीठ देवता श्री नृसिंहदेव, पार्श्व देवता श्री बराह एवं श्री वामनदेव की भव्य प्रतिमा शिखर संलग्न छोटे–छोटे मण्डपों में हैं। सीढ़ियों से चढ़कर दर्शनार्थी दर्शनकर सकते हैं। इस परिपाटी

का अनुसरण, वृन्दावन में (राजा कृष्णचन्द्र सिंह) महात्मा कृष्णदास उर्फ लालाबाबू ने स्व प्रतिष्ठित श्रीराधाकृष्ण चन्द्रमा जी के मन्दिर में की है। मन्दिर एवं नाट्य मन्दिर, शिखर तथा मन्दिर के पीठ देवता नृसिंह देव एवं पार्श्व में वराहदेव तथा वामन को शिखर में स्थापित किया गया है। नृसिंह चतुर्दशी के दिन, मचान बनाकर श्री विग्रह का अभिषेक प्रोक्षण, भोगराग तथा आरती होती थी। मन्दिर में कृष्णचन्द्रजी का नृसिंह वेष धारण होता था। मन्दिर में अभिषेक-पूजा तो होती है, बाहर भी आरती होती है।

जगन्नाथपुरी धाम में नृसिंह चतुर्दशी के दिन, नृसिंह लीलानुकरण तथा जगन्नाथजी का नृसिंह रूप धारण होता है एवं विशेष भोग शरबत फल एवं दधि पखाल (दध्योदन) आदि भोग लगता तथा स्तुति पाठ, नृसिंहार्चन होता है। उक्त परिपाटी का अनुसरण कर, गौड़ीय मन्दिरों में, नृसिंह चतुर्दशी के दिन, सायं अभिषेक, अर्चना, चन्दन लेपन, शीतल भोग तथा रात्रि में दध्योदन् (पखाल भोग) लागी होता है। मात्र एक दिन कच्चा यानी सकड़ा भोग रात्रि में लगता है। भुवनेश्वर में लिंगराज मन्दिर के प्रवेश द्वार पर प्राचीन श्री नृसिंहदेव विराजमान है। समग्र उड़ीसा के ग्राम एवं मठ-मन्दिरों में किसी न किसी रूप में श्री नृसिंह विराजित हैं। पुरीधाम में चक्रतीर्थ से मन्दिरगामी एक मार्ग में, प्राचीन देवी मन्दिर में नारसिंही, बाराही, माहेश्वरी आदि स्वरूपों का दर्शन मिला। श्रीमन्महाप्रभु चैतन्यदेव के नवद्वीप में चाँदकाजी के उद्धार करते समय, काजी ने कहा कि "कल रात्रि को मेरे शयनकक्ष में एक भयंकर सिंह का दर्शन मिला और उन्होंने मेरे वक्ष में नखाघात किया तथा कीर्त्तन में बाधा डालने एवं मृदंग फोड़ने को निषेध कर, सावधान किया। महाप्रभुजी ने-नृसिंहदेव को संकीर्त्तन रक्षक कहा है। पुरीधाम में अवस्थान काल में श्री चैतन्यदेव, जगन्नाथदेव के दर्शन हेतु जाते समय मन्दिर परिसर में श्रीनृसिंहदेव का दर्शन, स्तुति एवं संकीर्त्तन करके, दर्शनार्थ जाते थे। मठ, आश्रमों, विभिन्न मन्दिरों तथा उड़ीसा के कुछ ग्रामों एवं

जनपदों में परिभ्रमण करने का सुअवसर मिला सभी स्थानों में नृसिंह, हनुमान, शिवजी तथा तुलसी खम्भों का प्रभाव देखा। पुरी में चक्रतीर्थ के निकट 'नूलिया पाड़ा' अर्थात् मछुओं की बस्ती है। वहाँ आन्ध्रवासी मत्सजीवीओं के इष्टदेव "श्रीनृसिंह देव" का एक मन्दिर है। मैं वहाँ दर्शन करने गया; वहाँ पूजक ब्राह्मण को हीन समझा जाता है। उच्चवर्ग के लोग वहाँ नहीं जाते, प्रसाद या निर्म्माल्य तो दूर की बात है।

वाराणसी में श्री अन्नपूर्णाजी के मन्दिर में नृसिंह भगवान का दर्शन बाल्यकाल में किया था उस स्निग्ध एवं वात्सल्यमय स्वरूप को भूल नहीं पाता हूँ। काशी के कई स्थानों में नृसिंह देव विराजमान हैं। प्राचीन रईसों के महल के बर्हिभाग में भी नृसिंहदेव को उत्कीर्ण देखा। संग्रहालयों में प्राचीन नृसिंह तथा अन्य अवतारों की खण्डित मूत्तियाँ देखीं। प्रयाग के किले में, अक्षयवट के निकट प्राचीन नृसिंह, वराहादि विग्रह तथा शहर में एक स्थान पर लक्ष्मीनृसिंह का दर्शन मिला। नासिक में भी गुप्तकाल के दशावतारों में नृसिंहदेव के दर्शन होते हैं। परन्तु उज्जयिनी में नृसिंहघाट एवं स्थान-स्थान पर ११वीं या १२वीं सदी के नृसिंहदेव, वराह विग्रह के दर्शन होते हैं। दक्षिण भारत नृसिंहार्चन का गढ़ है। एक सौ आठ दिव्य देशों में नृसिंह एवं सुदर्शन अर्चना, विभिन्न ग्राम, शहरों एवं कस्बों में नृसिंह पीठ तथा अहोवल नृसिंह रामानुज सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध पीठ है। विष्वकसेन नामक विप्र की कथा विष्णुधर्मोत्तर पुराण में प्राप्त होती है। दक्षिण देश में किसी प्रान्त में विष्वकसेन नामक एकनिष्ठ विष्णु भक्त रहते थे। वहाँ का जमींदार परम शिव उपासक था। सूतक लगने के कारण वह मन्दिर में पूजा नहीं कर रहा था। अत: उसने विष्वकसेन विप्र से पूजा निर्वाह करने को कहा, उन्होंने असमर्थता व्यक्त की। जमींदार ने प्राणबध की धमकी दी, एवं बलात् उसे पूजा करने को प्रेरित किया। कहते हैं कि उसकी निष्ठा एवं लक्ष्य से अनुप्राणित होकर, शिवलिंग में से नृसिंह भगवान प्रकट हुए, जमींदार तथा उनके आमात्यों का संहार किया। आज भी वे स्फोट

लिंग नाम से प्रसिद्ध हैं। श्रीजी व गोस्वामी पाद ने ''भक्ति सन्दर्भ'' में इस प्रसंग का उल्लेख किया है। पनानृसिंह जहाँ मिश्री के पना का भोग लगता है, जीयड़ नृसिंह आदि असंख्य नृसिंह पीठ एवं मठ हैं। बंगाल में यत्र-तत्र सर्वत्र नृसिंह मन्दिर विशेषकर नवद्वीप एवं मायापुर तथा निकटस्थ क्षेत्रों में हैं। सभी में नृसिंह चतुर्दशी के दिन विशेष पूजा, स्तवकवच पाठ एवं भोगराग होता है। हिमाचल प्रदेश में, चम्बा तथा कूलु की घाटी में श्रीहरिराय जी के दर्शन होते हैं। यह त्रिमुख युक्त विष्णु मूर्त्ति हैं। सामने का मुख वामन का, पार्श्व भाग में एक ओर बराह तथा दूसरी ओर नृसिंहदेव के मुख का दर्शन है। यह स्वरूप, अपामार्जन स्तोत्र में वर्णित हैं। यह बहुत सिद्ध स्तोत्र है। इसका पाठ एवं कुश द्वारा मार्जन से, कठिन से कठिन रोगों से मुक्ति मिलती है तथा कल्याण होता है। हिमाचल क्षेत्रों में हरिरायजी की उपासना एवं अर्चना प्रचलित है। बहुत से वैदिक एवं कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के घरों में शालिग्राम शिला के साथ हरिरायजी की पूजा होती है। नेपाल में नृसिंह चतुर्दशी बहुत समारोह के साथ मनायी जाती है। विष्णु मन्दिरों में नृसिंह देव का दर्शन मिलता है। गण्डकी नदी से प्राप्त शिलाओं में, विष्णु के विभिन्न अवतारों के लक्षण युक्त शिलाओं में नृसिंह शिला का एक विशिष्ट स्थान है। किन्हीं शिलाओं में चक्र के साथ ही साथ केशरादि दृष्ट होते हैं। कहीं-कहीं शिला में स्वयंमेव सिंह मुखाकृति का दर्शन होता है। वृन्दावन में वनखण्डी मौहल्ला स्थित ध्यानदास कुंज में सिंह मुख शिला दर्शनीय हैं। वहीं वर्तमान महन्त पं० प्राणगोपालाचार्य जी सेवायत हैं। वंशीवट क्षेत्र में घोटावाली कुंज के पार्श्वभाग में वैकुण्ठवासी पं० किशोरीरमणाचार्य महाराज की सेवा में सिंह मुख शिला का दर्शन मैंने किया है।

पं० रामाचार्यतनय पं० कृष्णदेवाचार्य कृतः प्राचीन स्मृति ग्रन्थ ''श्रीनृसिंह परिचर्या'' तथा हरिभक्ति विलासादि वैष्णव स्मृति ग्रन्थों में जहाँ शालिग्राम शिला लक्षणों पर विवेचन हुआ है, वहाँ श्रीनृसिंह

शिला लक्षण में कहते हैं-जिनकी बाँयीं ओर दो समान चक्र और रङ्ग कृष्णवर्ण एवं जिनमें बिन्दु चिह्न हैं, उन्हें लक्ष्मी-नृसिंहदेव कहा गया है, ऐश्वर्य, भोग एवं मोक्ष प्रदाता हैं। जिस शिला में, नरसिंह के तीन बिन्दु और कपिल के पाँच बिन्दु हैं, वे कपिल नृसिंह मात्र ब्रह्मचारी, यतियों के सेव्य हैं। जिस शिला के मुख द्वार में दो स्थूल चक्र, रङ्ग गुड़ या लाख के समान हो तथा मुख द्वार के ऊपरी भाग में रेखा हो, वह योग नृसिंहदेव प्रसिद्ध हैं। मन्दिरों में आश्रमों एवं सदाचारी वैष्णवों के यहाँ प्रसन्न रहते हैं। इन शिलाओं के साथ द्वारकाचक्र श्वेत वर्ण का रखना प्रशस्त है। प्राचीन कालीदह मार्ग में ''नृसिंह टेकरी'' नामक स्थान में लक्षण युक्त शिलाओं के दर्शन होते हैं। चैतन्य चरितामृत आदि ग्रन्थों के रचयिता परम दार्शनिक एवं रससिद्ध आचार्य श्रीकृष्णदास कविराज के प्रिय शिष्य, श्री मुकुन्द कविराज, जोकि मुलतान के निव.सी थे, उनके सेवित्त श्रीविग्रह श्री राधानयनानन्ददेव, श्री नृसिंहदेव प्राचीन शालिग्राम शिला उन्हीं की भजन स्थली, बड़ी सूरमाकुंज, पत्थरपुरा वृन्दावन में विराजमान हैं। नित्य सेवा-पूजा अर्चनादि के साथ ही साथ नृसिंह चौदस के दिन अभिषेक, पूजा, अवतार कथा, कीर्त्तनादि का अनुष्ठान परम्परानुसार होता आ रहा है।

निम्बार्क सम्प्रदाय के श्रीस्वभूराम द्वारा, हरिव्यासी थोक के ब्रजवासी गोस्वामी वृन्दों के सेवित्त अति प्राचीन श्री नृसिंहदेव का मन्दिर केशीघाट में प्रसिद्ध है। कहा जाता है श्री विग्रह भू-भाग से स्वयं प्रकट एवं भागवत में वर्णित लक्षणों से समलंकृत हैं। सर्वांग पोशाक, श्रृंगार से आवृत्त रहते हैं। नृसिंहदेव का राजोपचार से पूजन, महाभिषेक, भोगराग तथा सर्वाङ्ग में चन्दन लेपन होता है। नृसिंह लीलानुकरण होता है। स्थानीय एवं बहिरागत भक्तवृन्द दर्शन, भेंटकर प्रसाद तथा पंचामृत लेते हैं। ठीक इसी प्रकार श्रीराधावल्लभजी के मन्दिर के निकट प्राचीन नृसिंह मन्दिर है वहाँ पूजन, महाभिषेक झाँकी तथा प्रसाद वितरण होता है। नृसिंह लीलानुकरण होता है। छीपीगली

में प्राचीन वाराह जी मन्दिर में, श्री नृसिंहदेव विराजमान हैं एवं वहाँ एक प्राचीन नृसिंहदेव मुखौटा (चेहरा) का भी पूजन होता है। कहते हैं कि एकबार उक्त चेहरे को धारण कर एक ब्रजवासी युवक विप्र को नृसिंहलीलानुकरण करते समय नृसिंहावेश आ गया, और अट्टहास करने लगा; कहते हैं, हिरण्यकशिपु के अभिनेता व्यक्ति को पकड़कर जाँघ पर रखकर पेट फाड़ दिया और स्वयं भी शरीर त्याग दिया। श्री रामानुज सम्प्रदाय के उत्तर भारत के प्रसिद्ध पीठ एवं देवालय श्रीरङ्गनाथ भगवान के मन्दिर में अनेक स्तम्भों में श्रीनृसिंहदेव के विभिन्न रूपों का दर्शन होता है। जैसे–स्तम्भ विदीर्ण नृसिंह, हिरण्यकशिपु वध करते नृसिंह, सुदर्शन नृसिंह आदि। इसी मन्दिर में झूला मण्डप के पार्श्व भाग में श्री सुदर्शन–नृसिंहदेव का नित्याराधन होता है। एक तरफ यन्त्रात्मक श्री सुदर्शन चक्रराजमय विग्रह विराजित हैं और एक ओर पृष्ठ भाग में योग नृसिंहदेव हैं। नृसिंह चतुर्दशी के दिन सायंकाल प्रबन्ध पाठ विशेष अर्चना, त्रिमज्जन (महाभिषेक) भोग राग, स्तुति पाठ एवं पंचामृत, प्रसाद वितरण होता है। यदि चतुर्दशी में, शनिवार और स्वाती नक्षत्र आ जाय तो उस तिथि को महापर्व युक्त माना गया है। ब्रज में, यत्र–तत्र प्राचीन नृसिंह मन्दिर हैं। नन्दग्राम में नृसिंह मन्दिर में श्री नृसिंह तथा श्री वराहदेव के प्राचीन विग्रह सेवित हैं। गोवर्धन में नृसिंह मन्दिर, मथुरा में दशावतार मन्दिर तथा नृसिंह मन्दिर एवं नृसिंह लीलानुकरण प्रसिद्ध हैं।

नृसिंह–परिचर्या, हरिभक्ति विलास, साधन दीपिका, पूजा मयूख, औड़म्बर संहिता, रघुनन्दन स्मृति आदि ग्रन्थों में पूजा विधि, शिला लक्षण आदि का वर्णन मिलता है। वल्लभ कुल (पुष्टि मार्ग) मन्दिरों में उस दिन विशेष पूजा, अभिषेक, पदगायन एवं नृसिंह लीलानुकरण दर्शनीय हैं।

"श्रीशंकर दिग्विजय" ग्रन्थ में वर्णन है कि दक्षिण में एक अघोरी तन्त्राचार्य ने आचार्य शंकर पर आक्रमण किया, उस समय

पद्मपाणि नामक शिष्य ने नृसिंहदेव का स्मरण किया जिससे उसमें नृसिंहावेश आ गया। उन्होंने उस अघोरी का वध कर डाला। श्रीशंकराचार्य पाद ने उस समय ''श्रीलक्ष्मी नृसिंह स्तोत्र'' की रचना की। उसे संकष्टनाशक लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र भी कहा जाता है। सम्भवत: इस घटना से प्रेरित होकर आचार्यपाद ने नृसिंह पूर्वोत्तर तापनी की विस्तार से टीका की, जो अपने में एक पृथक् ग्रन्थ है। इसकी पूर्ण एवं खण्डित प्रतियाँ संस्थान में हैं। दक्षिण के श्रृंगेरीमठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीपाद विद्यामान्य तीर्थ ने सपरिकर तीर्थ यात्रा क्रम में वृन्दावनस्थ ग्वालियर मन्दिर में चार दिन अवस्थान किया। वहाँ उनकी सेवा में स्फटिक शिवलिंग चन्द्रशेखर जी के साथ ही साथ तीन शालिग्राम शिलाएँ थीं, जिनका वे नित्य पुरुष सूक्त मन्त्र से अभिषेक करते थे, तुलसीदल गन्ध पुष्पों से अर्चना करते थे, उक्त शिलाओं में नील आभा युक्त केशर सहित नृसिंह शिला भी थी। तुलसीदल से आवृत्त रखते थे। परमहंस कुल मुकुटमणि श्रीधर स्वामीपाद के इष्टदेव भगवान नृसिंह देव थे। आप पर पूर्ण: कृपा थी, आपके श्रीमद् भागवत, भगवद्गीता, विष्णुपुराण आदि की टीका तथा अन्य ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। ''श्रीधरो सकलं वेत्ति श्रीनृसिंहप्रसादत:''। कहाँ तक नृसिंह महिमा का वर्णन किया जाय, आदिवासी, ग्रामीण लोग जो नजर उतारते हैं या बाधा दूर करने का प्रयोग करते हैं, झाड़-फूँक करते हैं, उसमें नृसिंहदेव की दुहाई दी जाती है। मुलतान में तो हिन्दूमात्र नृसिंहदेव का अर्चन करता था। कहा जाता है कि जहाँ हिरण्यकशिपु का वध हुआ था, वह स्थान ''नृसिंह धाम'' के नाम से प्रसिद्ध है। अनेक चामत्कारिकजन श्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं। हिन्दू एवं मुसलमान दोनों उक्त स्थल को मान्यता देते हैं। वहाँ की पवित्र धूल को माथे लगाते हैं उन्हें 'शेर-ए-अल्लाह' कहते हैं। सम्भवत: दो दशक पूर्व से वहाँ पूजित ''नृसिंह विग्रह'' तथा पवित्र सामग्री हरिद्वार 'नृसिंह धाम' में विराजित हैं। दशनामी संन्यासी वर्ग सेवा-पूजा करते हैं।

संस्थान के ग्रन्थों का अवलोकन करते-करते तोडल तन्त्र के दशम उल्लास में, देवी के दस महाविद्या स्वरूपों का दस अवतारों के रूप में वर्णन प्राप्त होता है। वहीं-एक श्लोक में- "......छिन्नमस्ता नृसिंह का" अर्थात् देवी छिन्नमस्ता ही नृसिंह रूप में प्रकट हुईं। ऐसे ही "शरभेश्वर कल्प" शरभ शालुवाय पटलं, एवं शरभेश्वर स्तोत्रों के संग्रह भी संस्थान में उपलब्ध हैं। उक्त ग्रन्थ में वर्णन है कि, एक कल्प में शिवजी का 'शरभेश्वर' नामक विशालकाय पक्षी का रूप धारण करना और हिरण्यकशिपु वध के पश्चात् उन्मत्त नृसिंह, जो कि वैकुण्ठ वापिस नहीं ज़ा रहे थे, उन्हें तीक्ष्ण चंचुओं एवं पंजों से पकड़कर पर्वत पर ले जाकर विदीर्ण कर दिया। विष्णु तत्त्व, भगवान परावासुदेव जी में समाहित हो गया। इस प्रकार का एक हस्तलिखित चित्र बड़गल रामानुजीय मन्दिर "मौनीजी का मन्दिर" वृन्दावन में देखने को मिला था। इन रहस्यों के बारे में, जब मैंने स्व० बटुकनाथ शास्त्री जी, तन्त्र एवं ज्योतिषाचार्य से पूछा तो उन्होंने स्वाभाविक रूप से कहा कि-यह कल्पान्तर की घटनाएँ हैं और जैसे हमलोग रंगमंचों पर नाटक खेलते हैं और अपना कर्त्तव्य दिखाकर लोगों पर प्रभाव छोड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार देवता लोग भी नाटक खेलते हैं और उनके साथ कोई उद्देश्य जुड़ा रहता है। एक ही परब्रह्म की विविध क्रीड़ाएँ हैं। प्रहलादजी कहते हैं-

कि, हे भगवान! आप सत्त्वगुणों के आश्रय हैं। ब्रह्मादि सभी देवता आपके आज्ञाकारी भक्त हैं। ये हम दैत्यों की तरह आपके प्रति विद्वेष भाव नहीं रखते हैं। प्रभो! आप अनेक सुन्दर अवतार ग्रहण करके, इस जगत के कल्याण एवं अभ्युदय के हेतु, उसे आत्मानन्द की प्राप्ति कराने के लिए विविध प्रकार की लीलाओं का सम्पादन करते हैं।

-(भागवत ७/९/१३)

"नरसिंह पुराण" के दक्षिणी पाठ एवं उत्तर भारत में प्रचलित पाठ में भिन्नता है। पं० बटुकनाथ जी शास्त्री के द्वारा नेपाल में प्रचलित

"नृसिंह कवच" की प्रति मुझे प्राप्त हुई थी, जो पाठावली में समाविष्ट है। एतदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूँ। भगवान श्रीनृसिंहदेव के मन्त्र, यन्त्र, पूजा अनुष्ठान तथा ध्यान शीघ्र फलप्रद हैं एवं आत्म रक्षा परक हैं। हरिभक्ति विलास में जहाँ मन्त्र उपासना, जपादि का विधान है, वहाँ टीका में कहा गया है-नृसिंह मन्त्र जपत् पावक मन्त्र हैं, जप मात्र से, ध्यान मात्र से शक्ति संचारित हो जाती है। भगवान नृसिंहदेव का पूजन यन्त्र जो आचार्य श्री कल्याणेश्वर चट्टोपाध्याय, सेवायत, श्रीराधागोविन्द जी मन्दिर, भवानीपुर, कलकत्ता से प्राप्त किया, उसका पाठावली में समावेश है। वृन्दावनस्थ श्री गोपीश्वर महादेव मन्दिर के सेवायत आचार्य पं० रामगोपाल गोस्वामी, एम.ए., एल.टी., साहित्याचार्य का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने निजी संग्रह से कई नृसिंह पाठ प्रदान किये एवं उत्साहवर्धन करते रहे। गोलोकवासी पं० वृन्दावनविहारी मिश्र ब्रह्मर्षि 'विन्दुजी' तथा पं० वनमालीदास शास्त्रीजी आदि का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समय-समय पर सदुपदेश से अनुगृहीत किया। रङ्गनाथ प्रेस के विद्वत्प्रवर हितैषी पं० केशवाचार्यजी शास्त्री महोदय ने कृपापूर्वक सन् 1967 ई० में एक "नृसिंह महामन्त्र प्रयोग" रोग प्रशमनार्थ दिया एवं शिक्षा भी दी। उक्त नियम से छः माह तक साधन करता रहा, आरोग्य लाभ भी हुआ। उसे जन हितार्थ मैंने पाठावली में संकलन किया, आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने सहपाठी मित्रवर आचार्य पं० रामप्रसाद जी ब्रजवासी टीलावाले ज्योतिषाचार्य जी का आभारी हूँ, जिन्होंने प्राचीन ताड़पत्र के हस्तलिखित तमिल ग्रन्थ के "नृसिंह शावर मन्त्र" दक्षिणी पाठ की नागरी प्रतिलिपि मुझे उपलब्ध करायी। मैंने वह पाठावली में साधकों के प्रयोग हेतु दी है। बड़ी सूरमा कुंज, पत्थरपुरा के महन्त श्री प्रेमदासजी शास्त्री महाराज द्वारा दिये गए सत्परामर्श हेतु कृतज्ञ हूँ।

जगन्नाथ पुरीधाम के 'मुक्ति मण्डप ग्रन्थागार' से स्व० पं० रघुनाथ पंचतीर्थ शास्त्रीजी ने प्राचीन ताड़पत्र उड़ीया पोथी से मार्कण्डेय ऋषि कृतः "नृसिंह गद्य स्तोत्र" की प्रतिलिपि प्रदान की थी एवं आशीर्वाद दिया था। मैं इस प्रसंग में, बहिन डॉलीपुरी तथा उनके परिवार

का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हवाई यात्रा द्वारा बम्बई, तथा वहाँ से उज्जैन, नासिक, सीरडी एवं मध्य भारत के कुछ भागों का दर्शन कराया।

मैं इस कार्य के लिए आदेश एवं स्वीकृति हेतु माननीय श्रीमान् रमेशचन्द्र त्रिपाठी, पूर्व महासचिव राज्यसभा, भारत सरकार एवं मानद सभापति वृन्दावन शोध संस्थान, मानद सचिव श्रीमान राजकुमार गुप्त, एडवोकेट साहब का अत्यन्त आभारी हूँ। संस्थान के पूर्व निदेशक श्रीमान रवीन्द्रदत्त जी पालीवाल एवं वर्तमान निदेशक श्रीमान प्रोफेसर गोविन्द शर्मा जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य की प्रेरणा दी। माननीय डॉ० नरेश चन्द्र जी बंसल साहब का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पाठावली सम्बन्धित सामग्री अन्य स्थानों से दिलवाने का आश्वासन दिया, परन्तु कलेवर वृद्धि के भय से नहीं ले सका।

चित्र प्रति सहायता के लिए मैं, स्वामीमाधवानन्ददासजी, श्रीगोपालजी प्रकाशन (इस्कॉन) भुवनेश्वर का आभारी हूँ, जिन्होंने श्रीनृसिंह देव सम्बन्धित फोटोओं को उपलब्ध कराया एवं श्रीमान् विष्णुदान शर्मा, सभासद, नगरपालिका परिषद्, वृन्दावन को भी इस कार्य हेतु हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं स्नेहास्पद डॉ० ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' शोध एवं प्रकाशन विभाग, शोध संस्थान का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रेस कॉपी संयोजन में सहायता की। संस्थान के श्री रजत शुक्ला, श्री सुकुमार गोस्वामी, डॉ० श्रीमती कमलेश पारीक एवं श्री रामगोपाल शर्मा तथा अन्य सभी सहयोगी बन्धुओं का आभारी हूँ। श्रीहरिनाम प्रेस, वृन्दावन तथा महेश लाइब्रेरी, कलकत्ता का आभारी हूँ। उनकी प्रतियों से पाठ मिलाने में सहायता ली।

परम स्नेही सभासद श्रीमान विष्णुदान शर्मा, विद्यालय प्रेस, वृन्दावन को हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ, जिन्होंने बहुत मनोयोग के साथ इस कार्य का निर्वाह किया एवं गति दी।

गोपाल चन्द्र घोष

सम्पादक

विधिः- शनि पुष्य नक्षत्र योग या आर्द्रा शनिवार योग या नृसिंह चतुर्दशी, स्वाति के दिन इस यन्त्र को ताम्र, रौप्य, स्वर्ण, या स्फटिक शिला पर खुदवाकर पंचगव्य, पंचामृत से अभिषेककर पुरुषसूक्त मन्त्र एवं नृसिंह मन्त्र से अर्चन एवं यन्त्र प्रतिष्ठा करें और पूजा में रखें। सर्व रक्षा।

श्रीश्रीमहानृसिंह यन्त्रम्

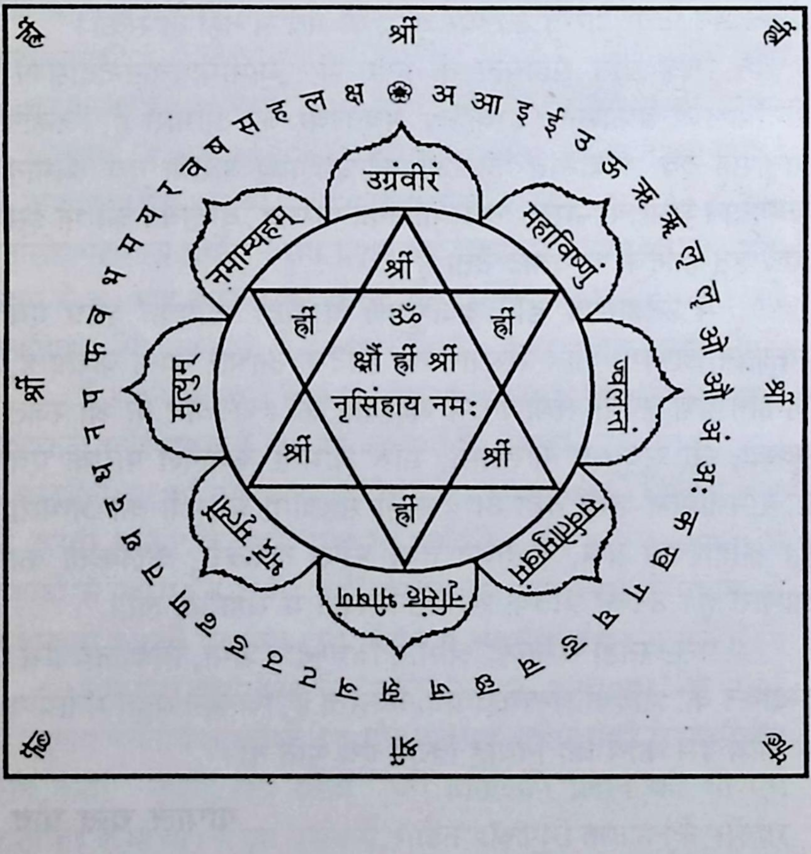

नृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्

यत्तुर्योङ्काराग्रपराभूमिस्थिरवरासनम्।
प्रतियोगिविनिर्मुक्ततुर्यतुर्यमहं महः।।
ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।१।।

आपो वा इदमासन्सलिलमेव स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभ- वत्तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्ततेदं सृजेयमिति तस्यामाद्यत्पुरुषो मनसाऽभिगच्छति तद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति तदेषाभ्युक्ता- कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्। सतो बन्धुमसति निरबिन्दन्हृदि प्रतीष्य कवयो मनीषेत्युपैनं तदुपनमति यत्कामो भवति स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा स एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभमपश्यत्तेन वै सर्वमिदमसृजत यदिदं किंच तस्मात्सर्वमिदमानुष्टुभमित्याचक्षते यदिदं किंचानुष्टुभो वा इमानि भूतानि जायन्तेऽनुष्टुभा जातानि जीवन्त्य- नुष्टुभं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तस्यैषा भवत्यनुष्टुप्प्रथमा भवत्यनुष्टुबुत्तमा भवति वाग्वा अनुष्टुब्वाचैव प्रयन्ति वाचैवोद्यन्ति परमा वा एषा छन्दसां यदनुष्टुबिति।।१।।

ससागरां सपर्वतां सप्तद्वीपां वसुंधरां तत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयाद्यक्षगन्धर्वाप्सरोगणसेवितमन्तरिक्षं तत्साम्नो द्वितीयं पादं जानीयाद्वसुरुद्रादित्यैः सर्वैर्देवैः सेवितं दिवं तत्साम्नस्तृतीयं पादं

जानीयाब्रह्मस्वरूपं निरंजन परमव्योम्निकं तत्साम्नश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। ऋग्यजुःसामाथर्वाणश्चत्वारो वेदाः साङ्गाः सशाखाश्चत्वारः पादा भवन्ति। किं ध्यानं किं दैवतं कान्यङ्गानि कानि दैवतानि किं छन्दः क ऋषिरिति।।२।।

स होवाच प्रजापतिः स यो ह वै तत्सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रियाऽभिषिक्तं तत्साम्नोऽङ्गं वेद, श्रिया हैवाभिषिच्यते सर्वे वेदाः प्रणवादिकास्तं प्रणवं तत्साम्नोऽङ्ग वेद, स त्रींल्लोकाञ्जयति चतुर्विंशत्यक्षरा महालक्ष्मीर्यजुस्तत्साम्नोऽम्नं वेद, स आयुर्यशः कीर्तिज्ञानैश्वर्यवान्भवति, तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति, द्वात्रिंशदक्षरं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात्स्त्रीशूद्रः स मृतोऽधो गच्छति तस्मात्सर्वदा नाचष्टे यद्याचष्टे स आचार्यस्तेनैव मृतोऽधो गच्छति।।३।।

स होवाच प्रजापतिरग्निर्वै वेदा इदं सर्व विश्वानि भूतानि प्राणा वा इन्द्रियाणि पशवोऽन्नममृतं सम्राट्स्वराड्विराट्तत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयादृग्यजुः सामाथर्वरूपः सूर्योऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषस्तत्साम्नो द्वितीयं पादं जानीयाद्य औषधीनां प्रभवति तारापतिः सोमस्तत्साम्नस्तृतीयं पादं जानीयात्स ब्रह्मा स शिवः स हरिः स इन्द्रः सोऽग्निः सोऽक्षरः परमःस्वराट् तत्साम्नश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। ॐ उग्रं प्रथमस्याद्यं ज्वलं द्वितीयस्याद्यं नृसिं तृतीयस्वाद्यं मृत्युं चतुर्थस्वाद्यं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, तस्मादिदं साम यत्र कुत्रचिन्नाचष्टे यदि दातुमपेक्षते पुत्राय शुश्रूषवे दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय चेति।।४।।

क्षीरोदार्णवशायिनं नृकेसरिं योगिध्येयं परमं पदं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, वीरं प्रथमस्यार्धान्त्यं तंसं द्वितीय-

स्यार्धान्त्यं हंभी तृतीयस्यार्धान्त्यं मृत्युं चतुर्थस्यार्धान्त्यं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, तस्मादिदं साम येन केनचिदाचार्यमुखेन यो जानीते स तेनैव शरीरेण संसारान्मुच्यते मोचयति मुमुक्षुर्भवति जपात्तेनैव शरीरेण देवतादर्शनं करोति, तस्मादिदमेव मुख्यं द्वारं कलौ नान्येषां भवति, तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयाद्यो जानीते स मुमुक्षुर्भवति।।५।।

ॐ ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं नृकेसरिविग्रहम्। कृष्णपिङ्गल-मूर्ध्वरेतं विरूपाक्षं शंकरं नीललोहितमुमापतिं पशुपतिं पिनांकिनं ह्यमितद्युतिमीशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ-धिपतिर्यो यजुर्वेदवाच्यस्तं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। महा प्रथमान्तार्धस्याद्यम्। र्वतो द्वितीयान्तार्धस्याद्यं, षणं तृतीयान्तार्धस्याद्यं, नमा चतुर्थान्तार्धस्याद्यं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। तस्मादिदं सच्चिदानन्दमयं परं ब्रह्म तमेवं विद्वानमृत इह भवति। तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति।।६।।

विश्वसृज एतेन वै विश्वमिदमसृजन्त यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजो विश्वमेनाननु प्रजायते ब्रह्मणः सायुज्यं सलोकतां यन्ति तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। विष्णुं प्रथमस्यान्त्यं मुखं द्वितीयस्यान्त्यं भद्रं तृतीयस्यान्त्यं म्यहं चतुर्थस्यान्त्यं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। योऽसौ सोऽवेदयदिदं किं चात्मनि ब्रह्मण्यानुष्टभं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। स्त्रीपुंसोर्वा य इहैव स्थातुमपेक्षते स सर्वैश्वर्य ददाति यत्र कुत्रापि म्रियते देहान्ते देवः परं ब्रह्म तारकं व्याचष्टे, येनासावमृती भूत्वा सोऽमृतत्वं च गच्छति। तस्मादिदं साममध्यगं जपति तस्मादिदं प्रजापतिस्तस्मादिदं सामाङ्गं प्रजापतिर्य एवं वेदेति महोपनिषत्। य एतां महोपनिषदं वेद स कृतपुरश्चरणोऽपि महाविष्णुर्भवति महाविष्णुर्भवतीति।।७।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु प्रथमोपनिषत्समाप्ता।।१।।

देवा ह वै मृत्योः पाप्मभ्यः संसाराच्चविभयुस्ते प्रजापतिमुपाधावंस्तेभ्य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं प्रायच्छत्तेन वै सर्वे मृत्युमजयन्सर्वे पाप्मानमतरन्संसाराच्चतरंस्तस्माद्यो मृत्योः पाप्मभ्यः संसाराच्च बिभीयात्स एवं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं प्रतिगृह्णीयात्स मृत्युं जयति स पाप्मानं तरति स संसारं तरति तस्य ह वै प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा पृथिव्यकारः स ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः स साम्नः प्रथमः पादो भवति, द्वितीयाऽन्तरिक्षं स उकारः स यजुर्भिर्यजुर्वेदो विष्णू रुद्रास्त्रिष्टुब्दक्षिणाग्निः स साम्नो द्वितीयः पादो भवति, तृतीया द्यौः स मकारः स सामभिः सामवेदो रुद्रा आदित्या जगत्याहवनीयः स साम्नस्तृतीयः पादो भवति, याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा सोमलोक ओंकारः सोऽथर्वणैर्मन्त्रैरथर्ववेदः संवर्तकोऽग्निर्मरुतो विराडेक ऋषिर्भास्वती सा साम्नश्चतुर्थः पादो भवति।।१।।

अष्टाक्षरः प्रथमः पादो भवत्यष्टाक्षरास्त्रयः पादा भवन्ति, एवं द्वात्रिंशदक्षराणि संपद्यन्ते द्वात्रिंशदक्षरा वा अनुष्टुब्भवन्ति, अनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टमनुष्टुभा सर्वमुपसंहृतं तस्य हि पञ्चाङ्गानि भवन्ति, चत्वारः पादाश्चत्वार्थेङ्गानि भवन्ति, सप्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ कवचाय हुम्। ॐ अस्त्राय फडिति प्रथमं प्रथमेन युज्यते द्वितीयं द्वितीयेन, तृतीयं तृतीयेन चतुर्थं चतुर्थेन पञ्चमं पञ्चमेन व्यतिषक्ता वा इमे लोकास्तस्माद्व्यतिषक्तान्यङ्गानि भवन्त्योमित्येतदक्षरमिदं सर्वे तस्मात्प्रत्यक्षरमुभयत ओंकारो भवतीत्यक्षराणां न्यासमुपदिशन्ति ब्रह्मवादिनः।।२।।

तस्य ह वा उग्रं प्रथमं स्थानं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, वीरं द्वितीयं स्थानं महाविष्णुं तृतीयं ज्वलन्तं चतुर्थं सर्वतोमुखं

पञ्चमं नृसिंहं षष्ठं भीषणं सप्तमं भद्रमष्टमं मृत्युमृत्युं नवमं नमामि दशममहमित्येकादशं स्थानं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। एकादशपदा वा अनुष्टुब्भवत्यनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टमनुष्टुभासर्वमुपसंहृतं तस्मात्सर्वमिदमानुष्टुभं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति।।३।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्नथ कस्मादुच्यत उग्रमिति, स होवाच प्रजापतिर्यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वॉल्लोकान्सर्वान्देवान्सर्वानात्मनः सर्वाणि भूतान्युद्गृह्णात्यजस्रं सृजति विसृजति विवासयत्युद्ग्रह्यत उद्ग्रह्यते। स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं नभीममुपहन्तुमुग्रम्। मृडा जरित्रे सिंह स्तवानो अन्यं ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः। तस्मादुच्यत उग्रमिति। अथ कस्मादुच्यते वीरमिति यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वाल्लोकान्सर्वान्देवान्सर्वानात्मनः सर्वाणि भूतानि विरमति विरामयत्यजस्रं सृजति विसृजति वासयति। यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः। तस्मादुच्यते वीरमिति। अथ कस्मादुच्यते महाविष्णुमिति। यः सर्वांल्लोकान्व्याप्नोति व्यापयति स्नेहो यथा पललपिण्डमोतप्रोतमनुप्राप्तं व्यतिषक्तो व्याप्यते व्यापयते। यस्मान्न जातः परोऽन्योऽस्ति य आविवेश भुवनानि विश्वा। प्रजापतिः प्रजया संविदानस्त्रीणि ज्योर्तीषि सचते स षोडशीति। तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति। अथ कस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वांल्लोकान्सर्वान्देवान्सर्वानात्मनः सर्वाणि भूतानि स्वतेजसा ज्वलति ज्वालयति ज्वाल्यते ज्वालयते। सविता प्रसविता दीप्तो दीपयन्दीप्यमानः। ज्वलञ्ज्वलिता तपन्वितपन्संतपन्रोचनो रोचमानः शोभनः शोभमानः कल्याणः। तस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति। अथ कस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति। यस्मादनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्चति सर्वतः शृणोति सर्वतो गच्छति सर्वत आदत्ते स सर्वगः सर्वतस्तिष्ठति। एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः। यमप्येति भुवनं सांपराये नमामि तमहं सर्वतोमुखम्। तस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति। अथ कस्मादुच्यते

नृसिंहमिति। यस्मात्सर्वेषां भूतानां ना वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च सिंहो वीर्यतमः श्रेष्ठतमश्च तस्मान्नृसिंह आसीत्परमेश्वरो जगद्धितं वा एतद्रूपमक्षरं भवति। प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्याय मृगो नमीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा। तस्मादुच्यते नृसिंहमिति। अथ कस्मादुच्यते भीषणमिति। यस्माद्यस्य रूपं दृष्टवा सर्वे लोकाः सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि भीत्या पलायन्ते स्वयं यतः कुतश्चिन्न बिभेति। भीषाऽस्माद्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः। भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः। तस्मादुच्यते भीषणमिति। अथ कस्मादुच्यते भद्रमिति। यस्मात्स्वयं भद्रो भूत्वा सर्वदा भद्रं ददाति रोचनो रोचमानः शोभनः शोभमानः कल्याणः। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। तस्मादुच्यते भद्रमिति। अथ कस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति। यस्मात्स्वमहिम्ना स्वभक्तानां स्मृत एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति। य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य च्छायामृतं यो मृत्युमृत्युः कस्मै देवाय हविषा बिधेम। तस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति। अथ कस्मादुच्यते नमामीति। यस्माद्यं सर्वे देवा नमन्ति मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनश्च। प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं यदत्युक्थम्। वस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे। तस्मादुच्यते नमामीति। अथ कस्मादुच्यतेऽहमिति। अहमस्मि प्रथमजा ऋता३स्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य ना३भायि। यो मा ददाति स इदेव मा३वाः। अहमन्नमदन्त-मा३द्मि। अहं विश्वं भुवनमभ्यभवा३म्। सुवर्न ज्योतीः। य एवं वेदेत्युपनिषत्।।४।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु

द्वितीयोपनिषत्समाप्ता।।२।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्नानुष्टुभस्य मन्त्रराजस्व नारसिंहस्य शक्तिं वीजं च नो ब्रूहि भगव इति। स होवाच प्रजापतिर्माया वा एषा

नारसिंही सर्वमिदं सृजति सर्वमिदं रक्षति सर्वमिदं संहरति। तस्मान्मायामेतां शक्तिं विद्याद्य एतां मायां शक्तिं वेद स पाप्मानं तरति सोऽमृतत्वं च गच्छति महतीं श्रियमश्नुते मीमांसन्ते ब्रह्मवादिनां ह्रस्वा वा दीर्घा वा सुता वेति। यदि ह्रस्वा भवति सर्व पाप्मानं दहत्यमृतत्वं च गच्छति, यदि दीर्घा भवति महतीं श्रियमाप्नुयादमृतत्वं च गच्छति, यदि प्लुता भवति ज्ञानवान्भवत्यमृतत्वं च गच्छति। तदेतदृषिणोक्तं निदर्शनम्सईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रः श्रियं लक्ष्मीमौपलामम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युत आहुस्तां विद्यां ब्रह्मयोनिं स्वरूपां तामिहायुषे शरणं प्रयद्ये। सर्वेषां वा एतदभूतानामाकाशः परायणं सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव जायन्ते। आकाशादेव जातानि जीवन्त्याकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तस्मादाकाशं बीजं विद्यात्तंदेतदृषिणोक्तं निदर्शनम्हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्। य एवं वेदेति महोपनिषत्।।१।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु
तृतीयोपनिषत्समाप्ता।।३।।

देवाह वै प्रजापतिमब्रुवन्नानुष्टुभस्य मन्त्रराजस्य नारसिंहस्याङ्ग-मन्त्रान्नो ब्रूहि भगव इति। स होवाच प्रजापतिः प्रणवं सावित्रीं यजुर्लक्ष्मीं नृसिंहगायत्रीमित्यङ्गानि जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकार एव यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योंकार एव सर्वह्येतद्ब्र-ह्मायमात्मा ब्रह्म सोऽयमात्मा चतुष्पाजागरितस्थानो बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः स्वप्नस्थानेऽन्तः-प्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक्तैजसो द्वितीयः पादो यत्र सुप्तो न कंचन कामं कामयते न कंचन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तं सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक्चेतोमुखः

प्राज्ञस्तृतीय: पाद एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि: सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानां न बहि:प्रज्ञं नान्त:प्रज्ञं नोभयत: प्रज्ञं नाप्रज्ञं न प्रज्ञानघनमदृष्टमव्यवहार्यमग्रह्यमलक्षणमलिङ्गमचिन्त्यभव्यवदेश्य-मेकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चो पशमं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेय:।।१।।

अथ सावित्री गायत्री या यजुषा प्रोक्ता तथा सर्वमिदं व्याप्तं घृणिरिति द्वे अक्षरे सूर्य इति त्रीण्यादित्य इति त्रीण्येद्वै सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रियाभिषिक्त य एवं वेद श्रिया हैवाभिषिच्यते। तदेतदृ-चाऽभ्युक्तमृऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदु:। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासत इति। न ह वा एतस्यर्चा न यजुषा न साम्नाऽर्थोऽस्ति य: सावित्री वेदेति। ॐ भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मी: सुव:कालकर्णी। तन्नो महालक्ष्मी: प्रचोदयादित्येषा वै महालक्ष्मीर्यजुर्गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा भवति गायत्री वा इदं सर्वं यदिदं किंच तस्माद्य एतां महालक्ष्मीं याजुर्षी वेद महतीं श्रियमश्नुते। ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्न: सिंह: प्रचोदयादित्येषा वै नृसिंहगायत्री वेदानां देवानां निदानं भवति य एवं वेद स निदानवान्भवति।।२।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्नथ कैर्मन्त्रैर्देव: स्तुत: प्रीतो भवति स्वात्मानं दर्शयति तन्नो ब्रूहि भगव इति। स होवाच प्रजापति:। ॐ उं ओं यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नम: १।

ॐ ग्रं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नम: २।

ॐ वीं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च महेश्वरस्तस्मै वै नमो नम: ३।

ॐ रं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च पुरुषस्तस्मै वै नमो नम: ४।

ॐ मं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चेश्वरस्तस्मै वै नमो नम: ५।

ॐ हां ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्या सरस्वती तस्मै वै नमो नम: ६।

ॐ विं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्या श्रीस्तस्मै वै नमो नमः ७।

ॐ ष्णुं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्या गौरी तस्मै वै नमो नमः ८।

ॐ ज्वं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्या प्रकृतिस्तस्मै वै नमो नमः ९।

ॐ लं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्या विद्या तस्मै वै नमो नमः १०।

ॐ तं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चोंकारस्तस्मै वै नमो नमः ११।

ॐ सं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्याश्चतस्रोऽर्धमात्रास्तस्मै वै नमो नमः १२।

ॐ वं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये च वेदाः साङ्गाः सशाखास्तस्मै वै नमो नमः १३।

ॐ तों ॐ यो वै नृसिंहों देवो भगवान्ये पञ्चाग्नयस्तस्मै वै नमो नमः १४।

ॐ मुं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्याः सप्त व्याहृतयस्तस्मै वै नमोनमः १५।

ॐ खं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ लोकपालास्तस्मै वै नमो नमः १६।

ॐ नृं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टो वसव स्तस्मै वै नमो नमः १७।

ॐ सिं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये रुद्रास्तस्मै वै नमो नमः १८।

ॐ हं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये च चादित्यास्तस्मै वै नमो नमः १९।

ह्रीं भिं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ ग्रहास्तस्मै वै नमो नमः २०।

ॐ षं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यानि पञ्चमहाभूतानि वै नमो नमः २१।

ॐ णं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च कालतस्मै वै नमो नमः २२।

ॐ भं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च मनुस्तस्मै वे नमो नमः २३।

ॐ द्रं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च मृत्युस्तस्मै वे नमो नमः २४।

ॐ मृं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः २५।

ॐ त्युं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः २६।

ॐ मृं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च प्राणस्तस्मै वै नमो नमः २७।

ॐ त्युं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः २८।

ॐ नं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सोमस्तस्मै वै नमरे नमः २९।

ॐ मां ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च विराट्पुरुषस्तस्मै वै नमो नमः ३०।

ॐ म्यं ॐ यो वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च जीवस्तस्मै वै नमो नमः ३१।

ॐ हं ॐ यो वै नृसिंहो दैवो भगवान्यश्च सर्वं तस्मै वै नमो नमः ३२।

इति तान्प्रजा पतिरब्रवीदेतैर्द्वात्रिंशन्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तुवते ततो देवः प्रीतो भवति स्वात्मानं दर्शयति। तस्माद्य एतैर्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तौति स देवं पश्यति स सर्वं पश्यति सोऽमृतत्वं च गच्छति य एवं वेदेति महोपनिषत्।।३।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु
चतुर्थोपनिषत्समाप्ता।।४।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्महाचक्रं नामचक्र नो ब्रूहि भगव इति सार्वकामिकं मोक्षद्वारं यद्योगिन उपदिशन्ति स होवाच प्रजापतिः षडरं वा एतत्सुदर्शनं महाचक्रं तस्मात्षडरं भवति षट्पत्रं चक्रं भवति षड् वा ऋतव ऋतुभिः संमितं भवति मध्ये नाभिर्भवति नाभ्यां वा एतेऽराः प्रतिष्ठिताः। मायया वा एतत्सर्वं वेष्टितं भवति नात्मानं माया स्पृशति तस्मान्मायया बहिर्वेष्टितं भवति। अथाष्टारमष्टपत्रं चक्रं भवत्यष्टाक्षरा वै गायत्री गायत्र्या संमितं भवति बहिर्मायया वेष्टितं भवति क्षेत्रं क्षेत्रं वा मायैषा संपद्यते। अथ द्वादशारं द्वादशपत्रं चक्रं भवति द्वादशाक्षरा वै जगती जगत्या संमितं भवति बहिर्मायया वेष्टित भवति। अथ षोडशारं षोडशपत्रं चक्रं भवति षोडशकलो वै पुरुषः पुरुष एवेदं सर्वं पुरुषेण संमितं भवति मायया बहिर्वेष्टितं भवति।

अथ द्वात्रिंशदरं द्वात्रिंशत्पत्रं चक्रं भवति द्वात्रिंशदक्षरा वा अनुष्टुबनुष्टुभा संमितं भवति बहिर्मायया वेष्टितं भवत्यरैर्वा एतत्सुबद्धं भवति वेदा वा एतेऽराः पत्रैर्वा एतत्सर्वतः परिक्रामति छन्दांसि वै पत्राणि।।१।।

तदेवं चक्रं सुदर्शनं महाचक्रं तस्य मध्ये नाभ्यां तारकं भवति यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवत्यष्टसु पत्रेष्वष्टाक्षरं नारायणं भवति द्वादशसु पत्रेषु द्वादशाक्षरं वासुदेवं भवति। षोडशसु पत्रेषु मातृकाद्याः सबिन्दुकाः षोडश कला भवन्ति। द्वात्रिंशत्सु पत्रेषु द्वात्रिंशदक्षरं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं भवति। तद्वा एतत्सुदर्शनं महाचक्रं सार्वकामिकं मोक्षद्वारमृङ्मयं यजुर्मयं साममयं ब्रह्ममय-ममृतमयं भवति। तस्य पुरस्ताद्वसव आसते रुद्रा दक्षिणत आदित्याः पश्चाद्विश्वे देवा उत्तरतो ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा नाभ्यां सूर्याचन्द्रमसौ पार्श्वयोः। तदेतदृचाऽभ्युक्तमृचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तं न वेद किमृचा करिष्यति य इचद्विदुस्त इमे समासत इति। तदेतन्महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद स महान्भवति स गुरुर्भवति स सर्वेषां मन्त्राणामुपदेष्टा भवत्यनुष्टुभा होमं कुर्यादनुष्टुभार्चनं तदेतद्रक्षोघ्नं मृत्युतारकं गुरुतो लब्धं कण्ठे बाहौ शिखायां वा बन्धीत सप्तद्वीपवती भूमिर्दक्षिणार्थं नावकल्पते तस्माच्छ्रद्धया यां कांचिद्दद्यात्सा दक्षिणा भवति।।२।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्नानुष्टुभस्य मन्त्रराजस्य फलं नो ब्रूहि भगव इति स होवाच प्रजापतिर्य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्य-मधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आदित्यपूतो भवति स सोमपूतो भवति स सत्यपूतो भवति स ब्रह्मपूतो भवति स विष्णुपूतो भवति स रुद्रपूतो भवति स वेदपूतो भवति स सर्वपूतो भवति स सर्वपूतो भवति।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु प्रथमोऽध्यायः।।१।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स मृत्युं तरति स पाप्मानं तरति स ब्रह्महत्यां तरति स भ्रूणहत्यां तरति स वीरहत्यां तरति स सर्वं तरति स सर्वं तरति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं सोऽग्निं स्तम्भयति स वायुं स्तम्भयति स आदित्यं स्तम्भयति स सोमं स्तम्भयति स उदकं स्तम्भयति स सर्वान्देवान्स्तम्भयति स सर्वान्ग्रहान्स्तम्भयति स विषं स्तम्भयति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु तृतीयोऽध्यायः।।३।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स भूर्लोकं जयति स भुवर्लोकं जयति स स्वर्लोकं जयति म महर्लोकं जयति स जनोलाकं जयति स तपोलोकं जयति स सत्यलोकं जयति स सर्वलोकं जयति स सर्वलोकं जयति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स मनुष्यानाकर्षयति स देवानाकर्षयति स नागानाकर्षयति स यक्षानाकर्षयति स ग्रहानाकर्षयति स सर्वानाकर्षयति स सर्वानाकर्षयति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते सोऽग्निष्टोमेन यजते स उक्थ्येन यजते स षोडशिना यजते स वाजपेयेन यजते सोऽतिरात्रेण यजते सोऽप्तोर्यामेण यजते सोऽश्वमेधेन यजते स सर्वैः ऋतुभिर्यजते स सर्वैः ऋतुभिर्यजते।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु षष्ठोऽध्यायः।।६।।

य एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स ऋचोऽधीते

स यजू ँ ष्यधीते स सामान्यधीते सोऽथर्वाणमधीते सोऽङ्गिरसमधीते स शाखा अधीते स पुराणान्यधीते स कल्पानधीते स गाथा अधीते स गाथा अधीते स नाराशंसीरधीते स प्रणवमधीते यः प्रणवमधीते स सर्वमधीते स सर्वमधीते।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्सु सप्तमोऽध्यायः।।७।।

अनुपनीतश मेकमेकेनोपनीतेन तत्सममुपनीतशतमेकेमेकेन गृहस्थेन तत्समं गृहस शतमेकमेकेन वानप्रस्थेन तत्समं वानप्रस्थशत-मेकमेकेन यतिना तत्समं यतीनां च शतं पूर्णं रुद्रजापकेन तत्समं रुद्रजापिशतमेकमेकेनाथर्वशिरः शिखाध्यायकेन तत्सममथर्वशिरः शिखाध्यायकशतमेकमेकेन मन्त्रराजजापकेन तत्समं तद्वा एतत्परमं धाम मन्त्रराजाध्यायकस्य यत्र सूर्यो न तपति यत्र न वायुर्वाति यत्र न चन्द्रमास्तपति यत्र न नक्षत्राणि भान्ति यत्र नाग्निर्दहति यत्र न मृत्युः प्रविशति यत्र न दुःखं सदानन्दं परमानन्दं शाश्वतं शान्तं सदाशिवं ब्रह्मादिवन्दितं योगिध्येयं यत्र गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः। तदेतद्द-चाभ्युक्तम्तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदमिति तदेतन्निष्कामस्य भवति तदेतन्निष्कामस्य भवति।।३।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्खष्टमोऽध्यायः।।८।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहपूर्वतापनीयोपनिषत्समाप्ता।।५।।

नृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्॥२९॥

ॐ भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम०।।१।। स्वस्ति न इन्द्रो
वृद्धश्रवा:०।।२।।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्नणोरणीयां समिममात्मानमोंकारं नो व्याचक्ष्वेति तथेत्योमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्यो व्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकार एव यच्चान्यस्त्रिकालतीतं तदप्योंकार एव। सर्वं ह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म तमेतमात्मानमोमिति ब्रह्मणैकीकृत्य ब्रह्म चात्मनोमित्येकीकृत्य तदेकमजरममरममृतमभयमोमित्यनुभूय तस्मिन्निदं सर्वं त्रिशरीरमारोप्य तन्मयं हि तदेवेति संहरेदोमिति तं वा एतं त्रिशरीरमात्मानं त्रिशरीरं परं ग्रह्मानुसंदध्यात्स्थूलत्वात्स्थूलभुक्त्वाच्च सूक्ष्मत्वात्सूक्ष्मभुक्त्वाच्चैक्यादानन्द भोगाच्च सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जा-गरितस्थान: स्थूलप्रज्ञ: सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुख: स्थूलभुक्चतुरात्मा विश्वो वैश्वानर: प्रथम: पाद: स्वप्नस्थान: सूक्ष्मप्रज्ञ: सप्ताङ्ग एकोन-विंशतिमुख: सूक्ष्मभुक्चतुरात्मा तैजसो हिरण्यगर्भो द्वितीय: पादो यत्र सुप्तो न कंचन कामं कामयते न कंचन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम्। सुषुप्तस्थान एकीभूत: प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक्चेतोमुख-श्चतुरात्मा प्राज्ञ ईश्वरस्तृतीय: पाद एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि: सर्वस्व प्रभवाप्ययौ हि भूतानां त्रयमप्येतत्सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रं चिदेकरसो ह्ययमात्माऽथ चतुर्थश्चतुरात्मा तुरीयावांसेतत्वादेकैकस्यो-

तानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैस्त्रयमत्रापि सुषप्तं स्वप्नं मायामात्रं चिदेकरसो ह्यथायमादेशो न स्थूलप्रज्ञं न सूक्ष्मप्रज्ञ नोभयतः प्रज्ञं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं न प्रज्ञानघनमदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म-प्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शिवं शान्तमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स एवात्मा स विज्ञेय ईश्वरग्रासस्तुरीयतुरीयः।।१।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु प्रथमःखण्डः।।१।।

तं वा एतमात्मानं जाग्रत्यस्वप्नमसुषुप्तं स्वप्नेऽजाग्रतमसुषुप्तं सुषुप्तेऽजाग्रतमस्वप्नं तुरीयेऽजाग्रतमस्वप्नमसुषुप्तमव्यभिचारिणं नित्यानन्तसदेकरसं ह्येवं चक्षुषो द्रष्टा श्रोत्रस्य द्रष्टा वाचो द्रष्टा मनसो द्रष्टा बुद्धेर्द्रष्टा प्राणस्य द्रष्टा तमसो द्रष्टा सर्वस्य दृष्टा ततः सर्व-स्मादस्मादन्यो विलक्षणश्चक्षुषः साक्षी श्रोतस्य साक्षी वाचः साक्षी मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी प्राणस्य साक्षी तमसः साक्षी सर्वस्य साक्षी ततोऽविक्रियो महाचैतन्योऽस्मात्सर्वस्मात्प्रियतम आनन्दघनं ह्येवमस्मा-त्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातमेकरसमेवाजरममरममृतमभयं ब्रह्मैवाप्यजयैनं चतुष्पादं मात्राभिरोंकारेण चैकीकुर्याजागरितस्थानश्चतुरात्मा विश्वो वैश्वा-नरश्चतूरूपोऽकार एव चतूरूपो ह्ययमकारः स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभि-रूकाररूपैरुत्कर्षादुभयत्वाद्वां स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वत्साक्षित्वा-च्चोत्कर्षति ह वै ज्ञानसंततिं समानश्च भवति य एवं वेद। सुषुप्तस्थानश्च-तुरात्मा प्राज्ञ ईश्वरश्चतूरूपो मकार एव चतूरूपो ह्ययं मकारः स्थूल-सूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्मकाररूपैर्मितेरपीतेर्वा स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वाद्बीज-त्वासाक्षित्वाच्च मिनोति ह वा इदं सर्वमादिश्च भवति य एवं वेद स्वप्नस्थानश्चतुरात्मा तैजसो हिरण्यगर्भश्चतूरूप उकार एव चतूरूपो ह्ययमुकारः स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिरुकाररुपैरुत्कर्षादुभयत्वाद्वां स्थूल-त्वात्सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वात्साक्षित्वाच्चोत्कर्षति ह वै ज्ञानसंततिं समानश्च भवति य एवं वेद। सुषुप्तस्थानश्चतुरात्मा प्राज्ञ ईश्वरश्चतूरूपो मकार एव चतूरूपो ह्ययं मकारः स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्मकाररूपैर्मितेरपीतेर्वा

स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वात्साक्षित्वाच्च मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति य एवं वेद। मात्रा मात्राः प्रतिमात्राः कुर्यादथ तुरीय ईश्वरग्रासः स्वराट्स्वयमीश्वरः स्वप्रकाशश्चतुरात्मोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैरोतो ह्ययमात्मा यथेदं सर्वमन्तकाले कालाग्निसूर्य उस्रैरनुज्ञाता ह्ययमात्माऽस्य सर्वस्य स्वात्मानं ददातीदं सर्वं स्वात्मानमेव करोति यथा तमः सविताऽनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा चिद्रूप एव यथा दाह्यं दग्ध्वाऽग्निरविकल्पो ह्ययमात्माऽवाङ्मनोगोचरत्वाच्चिद्रूपश्चतूरूप ओंकार एव चतूरूपो ह्ययमोंकार ओतानुज्ञात्रानुज्ञाविकल्पैरोंकाररूपैरात्मैव नामरूपात्मकं हीदं सर्वं तुरीयत्वाच्चिद्रूपत्वाद्वोतत्वाद्नुज्ञातृत्वादनुज्ञात्वादविकल्परूपत्वाच्चाविकल्परूपं हीदं सर्वं नैव तत्र काचन मिदाऽस्तयथ तस्यायमादेशोऽमात्रश्चतुर्थोऽध्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत ओंकार आत्मैव संविशत्यात्मनात्मानं व एवं वेदैष वीरों नारसिंहेन वानुष्टुभा मन्त्रराजेन तुरीयं विद्यादेष ह्यात्मानं प्रकाशयति सर्वसंहारसमर्थः परिभवासहः प्रभुर्व्याप्तः सदोज्वलोऽविद्याकार्यहीनः स्वात्मबन्धहरः सर्वदा द्वैतरहित आनन्दरूपः सर्वाधिष्ठानसन्मात्रो निरस्ताविद्यातमोमोहोऽहमेवेति तस्मादेवमेवेममात्मानं परं ब्रह्मानुसंदध्यादेष धीरो नृसिंह एव।।२।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु द्वितीयः खण्डः।।२।।

तस्य ह वै प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा सा प्रथमपादोभयतो भवति। द्वितीया द्वितीयस्य तृतीया तृतीयस्य चतुर्थ्योतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपा तथा तुरीयं चतुरात्मानसन्विप्य चतुर्थपादेन च तथा तुरीयेणानुचिन्तयन्ग्रसेत्तस्य ह वा एतस्य प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा सा पृथिव्यकारः स ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः सा प्रथमः पादो भवति। भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्द्वितीयाऽन्तरिक्षं स उकारः स यजुर्भिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टुब्दक्षिणाग्निः सा द्वितीयः पादो भवति। भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा

स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिस्तृतीया द्यौः स मकारः स सामभिः सामवेदो रुद्रादित्या जगत्या जगत्याहवनीयः सा तृतीयः पादो भवति। भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिमिर्याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्य-र्धमात्रा सा सोमलोक ओंकारः सोऽथर्वणैर्मन्त्रैरथर्ववेदः संवर्त-कोऽग्निर्मरुतो विराड़ेऋषिर्भास्वती स्मृता सा चतुर्थः पादो भवति। भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्मात्रा मात्राः प्रतिमात्राः कृत्वोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन्ग्रसेत ज्ञोऽमृतो हुतसंवित्कः शुद्धः संविष्टो निर्विघ्न इममसुनियमेऽनुभूयेहेदं सर्वं दृष्टवाऽसुप्रपञ्चहीनोऽथ सकलः साधारोऽमृतमयश्चतुरात्मा सर्वमयश्चतु-रात्माऽथ महापीठे सपरिवारं तमेतं चतुःसप्तात्मानं चतुरात्मानं मूला-ग्नावग्निरूपं प्रणवं संदध्यात्सप्तात्मानं चतुरात्मानमकारं ब्रह्माणं नाभौ सप्तात्मानं चतुरात्मानमुकारं विष्णुं हृदये सप्तात्मानं चतुरात्मानं मकारं रुद्रं भ्रूमध्ये सप्तात्मानं चतुरात्मानं चतुःसप्तात्मानं चतुरात्मानमोंकारं सर्वेश्वरं द्वादशान्ते। सप्तात्मानं चतुरात्मानं चतुःसप्तात्मानं चतुरात्मा-नमानन्दामृतरूपमोंकारं षोडशान्ते। अथानन्दामृतेनैतांश्चतुर्धा संपूज्य तथा ब्रह्माणमेव विष्णुमेव रुद्रमेव विभक्तांस्त्रीनेव लिङ्गरूपानेव च संपूज्योपहारैश्चतुर्धाऽथ लिङ्गान्संहृत्य तेजसा शरीरत्रयं संव्याप्य तद-धिष्ठानमात्मानं संज्वाल्य तत्तेज आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य तस्य गुणैरैक्यं संपाद्य महास्थूल महासूक्ष्मे महासूक्ष्मं महाकारणे च संहृत्य मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन्ग्रसेत्॥

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु तृतीयः खण्डः॥३॥

तं वा एतमात्मानं परमं ब्रह्मोंकारं तुरीयोकाराग्रविद्योतमनुष्टुभा नत्वा प्रसाद्योमिति संहृत्याहमित्यनुसंदध्यादथैतमेवात्मान परमं ब्रह्मोंकारं तुरीयोंकारग्रविद्योतमेकादशात्मानमात्मानं नारसिंहं नत्वोमिति संहरन्न-नुसंदध्यात्। अथैतमेवात्मानं परमं ब्रह्मोंकारं तुरीयोंकाराग्रविद्योतं प्रणवेन संचिन्त्यानुष्टुभा सच्चिदानन्दपूर्णात्मसु नवात्मकं सच्चिदानन्दपूर्णात्मानं

परमात्मानं परं ब्रह्म संभाव्याहमित्यात्मानमादाय नमसा ब्रह्मणैकीकुर्या-दनुष्टुभैव वैष उ एव ह्येष हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सिंहोऽसौपरमेश्व-रोऽसौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन्सर्वमत्ति नृसिंह एवैकल एष तुरीय एष एवोग्र एष एव वीर एष एव महानेष एव विष्णुरेप एव ज्वलन्नेष एव सर्वतोमुख एष एव नृसिंह एष एव भीषण एष एव भद्र एष एव मृत्युमृत्युरेष एव नमाम्येष एवाहमेवं योगारूढो ब्रह्मोण्येवानुष्टुभं संद-ध्यादोंकार इति। **तदेतौ श्लोकौ भवतः**- संस्तभ्य सिंहं स्वसुतान्गुण-र्धान्संयोज्य श्रृङ्गैर्ऋषभस्य हत्वा। वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य संभक्ष्य सिंहेन स एष वीरः। शृङ्गप्रोतान्पदा स्पृष्ट्वा हत्वा तामग्रसत्स्वयम्। नत्वा च बहुधा दृष्ट्वा नृसिंहः स्वयमुद्बभाविति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु चतुर्थः खण्डः।।४।।

अथैषो एवाकार आप्ततमार्थ आत्मन्येव नृसिंहे ब्रह्मणि वर्तत एष ह्येवासप्तम एष हि साक्ष्येष ईश्वरोऽतः सर्वगतो न हीदं सर्वमेष हि व्याप्ततम इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रमेष एवोग्र एष हि व्याप्तम एष एव वीर एष हि व्याप्ततम एष एव महानेष हि व्याप्ततम एष एव विष्णुरेष हि व्याप्ततम एष एव ज्वलन्नेष हि व्याप्ततम एष एव सर्वतोमुख एष हि व्यासतम एष एव नृसिंह एव हि व्याप्ततम एष एव भीषण एष हि व्याप्ततम एष एव भद्र एष हि व्याप्ततम एष एव मृत्युमृत्युरेष हि व्याप्ततम एष एव नमाम्येष हि व्याप्ततम एव एवाहमेष हि व्याप्ततम आत्मैव नृसिहो ब्रह्म भवति य एवं वेद। सोऽकामो निष्काम आप्तकाम आत्मकामो न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव समवनी-यन्ते ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येत्पथैषो एवोकार उत्कृष्टतमार्थ आत्मन्येव नृसिंहे देवे ब्रह्मणि वर्तते। तस्मादेष सत्यस्वरूपो न ह्यन्यदस्त्यमेयमनात्म-प्रकाशमेष हि स्वप्रकाशोऽसङ्गोऽन्यत्र वीक्षत आत्माऽतो नान्यप्रथाप्रा-प्तिरात्ममात्रं ह्येतदुत्कृष्टमेष एवोग्र एष ह्येवोत्कृष्ट एष एव वीर एष ह्येवोत्कृष्ट एष एव महानेष ह्येवोत्कृष्ट एष एव विष्णुरेष ह्येवोत्कृष्ट

एष एव ज्वलनन्नेष ह्येवोत्कृष्ट एष एव भीषण एष ह्येवोष्कृष्ट एष एव भद्र एष ह्येवोष्कृष्ट एष एव मृत्युमृत्युरेष ह्येवोत्कृष्ट एष एव नमाम्येष ह्येवोत्कृष्ट एष एवाहमेष ह्येवोत्कृष्टस्तस्मादात्मानमेवैवं जानीयादात्मैव नृसिहो देवो ब्रह्म भवति य एवं वेद। सोऽकामो निष्काम आप्तकाम आत्मकामो न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव समवनीयन्ते। ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येत्पथैषो एव मकारो महाविभूत्पर्थ आत्मन्येव नृसिंहे देवे परे ब्रह्मणि वर्तते तस्मादयमनल्पोऽभिन्नरूप: स्वप्रकाशो ब्रह्मैव व्याप्ततम उत्कृष्टम एतदेव ब्रह्मापि सर्वज्ञं महामायं महाविभूत्येत-देवोग्रमेतद्धि महाविभूत्येतदेव वीरमेतद्धि महाविभूत्येतदेव महदेतद्धि महाविभूत्येतदेव विष्णवेतद्धि, महाविभूत्येतदेव ज्वलदेतद्धि, महा-विभूत्येतदेव भीषणमेतद्धि, महाविभूत्येतदेव भद्रमेतद्धि महाविभूत्येतदेव मृत्युमृत्य्वेतद्धि महाविभूत्येतदेव नमाम्येतद्धि महाविभूत्येतदेवाहमेतद्धि महाविभूति तस्माद्‌कारोकाराभ्यामिममत्मानमाप्ततममुत्कृष्टतमं चिन्मात्रं सर्वद्रष्टारं सर्वसाक्षिणं सर्वग्रासं सर्वंप्रेमास्पदं सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं पुरतोऽस्मात्सर्वस्मात्सुविभातमन्विष्या सतममुत्कृष्टतमं चिन्मात्रं महाविभूति सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं परमेव ब्रह्म मकारेण जानीया-दात्मैव नृसिंहो देव: परमेव ब्रह्म भवति य एवं वेद। सोऽकामो निष्काम आप्तकाम आत्मकामो न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव समवनीयन्ते ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येतीति ह प्रजापतिरुवाच।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु पञ्चम: खण्ड:।।५।।

ते देवा इममात्मानं ज्ञातुमैच्छस्तान्हासुर: पाप्मा परिजग्रास। त ऐक्षन्त हन्तैनमासुरं पाप्मानं ग्रसाम इति। त एतमेवोंकाराग्रविद्योतं तुरीयतुरीयमात्मानमुग्रमनुग्रं वीरमवीरं महान्तममहान्तं विष्णुमविष्णुं ज्वलन्तमज्वलन्तं सर्वतोमुखमसर्वतोमुखं नृसिंहमनृसिंहं भीषणम-भीषणं भद्रमभद्रं मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं नमाम्यनमाम्यहमनहं नृसिंहा-नुष्टुभैव बुबुधिरे तेभ्यो हासावासुर: पाप्मा सच्चिदानन्दघनं ज्योति-

रभवत्तस्मादपक्वकषाय इममेवोंकाराग्रविद्योतं तुरीयतुरीयमात्मानं नृसिंहानुष्टुभैव जानीयात्तस्यासुरः पाप्मा सच्चिदानन्दघनं ज्योतिर्भवति। ते देवा ज्योतिष उत्तितीर्षवो द्वितीयाद्भयमेव पश्यन्तं इममेवोंकारग्रविद्योतं तुरीयतुरीयमात्मानं नृसिंहानुष्टुभान्विष्य प्रणवेनैव तस्मिन्नवस्थितास्ते-भ्यस्तज्ज्योतिरस्य सर्वस्य पुरतः सुविभातमविभातमद्वैतमचिन्त्यमलिङ्गं स्वप्रकाशमानन्दघनं शून्यमभवत्। एवंवित्स्वप्रकाशं परमेव ब्रह्म भवति ते देवाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च ससाधनेभ्यो व्युत्थाय निरागारा निष्परिग्रहा अशिखा अयज्ञोपवीता अन्धा बधिरा मुग्धाः क्लीबा मूका उन्मत्ता इव परिवर्तमानाः शान्ता दान्ता उपरतास्तितिक्षवः समा हिता आत्मरतय आत्मक्रीडा आत्ममिथुना आत्मानन्दाः प्रणवमेव परमं ब्रह्मात्मप्रकाशं शून्यं जानन्तस्तत्रैव परिसमाप्तास्तस्माद्देवानां व्रतमाचरन्नोंकारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत्स आत्मनैवात्मानं परमं ब्रह्म पश्यति। **तदेष श्लोकः**- शृङ्गेप्वशृङ्गं संयोज्य सिंहं शृङ्गेषु योजयेत्। शृङ्गाभ्यां शृङ्गमाबध्य त्रयो देवा उदासत इति।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु षष्ठः खण्डः।।६।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्भूय एव नो भगवान्विज्ञापयत्विति तथेत्यजत्वाद्मरत्वाद्जरत्वाद्मृतत्वादमृतत्वादभयत्वादशोकत्वा-दमोहत्वादनशनायत्वादपिपासत्वादद्वैतत्वाच्चाकारेणेममात्मानमन्वि-ष्योदुत्कृष्टत्वांदुदुत्पादकत्वादुदुत्प्रवेष्टृत्वादुदुत्थापयितृत्वादु-दुद्द्रष्टत्वादुदुत्कर्तृत्वादुदुत्पथवारकत्वादुदुद्ग्रासकत्वादुदुभ्द्रान्तत्वा-दुदुत्तीर्णविकृतित्वाच्चोकारेण परमं सिंहमन्विष्याकारमिममात्मान-मुकारपूर्वार्धमाकृष्य सिंहीकृत्योत्तरार्धेन तं सिंहमाकृष्य महत्त्वान्म-हस्त्वान्मानचान्मुक्तत्वान्महादेववत्वान्महेश्वरत्वान्महासत्त्वान्महाचित्त्वान्म-हानन्दत्वान्महाप्रभुत्वाच्च मकारार्थेनानेनात्मनैकीकुर्यादशरीरो निरिन्द्रि-योऽप्राणोऽतमाः सच्चिदानन्दमात्र स स्वराड् भवति य एवं वेद। कस्त्वमित्यहमिति होवाचैवमेवेदं सर्वं तस्मादहमिति सर्वाभिधानं

तस्वादिरयमकारः स एव भवति। सर्वं ह्ययमात्मायं हि सर्वान्तरो न हीदं सर्वं निरात्मकमात्मैवेदं सर्वं तस्मात्सर्वात्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मानमन्विच्छेद्रहौवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपं सच्चिदानन्दरूपमिदं सर्वं सद्धीदं सर्वं तत्सदिति चिद्धीदं सर्वं काशते काशते चेति किं सदितीदमिदं नेत्यनुभूतिरिति कैषेतीयमियं नेत्यवचनेनैवानुभवन्नुवाचैवमेव चिदानन्दावप्यवचनेनैवानुभवन्नुवाच सर्वमन्यदपि स परम आनन्दस्तस्य ब्रह्मणो नाम ब्रह्मेति तस्यान्त्योऽयं मकारः स एव भवति तस्मान्मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छेत्किमिदमेवमित्यु इत्येवाहाविचिकित्संस्तस्मादकारेणेममात्मानमन्विष्य मकारेण ब्रह्मणा संदध्यादुकारेणाविचिकित्सन्नशरीरो निरिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः सच्चिदानन्दमात्रः स स्वराड् भवति य एवं वेद। ब्रह्म वा इदं सर्वमत्तृत्वादुग्रत्वाद्वीरत्वान्महत्त्वाद्विष्णुत्वाज्ज्वलत्वात्सर्वतोमुखत्वान्नृसिंह त्वाद्भीषणद्भद्रत्वान्मृत्युमृत्युत्वान्नमामित्वादहंत्वादिति तस्मादकारेण परमं ब्रह्मान्विष्य मकारेण मनआद्यवितारं मनआदिसाक्षिणमन्विच्छेत्स यदैतत्सर्वमुपेक्षते तदैतत्सर्वमस्मिन्प्रविशति स यदा प्रबुध्यते तदैत्सर्वमस्मादेवोत्तिष्ठति स एतत्सर्वं निरूह्य संपीड्य संज्वाल्य संभक्ष्य स्वात्मानमेषां ददात्यत्युग्रोऽतिवीरोऽतिमृत्युमृत्युरतिनमाम्यत्यहं भूत्वा स्वे महिम्नि सदा समासते तस्मादेनमकारार्थेन परेण ब्रह्मणैकीकुर्यादुकारेणाविचिकित्सन्नशरीरो निरिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः सच्चिदानन्दमात्रः स स्वराड् भवति य एवं वेद। तदेष **श्लोकः**–शृङ्गं शृङ्गार्धमाकृष्य शृङ्गेणानेन योजयेत्। शृङ्गमेनं परे शृङ्गे तमतेनापि योजयेत्।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु सप्तमः खण्डः।।७।।

अथ तुरीयेणोतश्च प्रोतश्च ह्ययमात्मा सिंहोऽस्मिन्हि सर्वमयं हि सर्वात्माऽयं हि सर्वं नैवोतोऽद्वयो ह्ययमात्मैकल एवाविकल्पो न हि वस्तु सदयं ह्योत इव सद्घनोऽयं चिद्घन आनन्दघन एकरसोऽव्यवहार्यः केनचनाद्वितीय ओतश्च प्रोतश्चैष ओंकार एवं नैवमिति पृष्ट ओमित्येवाह

वाग्वा ओंकार वागेवेदं सर्वं न ह्यशब्दमिवेहास्ति चिन्मयो ह्ययमोंकारश्चिन्मयमिदं सर्वं तस्मात्परमेश्वर एवैकमेव तद्भवत्येतद्मृतमभयमेतब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेदेति रहस्यमनुज्ञाता ह्ययमात्मैष ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानमनुजानाति न हीदं सर्वं स्वत आत्मवन्न ह्ययमोतोनानुज्ञाताऽसङ्गत्वादविकारित्वादसत्त्वादन्यस्यानुज्ञाता ह्ययमोंकार ओमिति ह्यनुजानाति वाग्वा ओंकारो वागेवेदं सर्वमनुजानाति चिन्मयो ह्ययमोंकारश्चिद्धीदं सर्वं निरात्मकमात्मसात्करोति तस्मात्परमेश्वर एवैकमेव तद्भवत्येतद्मृतमभयमेतब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेदेति रहस्यमनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा प्रज्ञानघन एवायं ह्यस्मात्सवस्मात्पुरतः सुविभातोऽतश्चिद्घन एव न ह्ययमोतो नानुज्ञाताऽऽम्यं हीदं सर्वमसदेवानुज्ञैररसो ह्ययमोकार ओंमिति ह्येवानुजानाति वाग्वा ओंकारो वागेव ह्यनुजानाति चिन्मयो ह्ययमोंकारश्चिदेव ह्यनुज्ञा तस्मात्परमेश्वर एवैकमेव तद्भवत्येतद्मृतमभयमेतद्ब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेदेति रहस्यमविकल्पो ह्ययमात्माऽद्वितीयत्वादविकल्पो ह्ययमोंकारोऽद्वितीयत्वादेव चिन्मयो ह्ययमोंकारस्तस्मात्परमेश्वर एवैकमेव तद्भवत्यविकल्पो नाविकल्पोऽपि नात्र काचन भिदाऽन्ति नैवात्र काचन भिदाऽस्त्यत्र भिदामिव मन्यमानः शतधा सहस्रधा भिन्नो मृत्योर्मृत्युमाप्नोति तदेतद्द्वयं स्वप्रकाशं महानन्दमात्मैवैतद्मृतमभयमेतद्ब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेदेति रहस्यम्।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषदष्टमः खण्डः।।८।।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवमिमेव नो भगवन्नोंकारमात्मानुमुपदिशेति तथेत्युपद्रष्टाऽनुमन्तैष आत्मा सिंहश्चिद्रूप एवाविकारो ह्युपलब्धा सर्वत्र न ह्यस्ति द्वैतसिद्धिरात्मैव सिद्धोऽद्वितीयो मायया ह्यन्यदिव स वा एष आत्मा पर एवैषेंव सर्वं तथा हि प्राज्ञे सैषाऽत्रिद्या जगत्सर्वमात्मा परमात्मैव स्वप्रकाशोऽप्यविषयज्ञानत्वाजानन्नेव ह्यत्र

न विजानात्वनुभूतेर्माया च तमोरूपाऽनुभूतेस्तदेतजडं मोहात्मकमनन्तं तुच्छमिदं रूपमस्यास्य व्यञ्जिका नित्यनिवृत्ताऽपि मूढैरात्मेव दृष्टाऽस्य सत्त्वमसत्त्वं च दर्शयति सिद्धत्वासिद्धत्वाभ्यां स्वतन्त्रास्वतन्त्रत्वेन सैषा वटवीजसामान्यवदनेकवटशक्तिरेकैव। तद्यथा वटबीजसामान्यमेक मनेकान्स्वाव्यतिरिक्तान्वटान्सबीजानुत्पाद्य तत्र तत्र पूर्ण सत्तिष्ठत्येव मेवैषा माया स्वाव्यतिरिक्तानि परिपूर्णानि क्षेत्राणि दर्शयित्वा जीवेशाया-भासेन करोति माया चाविद्या च स्वयमेव भवति सैषा विचित्रा सुदृढा बह्वङ्कुरा स्वयं गुणभिन्नाऽङ्कुरेष्वपि गुणभिन्ना सर्वत्र ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी चैतन्यदीप्ता तस्मादात्मन एव त्रैविध्यं सर्वत्र योनित्वमप्यभिमन्ता जीवो नियन्तेश्वरः सर्वाहमानी हिरण्यगर्भस्त्रिरूप ईश्वरवद्यक्तचैतन्यः सर्वगो ह्येष हैश्वरः क्रियाज्ञानात्मा सर्वं सर्वमयं सर्वे जीवाः सर्वमयाः सर्वाव-स्थासु तथाप्यल्पाः स वा एष भूतानीन्द्रियाणि विराजं देवताः कोशांश्च सृष्ट्रा प्रविष्यामूढो मूढ इव व्यवहरन्नास्ते माययैव तस्माद्द्वय एवायमात्मा सन्मात्रो नित्यः शुद्धो बुद्धः सत्यो मुक्तो निरञ्जनो विभुरद्वय आनन्दः परः प्रत्यगेकरसः प्रमाणैरेतैरवगतः सत्तामात्र हीदं सर्वं सदैव पुरस्तात्सिद्धं हि ब्रह्म न ह्यत्र किंचनानुभूयते नाविद्याऽनुभवात्मनि स्वप्रकाशे सर्वसाक्षिण्यविक्रियेद्वये पश्यतेहापि सन्मात्रमसदन्यत्सत्यं हीत्थं पुरस्तादयोनिः स्वात्मस्थमानन्दचिद्घनं सिद्धं ह्यसिद्धं तद्विष्णुरीशानो ब्रह्माऽन्यदपि सर्वं सर्वगं सर्वमत एव शुद्धोऽबाध्यस्वरूपो बुद्धः सुखरूप आत्मा न ह्येतन्निरात्मकमपि नात्मा पुरतो हि सिद्धो न हीदं सर्वं कदाचिदात्मा हि स्वमहिमस्थो निरपेक्ष एक एव साक्षी स्वप्रकाशः किं तन्नित्यमात्माऽत्र ह्येव न विचिकित्स्यमेतद्धीदं सर्वं साधयति द्रष्टा द्रष्टुः साक्ष्यविक्रियः सिद्धो निरविद्यो बाह्यान्तरवीक्षणात्सुविस्पष्ट-स्तमसः परस्ताच्छ्रुतैष दृष्टोऽदृष्टो वेति दृष्टोऽव्यवहार्योऽप्यल्पो नाल्पः साक्ष्यविशेषोऽन्योसुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा सर्वज्ञोऽनन्तोऽभिन्नोऽद्वयः सर्वदाऽसंवित्तिर्माययया नासंवित्तिः स्वप्रकाशे यूयमेव दृष्टः किमद्वयेन

द्वितीयमेव न यूयमेव ब्रूह्येव भगवन्निति देवा ऊचुर्यूयमेव दृश्यते चेन्नात्मज्ञा असङ्गो ह्ययमात्माऽतो यूयमेव स्वप्रकाशा इदं हि सत्संविन्मयत्वाद्यूयमेव नेति होचुर्हन्तासङ्गा वयमिति होचुः कथं पश्यन्तीति होवाच न वयं विद्म इति होचुस्ततो यूयमेव स्वप्रकाशा इति होवाच न च सत्संविन्माया एतौ हि पुरस्तात्सुविभातमव्यवहार्यमेवाद्वयं ज्ञातो ह्येवैष विज्ञातो विदिताविदितात्पर इति होचुः स होवाच तद्वा एतब्रह्माद्वयं बृहत्त्वान्नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तं सत्यं सूक्ष्मं परिपूर्णमद्वयं सदानन्दं चिन्मात्रमात्मैवाव्यवहार्यं केनचन तदेतदात्मानमोमित्यपश्यन्तः पश्यत तदेतत्सत्यमात्मा ब्रह्मैव ब्रह्मात्मैवात्र ह्येव न विचिकित्स्यमित्यों सत्यं तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्त्येतद्वयशब्दमस्पर्शमरूपमरसमगन्धमव्यक्तमनादातव्यमगन्तव्यम विसर्जयितव्यमनानन्दयितव्यममन्तव्यमबोद्धव्यमनहंकर्तव्यमचेतयितव्यमप्राणयितव्यमनपानयितव्यव्यानयितव्यमनुदानयितव्यमसमानयितव्यमनिन्द्रियमविषयमकरणमलक्षणमसङ्गमगुणविक्रियमव्यपदेश्यमसत्त्वमरजस्कमतमस्कममायमप्यौपनिषदमेवसुविभातं पुरतोऽस्मात्सर्वस्माद त्सुविभातमद्वयं पश्यताहं स सोऽहमिति स होवाच किमेष दृष्टोऽदृष्टो वेति दृष्टो विदिताविदितात्पर इति होचुः क्वैषा कथमिति होचुः किं तेन किंचनेति होचुर्यूयमाश्चर्यरूपा इति न चेत्याहोमित्यनुजानीध्वं ब्रूतैनमिति ज्ञातोऽज्ञातश्चेति होचुर्न चैवमिति होचुरिति ब्रूतैवैनमात्मसिद्धमिति होवाच पश्याम एव भगवन्न च वयं पश्यामो नैव वयं वक्तुं शक्नुमो नमस्तेऽस्तु भगवन्प्रसीदेति होचुर्न भेतव्यं पृच्छतेति होवाच क्वैषाऽनुज्ञेत्वेष एवात्मेति होवाच ते होचुर्नमस्तुभयं वयं त इतीति ह प्रजापतिर्देवाननुशशासानुशशासेति। **तदेष श्लोकः**-ओतमोतेन जानीयादनुज्ञातारमान्तरम्। अनुज्ञामद्वयं लब्ध्वा उपद्रष्टारमाव्रजे दित्युपद्रष्टारमाव्रजेदिति।।९।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः० १। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो० २। ॐ शान्तिः ३।।

इत्याथर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषत्सु नवमः खण्डः।।९।।

इत्यार्थर्वणीयनृसिंहोत्तरतापनीयोनिषत्समाप्ता।।

नृसिंहषट्चक्रोपनिषत्

ॐ देवा ह वै सत्यं लोकमायंस्तं प्रजापति मपृच्छन्नारसिंह चक्रन्नो ब्रूहीति। तान्प्रजापतिर्नारसिंहचक्रमवोचत्। षड्वै नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति। यत् प्रथमं तच्चतुररं यद्वितीयं तच्चतुररं य तृतीयं तदष्टारं यच्चतुर्थं तत्पंचारं यत्पंचमम् तत्पंचारं यत् षष्ठं तद्षष्टारं तदेतानि षडेव नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति।।

अथ कानि नामानि भवन्ति। यत् प्रथमं तदाचक्रं यद्द्वितीयं तत्सुचक्रम यत्तृतीयं तन्महाचक्रम् यच्चतुर्थं तत्सकल लोक रक्षण चक्रं यत् पंचमं तद्द्यूतचक्रं यद्वै षष्ठं तदसुरान्तकचक्रं तदेतानि षडेव नारसिंह चक्र नामानि भवन्ति।।

अथ कानि त्रीणि बलयानि भवन्ति। यत्प्रथमं तदान्तरबलयं भवति। यद्द्वितीयं तन्मध्यमं बलयं भवति। यत् तृतीयं तद्बाहयं बलयं भवति। तदेतानि त्रीण्यंव वलयान्ति भवन्ति। यदा तद्वैतद्बीजं यन्मध्यमं तां नारसिंह गायत्र्रीं यद्बाहयं तन्मन्त्रः।।

अथ किमान्तरं वलयम्। षंडान्तराणि वलयानि भवन्ति। यन्नारसिंह तत्प्रथमस्य यन्महालक्ष्म्यं तद्द्वितीयस्य यत्सारस्वतंत तृतीयस्य यस्य यत्कामं देवं तच्चतुर्थस्य यत् प्रणवं तत्पश्चस्य यत्क्रोध दैवतं तत् षष्ठस्य। तदेतानि षण्णां नारसिंह चक्राणां षड़ान्तराणि वलयानि भवन्ति।।

अथ किं मध्यमं वलयम्। षड्वै मध्यमानि बलयानि भवन्ति। यन्नारसिंहाय तत्प्रथमस्य यंद्विद्महे तद्द्वितीयस्य यद्वज्रनखाय तृतीयस्य यद्धीमहि तच्चतुर्थस्य यत्तन्नस्ततपश्चमस्य यत्सिंह: प्रचोदयादिति तत् षष्ठस्य। तदेतानि षण्णां नारसिंह चक्राणां षण्मध्यमानि बलयानि भवन्ति।।

अथ किं बाह्यं बलयम्। षंवै बाह्यानि बलयानि भवन्ति। यदाचक्र यदात्मा तत्प्रथमस्य यत्सुचक्रं यत्प्रियात्मा तद्द्वितीयस्य यन्महाचक्रं यज्ज्योतिरात्मा ततृतीयस्य यत्सकल लोकरक्षण चक्रं यन्मायात्मा तच्चतुर्थस्य यदाचक्रं यद्योगात्मा तत्पश्चमस्य यदसुरान्तक चक्रं यत्सत्यात्मा तत् षष्ठस्य। तदेतानि षण्णा। नारसिंह चक्राणां षट् वाह्यानि वलयानि भवन्ति।।

कैतानि न्यस्यानि। यत्प्रथमं तद्धृदये, यद्द्वितीयं तच्छिरसि यत्तृतीयं तच्छिखायां यच्चतुर्थं तत्सर्वाष्वंगेषु यत्पंचमं तत्सर्वेषु (?) यत् षष्ठं तत्सर्वेषु देशेषु। य एतानि नारसिंहानि चक्राण्येतेष्वङ्गेषु विभृयात तस्यानुष्टुप् सिद्धयति।। तं भगवान् नृसिंह: प्रसीददति। तस्य कैवल्यं सिध्यति। तस्य सर्वे लोका: सिध्यन्ति। तस्य सर्वे जना: सिध्यन्ति। तस्मादेतानि षण्णां नारसिंह चक्राण्यंगेषु न्यासानि भवन्ति। पवित्रं च एतत्तस्य न्यसनम्। न्यसनान्नृसिंहानन्दी भवति। कर्मण्यो भवति। ब्रह्मण्यो भवति। अन्यसनान्न नृसिंहानन्दी भवति। न कर्मण्यो भवति। तस्मादेतन्पवित्रं तस्य न्यासनम्।।

यो वा एतं नारसिंह चक्रमधीते स सर्वेषु वेदेष्वधीतो भवति। स सर्वेषु मन्त्रेषु सिद्धो भवति। स सर्वत्र शुद्धो भवति। स सर्वरक्षो भवति। भूत पिशाच डाकिनीप्रेतवंताकनाशको भवति। स निर्भयो भवति। तदेतन्नाश्रद्दधानाय प्रब्रूयात्तदेतन्नाश्रद्दधानाय प्रब्रूयादिति।।

इत्याथर्वणीये नृसिंहषट्चक्रोपनिषत्

समाप्ता

ब्रह्मसंहितायां त्रैलोक्य–विजये

श्रीनृसिंह कवचम्

नारद उवाच–

इन्द्रादि देव वृन्देश! तातेश्वर! जगत्पते!
महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रूहि मे प्रभो!
यस्य प्रपठनाद् विद्वान् त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।१।।

ब्रह्मोवाच–

श्रृणु नारद! वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ! तपोघन!
कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयाभिधम्।।२।।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
स्रष्टाऽहं जगतां वत्स पठनाद्धारणाद् यतः।।३।।
लक्ष्मीर्जगत्त्रयम् पाति संहर्ता च महेश्वरः।
पठनाद्धारणाद्देवा बभूवुश्च दिगीश्वराः।।४।।
ब्रह्म मन्त्रमयं वक्ष्ये भूतादिविनिवारकम्।
यस्य प्रसादात् दुर्वासा स्त्रैलोक्यविजयी मुनिः।
पठनाद् धारणाद् यस्य शास्ता च क्रोधभैरवः।।५।।
त्रैलोक्य विजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री नृसिंह देवता विभुः।
चतुर्वर्गे च शान्तौ च विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।६।।

क्ष्रौं बीजं में शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः,
उग्रंवीरं महाविष्णुम् ज्वलन्तः सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषण भद्रं, मृत्योर्मृत्युम् नमाम्यहम्।।७।।
द्वात्रिंशादक्षरो मन्त्रः मन्त्रराजः सुरद्रुमः।
कण्ठं पातु ध्रुवम् क्ष्रौं हृद्भगवते चक्षुषी मम।।८।।
नरसिंहाय च ज्वाला मालिने पातु मस्तकम्।
दीप्त दंष्ट्राय च तथाग्नि नेत्राय च नासिकाम्।।९।।
सर्वरक्षोघ्नाय देवाय सर्वभूत विनाशाय च।
सर्व ज्वर विनाशाय दह दह पच द्वयम्।।१०।।
रक्ष रक्ष सर्वमन्त्रम् स्वाहा पातु मुखं मम।
तारादि रामचन्द्राय, नमः पायाद् गूह्यं मम।।११।।
क्लीं पायाद् पाणियुग्मंश्च तारम् नमः पदम् ततः।
नारायणाय पार्श्वंश्च, आं ह्रीं क्रौं क्ष्रौं चं हुं फट्।।१२।।
षड़क्षरः कटिं पातु ॐ नमो भगवते पदम्।
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय उरुद्वयम्।।१३।।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः पायात् पदद्वयम्।।१४।।
क्ष्रौं नरसिंहाय क्ष्रौश्च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु।।१५।।
इति ते कथितं वत्स सर्व मन्त्रौघ विग्रहम्।
तवस्नेहान्मया ख्यातं प्रवकतव्यं न कस्यचित्।।१६।।
गुरुपूजा विधायाथ गृहणीयात् कवचं ततः।
सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत्।।१७।।
शतमष्टोत्तरं चैव पुरश्चर्या-विधि स्मृतः।
हवनादीन् दशांशेन कृत्वा साधकसत्तमः।।१८।।
ततस्तु सिद्ध कवचः पुण्यात्मा मदनोपमः।
स्पर्द्धामुद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत् ततः।।१९।।

पुष्पाञ्जल्याष्टकम् दत्वामूले नैव पठेत् सकृत्।
अपि वर्ष सहस्राणाम् पूजायाः फलमाप्नुयात्।।२०।।
भूर्जे विलिख्य गुटिकाम् स्वर्णस्थाम् धारयेत् यदि।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ नरसिंहो भवेत् स्वयम्।।२१।।
योषिद् वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे करे।
विभृयात् कवचं पुण्यम् सर्वसिद्धि युतो भवेत्।।२२।।
काकबन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत्।
जन्मबन्ध्या नष्टपुत्रा बहुपुत्रवती भवेत्।।२३।।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।
त्रैलोक्य क्षोभयत्येव त्रैलोक्यं विजयी भवेत्।।२४।।
भूत – प्रेत – पिशाचाश्च, राक्षसा दानवाश्च ये।
तं दृष्ट्वा प्रपलायन्ते देशाद्देशान्तरं ध्रुवम्।।२५।।
यस्मिन् गेहे च कवचं ग्रामे वा यदि तिष्ठति।
तं देशन्तु परित्यज्य प्रयान्ति चाति दूरतः।।२६।।

इतिश्री ब्रह्म संहितायां सप्तदश अध्याये,
त्रैलोक्य विजयम् नाम श्रीश्रीनृसिंह कवचम् सम्पूर्णम्

श्रीनृसिंह कवचम्

श्रीश्रीलक्ष्मीनृसिंहायनमः।। ॐ गणेशाय नमः।।

ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी नृसिंह माला मन्त्रस्य प्रहलाद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीनृसिंहो देवता सर्वव्यापी स्तम्भ वास इति बीजं, गुह्यध्वज इति शक्तिः स्वयं इति कीलकम्।। श्रीनृसिंह प्रसाद सिद्धर्थे जपे विनियोगः।।

करन्यासः।।

ॐ योगीहृत्पंकज (पद्म) वासाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ नृसिंहायेति तर्जनीभ्यां नमः।।

ॐ सहस्रशीर्षायेति मध्यामाभ्यां नमः।।

ॐ स्वप्रकाशायेत्य अनामिकाभ्यां नमः।।

ॐ सोमसूर्याग्नि लोर्चनायेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।

ॐ त्रैलोक्य रक्षकाय ॐ नृसिंहायेति करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ योगीहृत्पद्मवासाय, ॐ नृसिंहाय, ॐ स्व प्रकाशाय, ॐ सहस्रशीर्षाय, ॐ सोम सूर्याग्निलोचनाय, ॐ त्रैलोक्य-रक्षकाय, ॐ नृसिंहाय स्वाहाः।।

इति मन्त्रः।।

नमस्कृत्य गणाधीशं सर्वविघ्ननिवारणम्।
नृसिंह कवचं वक्ष्ये प्रहलादेनोदितं पुरा।।१।।
सर्वरक्षाकरं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्!
सर्व सम्पत्करं चैव स्वर्गमोक्ष प्रदायकं।।२।।

ध्यात्वा नृसिंह देवेशं दिव्य सिंहासने स्थितं।
विवृतास्यं द्विनयनं शरदिन्दु समप्रभं।।३।।
लक्ष्म्यालिंगित वामाङ्गं विभूतिभिरुपासिम्।
चतुर्भुजं कोमलाङ्गं मणिकुण्डलशोभितम्।।४।।
हारोपशोभितरस्कं रत्नकेयूर शोभितं।
तप्तकांचनसंकाशं पीत निर्मल वाससम्।।५।।
इन्द्रादि सुरमौलिस्थं वर माणिक्यदीप्तिभिः।
विराजित पदद्वन्दं शंखचक्रादि हेतुभिः।।६।।
गरुत्मता विनीतेन स्तूयमानं मुदान्वितं।
स्वहृत्कमल संकाशं कृत्वा तु कवचं जपेत्।।७।।
नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थ सम्भवः।
सर्वव्यापी स्तम्भवासो भालं मे रक्षताद्वली।।८।।
नृसिंहो मे दृशौ पातु सोमसूर्याग्निलोचनः।
श्रुति मे देववरदो मुनिवर्यस्तुतिप्रियः।।९।।
नासौ मे सिंहनादस्तु मुखं लक्ष्मीमुखप्रियः।
सर्वविद्यानिधिः पातु नृसिंहो रसना मम।।१०।।
नृसिंहः पातु मे कण्ठं सदा प्रह्लाद वन्दितः।
वक्त्रं पात्विन्दु वदनः स्कन्धं भूभार नाशनः।।११।।
दिव्यास्त्रशोभितबाहुः नृसिंहः पातु मे भुजौ।
करौ मे देव वरदो नृसिंहः पातु सर्वदा।।१२।।
हृदयं योगीहृत्पद्म-निवासः पातु मे हरिः।
मध्यं पातु हिरण्याक्ष-रक्षःकुल-विनाशनः।।१३।।
नाभिं मे पातु नृहरिः स्वनाभिः पद्म संस्थितः।
ब्रह्माण्ड कोटयः कट्याय स्पासौ पातु मे कटिम्।।
गुह्यं मे पातु गुह्यानां मन्त्राणां गुह्य रूपधृक्।।१४।।
उरू उरूजबः पातु जानुनी हरि रूपधृक्।।१५।।

जंघे पातु धराभार गुल्फौ शतु नृकेशरी।
सुरराज्यप्रदः पातु पादौ मे नृहरिः स्वयं।।१६।।
सहस्रशीर्षा पुरुषः पातु मे सर्वतस्तनुम्।
महोग्रः पूर्वतः पातु महावीरोग्निदेशतः।।१७।।
महाविष्णुर्दक्षिणे च महाज्वाला स्तु नैऋृते।
पश्चिमे पातु सर्वंत्र नृसिंहः सर्वतोमुखः।।१८।।
नृसिंहः पातु वायव्ये सौम्ये श्रीप्राणविग्रहः।
ईशाने पातु भद्रो मां सर्वमंगलदायकः।।१९।।
संसार भयदः पातु मृत्युं मृत्युनृकेशरी।
अतिरौद्रः महाकायः महादंष्ट्रः महाभुजः।।२०।।
जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यां श्रीनृसिंहस्तु सर्वतः पातु केशवः।।२१।।
उग्राय उग्रवेगाय उग्रकर्मरताय च।
उग्रनेत्राय व्यग्राय समग्र गुणशालिने।।२२।।
यत्र यत्र चरेन्मर्त्यो नृहरिस्तत्र रक्षतु।
अभयंकरसिंहाय नरसिंहाय ते नमः।।२३।।
बालग्रह-विनाशाय पिशाचग्रहघातिने।
दुष्टग्रहनिहन्त्रे च निग्रहानुग्रहाय च।।२४।।
हन्ताकारो निराकारो वगाकारेश्च शंकर।
अकारादि हकारांता ॐ कारो लोककारकः।।२५।।
एकात्मा त्वमनेकात्मा चतुरात्मा चतुर्भुजः।
चर्तुमूत्तिश्चतुर्द्रंष्ट्रश्चर्तुवेद मयोत्तमः।।२६।।
लोकप्रियो लोक गुरुर्लोकेशो लोकनायकः।
लोकसाक्षी लोकपतिर्लोकात्मा लोकलोचन।।२७।।
इदं नृसिंह कवचं प्रहलादमुखनिसृतं।
भक्तिमान् यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।२८।।

पुत्रवान् धनवान् लोके दीर्घायुरिह जायते।
यं यं कामयते कामं तं तमाप्नोत्यसंशयः।।२९।।
सर्वत्र जयमाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।
सर्वारिष्ट विनाशाय सर्वसम्पत्कराय च।।३०।।
भूत बैताल घाताय भूतग्रह विनाशिने।
सर्वदु:ख प्रशान्ताय सर्व सौभाग्य दायिने।।३१।।
भुव्यन्तरिक्ष दिव्यानां ग्रहाणां विनिवारणं।
बृश्चिकोरग सम्भूतं विषोऽपहरणंपुरं।।३२।।
ब्रह्मराक्षस पक्षाणांदूराद्विद्रावकारणं।
भूर्जे वा ताड़पत्रे वा लिखितं कवचं शुभं।।३३।।
करमूले घृतं येन सिद्धयः समुपस्थिता।
नृसिंह कवचे नैव रक्षितो बज्र रक्षितः।।३४।।
देवासुर मनुष्येषु स्वाज्ञया विजयी भवेत्।
एकसन्ध्यं द्विसन्ध्यं वा त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।।३५।।
प्राप्नोति परमां योग्यं विष्णुलोकं महीयते।
द्वात्रिंशत् सहस्रेण पाठात्शुद्धान्मनो नृणां।।३६।।
कवचस्यास्य मन्त्रस्य सिद्धिस्तत्र प्रजायते।
अनेन मन्त्रराजेन कृत्वा भस्माभिमन्त्रितम्।।३७।।
तिलकं धारयेद्यस्तु तस्य ग्रह भयं नहि।
त्रिवारं जप्यमानस्तु पूतं वार्याभिमन्त्रितम्।।३८।।
पापयेद्यं नरं मन्त्री नृसिंह ध्यानमाचरेत्।
तस्यरोगाः प्रणश्यन्ति पेचस्युः कुक्षि सम्भवाः।।३९।।
किमत्र बहूनोक्तेन नृसिंह सदृशो भवेत्।
मनसा चिन्तयेद्यस्तु तत्तदाप्नोति निश्चितम्।।४०।।
इति परम रहस्यसार मेतत् कवचमिदं पठतिह भक्ति युक्तः।
सभवतिधनधान्य पुत्रयुक्तस्तनु विषमे समुपैति नारसिंहम्।।४१।।

मातानृसिंहस्तु पिता नृसिंहो बन्धुर्नृसिंहो द्रविणं नृसिंहः।
सखागुरुणां स वै नृसिंहः स्वामी नृसिंहः सकलं नृसिंहः।।४२।।
इतोनृसिंहः परतो नृसिंहो यतो यतो याति ततो नृसिंहः।
नृसिंह देवात्तु परं न किंचित् तस्मान्नृसिंहं शरणं प्रपद्ये।।४३।।
शक्रारिवक्षः करजैर्विदार्य्य कृवा पयस्नान हरया विशुद्धम्।
तत्रैव तीर्थं हृतमोचनाम्ना कृत्वाधिवासे कृत मोचनाम्नाः।।४४।।

इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे प्रहलादेन विरचितं
श्रीनृसिंह कवचं सम्पूर्णम्।।

श्रीनृसिंह–मन्त्र–स्तवराज:

श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीमहादेव उवाच–

मन्त्रराजं प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वायतलोचने।
भवनं सर्वभक्तानां सर्वदेवसमन्वितम्।।१।।
अकारादहकारान्तं द्वात्रिंशद्वर्णसंयुतम्।
एकादशपदारूढ़ं नृसिंहनुष्टुंभं परम्।।२।।
मन्त्रार्थं श्रृणु मे देवि सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
सर्वरक्षाकरं नृणां दैवतैरपि दुर्लभम।।३।।
वृतोत्पल विशालाक्षं विपक्षक्षय वीक्षितम्।
निनादत्रस्त विश्वाण्ड विष्णुमुग्रं नमाम्यहम्।।४।।
सवैरवध्यता प्राप्तं तवलौघं दितेः सुतम्।
नखाग्रैः शकलेश्चक्रे ग्रस्तं वीरं नमाम्यहम्।।५।।
पदावष्टाब्धपातालं मूर्धाविष्ट त्रिविष्टपम्।
भुज प्रवष्टिाष्टदिशं महाविष्णुं नमाम्यहम्।।६।।
ज्योतिष्केन्दु नक्षत्रे ज्वलनान्दिन्यनेकधा।
ज्वलन्ति तेजसा यस्य तं ज्वलन्तं नमाम्यहम्।।७।।

सर्वेन्द्रियविहीनोऽपि सर्वं सर्वत्र सर्वदा।
जानाति यो नमाम्याद्यं तमहं सर्वतोमुखम्।।८।।
नखतः सिंह वच्चासीत् वपुर्यस्य भयात्मनः।
महाशठं महादंष्ट्रं तं नृसिंह नमाम्यहम्।।९।।
यन्नामस्मरणात् भीता भूतवेताल राक्षसाम्।
रोगाद्याश्च प्रणश्यन्ति भीषणं तं नमाम्यहम्।।१०।।
सर्वोऽपि यः समाहृत्य सकलं भद्रंमश्नुते।
श्रिया च भद्रया जुष्टं तं भद्रं प्रणमाम्यहम्।।११।।
साक्षात्स्वकाल संप्राप्तं मृत्युं शत्रुगणादपि।
भक्तानां नाशयेद्यस्तु मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम्।।१२।।
नमस्कारात्मकं यस्मै विद्यामात्म निवेदनम्।
मुक्त दुःखोऽखिलं नाम अश्नुते तं नमाम्यहम्।।१३।।
दासभूता यतः सर्वे ह्यात्मानः परमात्मनः।
अनर्होऽहमपि ते दास इति मत्वा नमाम्यहम्।।१४।।
शंकरेण दशा प्रोक्तं पदानाम् तत्र उत्तमम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेत्तस्य श्री विद्यायुश्च जायते।।१५।।
इदं स्तवं जपेद्यस्तु नृसिंहस्य च सन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम्।।१६।।

इति ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे उमामहेश्वरसंवादे
नृसिंहमन्त्रस्तवराजः सम्पूर्णः।।

श्रीलक्ष्मीनृसिंहहृदयस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः।।

अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंह हृदय महामन्त्रस्य प्रहलाद ऋषिः श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता अनुष्टुप छन्दः ममेप्सितार्थ सिद्धयर्थे पारायणे विनियोगः।।

करन्यासः

ॐ श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ वज्रनखाय तर्जनीभ्यां नमः।।
ॐ महारूपाय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सर्वतोमुखाय अनामिकाभ्यां नमः।।
ॐ भीषणाय कनिष्ठिकाभ्याम् नमः।
ॐ वीराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयान्यासः

ॐ श्री लक्ष्मी नृसिंहाय हृदयाय नमः।
ॐ वज्रनखाय शिरसे स्वाहाः।।
ॐ महारूपाय शिखायै वषट्।
ॐ सर्वतोमुखाय कवचाय हुम्।।
ॐ भीषणाय नेत्रत्रयाय बौषट्।
ॐ वीराय अस्त्राय फट्।।

अथ ध्यानम्

ॐ सत्यं ज्ञानदिव्यं सुखं क्षीराम्भोनिधि मध्यगम्।
योगारूढ़ं प्रसन्नास्य नाना भूषण भूषितम्।।
महाचक्रं महाविष्णुं त्रिनेत्रं च पिनाकिनम्।
श्वेताहिवासं श्वेतांगं सूर्यचन्द्रादिपाश्र्वगम्।।
श्रीनृसिंहं सदा ध्यायेत् कोटि सूर्य समप्रभम्।
ॐ नमो भगवते नरसिंह देवाय नमः।।

अथ स्तोत्रं।।

श्रीनृसिंहः परंब्रह्म श्री नृसिंहः परं शिवः।
नृसिंहः परमोविष्णुः नृसिंहस्सर्वदेवताः।।१।।
नृ शब्देनोच्यते जीवः सिंह शब्देन च स्वरः।
तयोरैक्यं श्रुतिप्रोक्त य पश्यति स पश्यति।।२।।
नृसिंहादेव जायन्ते लोकाः स्थावरजंगमाः।
नृसिंहेनैव जीवन्ति, नृसिंहे प्रविशन्ति च।।३।।
नृसिंहोविश्वमुत्पाद्य प्रविश्य तदनन्तरम्।
राजभिक्षुक रूपेण नृसिंहस्य स्मरन्ति ये।।४।।
नृसिंहात्परमं नास्ति नृसिंह कुलदैवतम्।
नृसिंह भक्ता ये लोके ते ज्ञानिन इतीरिताः।।५।।
विरक्ता दयया युक्तास्सवभूत समेक्षणाः।
नृसिंह न्यस्तसंसारा नृसिंह प्राप्नुवन्ति ते।।६।।
महात्म्यं यस्य सर्वेऽपि वदन्ति निगमागमाः।
नृसिंहः सर्वजगतां कर्त्ता भोक्ता न चापरः।।७।।
नृसिंहो जगतां हेतुः बहिर्यायाऽवलम्बनः।
मायया वेदितात्मा च सुदर्शन समाक्षरः।।८।।
वासुदेवो माययातीतो नारायण समप्रभः।
निर्मलो निरहंकारो निर्मलेयः निरञ्जनः।।९।।

सर्वेषां चापि भूतानां हृदयाम्भोज वासकः।
अप्रेष्ठः सदानन्दो निर्विकारो महामतिः।।१०।।
चराचर स्वरूपी च चराचर नियामकः।
सर्वेश्वर सर्वकर्त्ता सर्वात्मा सर्वगोचरः।।११।।
नृसिंह एव यः साक्षात् प्रत्यगात्मा न संशयः।
केचिन्मूढ़ा वदन्त्येवमवतारमनीश्वरम्।।१२।।
नृसिंह परमात्मानं सर्वभूतनिवासिनम्।
तेषां दर्शनमात्रेण सूर्यास्यावलोकन भवेत्।।१३।।
सर्वं नृसिंह एवेति संग्रहात्मा सुदुर्लभः।
नारसिंहः परं दैवं नारसिंहो जगद्गुरुः।।१४।।
नृसिंहेति नृसिंहेति प्रभाते ये पठन्ति व।
तेषां प्रसन्नो भगवान् मोक्षं सम्यक प्रयच्छति।।१५।।
ओंकारेभ्यो नित्यात्मा ओंकारैक प्रबोधितः।
ओंकारो मन्त्रराजश्च लोके मोक्षप्रदद्वयम्।।१६।।
नृसिंह भक्ता ये लोके निर्भया निर्विकारकाः।
तेषां दर्शन मात्रेण सर्व पापैः प्रमुच्यते।।१७।।
सकारो जीववाची स्यात् इकारः परमेश्वरः।
हकाराकारयोरैक्यं महावाक्यं ततो भवेत्।।१८।।
ओंकारजा प्रेतमुर्क्तिः काश्यां मरणं तथा।
नृसिंह स्मरणादेव मुक्तिर्भवति नान्यथा।।१९।।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन मन्त्रराजमिति ध्रुवम्।
सर्वेषां चापि वेदानां देवतानां तथैव च।।२०।।
सर्वेषां चापि शस्त्राणां तात्पर्यं नृहरौ हरौ।
श्रीरामतापनीयस्य च गोपालस्यापितापिनः।।२१।।
नृसिंहतापनीयस्य कलां नार्हति षोड़शीम्।
श्रीमन्मन्त्रराजस्य नृसिंहस्य प्रसादतः।।२२।।

श्रीनृसिंह नमस्तुभ्य श्रीनृसिंहः प्रसीद मे।
नृसिंह भगवान् माता श्रीनृसिंहः पिता मम।।२३।।
नृसिंहो मम पुत्रश्च नरकात् त्रायते यतः।
सर्वदेवात्मकायश्चायं नृसिंहः परिकीर्त्तितः।।२४।।
अश्वमेधसहस्राणि बाजपेयशतानि च।
काशीरामेश्वरादीनि फलान्यपि निशम्य च।।२५।।
यावत् फलं समाप्नोति तावदाप्नोति मन्त्रतः।
षण्णवत्यश्च करणीयावती तृप्तिरिष्यते।।२६।।
पितृणां तावती प्रीतिः मन्त्रराजस्य जायते।
अपुत्रस्य गर्तिनास्ति इति श्रुत्वा यदीरितम्।।२७।।
तत्तु लक्ष्मीनृसिंहस्य भक्तिरिकतैंक गोचरम्।
सर्वाणि तर्क मीमांसा शास्त्राणि परिहाय वै।।२८।।
नृसिंहस्मरणाल्लोके तारकं भवतारकम्।
अपार भववाराब्धौ सततं पततां नृणाम्।।२९।।
नृसिंहःमन्त्रराजोऽयं नाविकः भाष्यते बुधैः।
यम पाशेन बद्धानां पङ्गु वै तिष्ठतां नृणाम्।।३०।।
नृसिंहः मन्त्रराजोऽयं ऋषयः परिकीर्त्तितः।
भव सर्पेण दंष्टानां विवेकगत चेतसाम्।।३१।।
नृसिंहः मन्त्रराजोऽयं गारुड़ो मन्त्र उच्यते।
अज्ञान तमसां नृणामन्धवद् भ्रान्त चक्षुषाम्।।३२।।
नृसिंहः मन्त्रराजोऽयं प्रयासं परिकीत्तितः।
तापत्रयाग्निदग्धानां छायासंश्रयभिच्छताम्।।३३।।
नृसिंहमन्त्रराजस्य भक्तमानस पंजरम्।
नृसिंहो भास्करो भूत्वा प्रकाशयति मन्दिरम्।।३४।।
वेदान्तवनमध्यस्था हरिणी मृग इष्यते।
नृसिंह नीलमेघस्य संदर्शन विशेषतः।।३५।।

मयूर भक्त नामानो नृत्यन्ति प्रीति पूर्वकम्।
अन्यत्र निर्गता वाला मातरं परिलोकय।।३६।।
यथा यथा हि तुष्यन्ते नृसिंहस्यावलोकनात्।
श्रीमन्नृसिंह पादाब्ज महारङ्गप्रवेशित्:।।३७।।
मदीय बुद्धि बनिता नटी नृत्यति सुन्दरी।
श्रीमन्नृसिंह पादाब्ज मधु पीत्वा मदोन्मद:।।३८।।
मदीय चित्त भृंगीयं न मुंचति करोमि किम्।
नारसिंह महाजार मालिङ्गय व्यभिचारिणी।।३९।।
मदीया बुद्धिमालोक्य मूढ़ा निन्दन्ति माधवम्।
श्रीमन्नृसिंह पादाब्जरेणुं विधिसुभक्षणम्।।४०।।
मदीयचित्तहंसोऽयं मनोवश्यं न याति मे।
श्रीनृसिंह: पिता मह्यं माता च नरकेशरी।।४१।।
बर्त्तते तावुभौ नित्यं रौवहं परियामि वै।
सत्यं सत्यं पुन: सत्यं नृसिंह: शरणम् मम।।४२।।
अहोभाग्यं अहोभाग्यं नारसिंहो गर्तिमम।
श्रीमन्नृसिंह पादाब्जद्वन्द्वं मे हृदये सदा।।४३।।
वर्त्ततां वर्त्ततां नित्यं दृढ़ भक्तिं प्रयच्छ मे।
नृसिंह तुष्टो भक्तोऽयं भुक्तिं मुक्तिं प्रयच्छति।।४४।।
नृसिंह हृदयं यस्तु पठेन्नित्यं समाहित:।
नृसिंहत्व समाप्नोति नृसिंह: सम्प्रसीदति।।४५।।
त्रिसन्ध्यं य: पठेन्नित्यं मन्दवारे विशेषत:।
राजद्वारे सभास्थाने सर्वत्र विजयी भवेत्।।४६।।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
इह लोके शुभान् कामान् परत्र च पराङ्गतिम्।।४७।।

इति भविष्योत्तर पुराणे प्रहलाद कथितं
श्री श्री लक्ष्मीनृसिंह हृदय स्तोत्रं सम्पूर्णम्

नृसिंह पुराणे ''लक्ष्मीनृसिंह–कवचं''

श्रीगणेशाय नमः।।

ब्रह्मोवाच

अनेक मन्त्र कोटिशो नृसिंह नाम संचरेत्।
अनेक विधि रक्षया विष रोग निवारणम्।।१।।

ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी नृसिंह कवच महामन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्रीनृसिंह देवता, ॐ क्ष्रौं बीजं, ॐ रौं शक्तिंः, ॐ ऐं कीलकम्, मम सर्व रोग, शत्रु चौर, पन्नग, ब्याघ्र, वृश्चिक, भूत–प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, यन्त्रमन्त्रादि सर्व विघ्न, निवारणार्थे नृसिंह कवच महामन्त्र जपे विनियोगः अथ ऋष्यादिन्यासः ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे। श्री लक्ष्मी नृसिंह देवतायै नमो हृदि, ॐ क्ष्रौं बीजायै नमो नाभ्याम्। ॐ रौं शक्तये नमः कटि देशे। ॐ ऐं क्लीं कीलकाय नमः पादयोः।। ॐ नृसिंह कवच महामन्त्र जपे विनियोगाय नमः सर्बाङ्गे।।

अथ करन्यासः।।

ॐ क्ष्रौं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ प्रौं तर्जनीभ्यां नमः।।
ॐ ह्रौं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ रौं अनामिकाभ्यां नमः।।

ॐ स्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ज्रौं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।।

अथ हृदयादि न्यासः

ॐ क्ष्रौं हृदयाय नमः।

ॐ प्रौं शिरसे स्वाहाः।।

ॐ ह्रौं शिखायै बौषट्।

ॐ रौं कवचाय हुम्।।

ॐ ब्रौ नेत्रत्रयाय बौषट्।

ॐ ज्रौं अस्त्राय फट्।।

अथ ध्यानम्-

ॐ सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थितं,
योगारूढ़मतिप्रसन्नवदनं भूषासहस्रोज्वलम्।
तीक्ष्णं चक्रपिनाकसाभयकरान् बिभ्राणमर्कच्छविं,
छत्रीभूतफणीन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मीनृसिंह भजे।।

को पादा लोलजिव्हं विबृता निजमुखं सोम सूर्याग्नि नेत्रं, पादादानाभिरक्तं प्रभमुपरिसितं भिन्न दैत्येन्द्रगात्रम्। शंखश्चक्रैश्च पाशांकुश कुलिश गदा दारुणन् युद्ध हन्स्तं भीमं तीक्ष्णग्रदंष्ट्रं मणिमय विविधाकल्पमीडे नृसिंहम्।।२।।

गर्जन्तं गर्जयन्तं निज भुज पटलं स्फोटयन्तं हरन्तं रूप्यन्तं तापयन्तं दिवि भुवि दितिजं क्षेपयन्तं शिरोऽन्तम्। क्रन्दन्तं रोषयन्तं दिशि दिशि सततं संरभन्तं हरन्तं बीक्षन्तं घूर्णयन्तं कर निकर शतैर्दिव्य सिंहं नमामि।। ॐ क्ष्रौं प्रौं ह्रौं रौं ब्रौं ज्रौ नमः स्वाहा।। ॐ बज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णद्रंष्ट्राय धीमहि तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।। ॐ नमो नृसिंहाय सर्व दुष्ट विनाशनाय सर्वजन मोहनाय सर्व राज्यं वश्यं कुरु

कुरु स्वाहा।। ॐ नमो नृसिंहाय नृसिंहराजाय नरकेशाय नमो नमस्ते।। ॐ नमः कालाय कालदंष्ट्राय कराल बदनाय च। ॐ उग्राय उग्रबीराय उग्रबिकटाय उग्रबज्राय बज्रदेहिने रुद्राय रुद्रघोराय भद्राय भद्रकारिणे नमः।। ॐ ज्रीं ह्रीं नृसिंहाय नमः स्वाहाः।। ॐ नमो नृसिंहाय कपिलाय कपिल जटाय अमोघ वाचाय सत्यं व्रत्यं महोग्राय प्रचण्डरूपाय।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं ॐ क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रौं फट् स्वाहाः।। ॐ नमो नृसिंहाय कपिलजटाय, मम सर्व रोगान् बन्ध बन्ध सर्व वृश्चिकादिनां विषं बन्ध, बन्ध सर्ब भूत, प्रेत, पिशाच शाकिनी डाकिनी यन्त्र मन्त्रादीन् बन्ध बन्ध कीलय कीलय चूर्णय चूर्णय मर्द्य मर्दय ऐं ऐं एहि एहि, मम ये ये बिरोधिनस्तान् सर्बान् सर्वतो हन हन दह दह मथ मथ पच पच चक्रेण गदा बज्रेण भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं ह्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रौं श्री नृसिंहाय नमः स्वाहा ॐ आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट् ॐ नमो भगवते सुदर्शन नारसिंहाय अमुकस्य अमुकस्मात् विजय रूपे कार्ये ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल असाध्य मेतत्कार्यं शीघ्रं साध्य साधय एनं सर्व प्रतिबन्ध केभ्यः सर्बतो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा। ॐ क्ष्रौं ॐ नमो भगवते नारसिंहाय एतद्दोषं प्रचण्ड चक्रेण जहि जहि स्वाहा। ॐ नमो भगवते महानृसिंहाय कराल वदन दंष्ट्राय मम बिघ्नान् पच पच स्वाहा। ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकश्यप वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत, पिशाच डाकिनी शाकिनी कीलनोन्मूलनाय मम शरीरस्थम्मोद्भव समस्त दोषान् हन हन शर शर चल चल, कम्पय, कम्पय, मथ मथ हुं फट् ठः ठः ॐ नमो भगवते भो! भो! सुदर्शन नारसिंह ॐ आं ह्रीं क्रौं क्ष्रौं हुं फट् (स्वाहा) ॐ सहंस्रारं ममांग बर्त्तमानं अमुक रोगं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ, मथ आरोग्यं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रूं फट् शत्रुन् हन हन द्विष द्विष तद पचयं कुरु कुरु मम सर्वार्थं साधय साधय ॐ नमो भगवते नारसिंहाय ॐ क्ष्रौं क्रौं आं ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं रां

ग्फ्रें ब्लुंयं रं लं वं शं षं स्रां हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते नारसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भव बज्र नख बज्र दंष्ट्र कर्माशयान् रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा। अभयं भयमात्मनि भूयिष्ठा ॐ क्ष्रौंम् ॐ नमो भगवते तुभ्यं पुरुषाय महात्मने हरये अद्भुत सिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने।। ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

इति श्रीनृसिंह पुराणे ब्रह्म सावित्री सम्बादे श्रीनृसिंह कवचं सम्पूर्णं।।

(यह नृसिंह कवच स्व० पं० वटुकनाथजी शास्त्री, वृन्दावन, नेपाल के प्राचीन ग्रन्थागार से प्रतिलिपि कर लाये थे। यह कवच प्रत्यक्ष फलदाता एवं उग्र है। इसका ७ बार श्रद्धापूर्वक पाठ कर जल अभिमन्त्रित कर देने से असाध्य रोग भी, मात्र ४ दिन में समूल विनष्ट हो जाता है। इसका ३२ हजार पाठ से पूर्ण सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन से मनोबांछित फल प्राप्ति होती है। भूत, प्रेत, अपदेवता के असर बालों को पीली सरसों से पढ़कर देने से आरोग्य हो जाता है। यह अभी तक प्रकाशित नहीं है।) पण्डितजी ने स्वयं प्रति लिखकर दी थी।

–सम्पादक

श्रीलक्ष्मीनृसिंह–कवचं–नृसिंह पुराणे

श्रीगणेशाय नमः।। श्रीश्रीलक्ष्मीनृसिंहदेव शरणम्।।

ब्रह्मोवाच।।

अनेक मन्त्र कोटिश नृसिंह नाम समुच्चरेत्
अनेन विधिना रक्षायां विषरोग निवारणम्।।१।।

ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी नृसिंह कवचस्य, ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः ॐ क्ष्रौं बीजं, ॐ रौं शक्तिः, ॐ रौं क्लीं कीलकं, ॐ नृसिंह देवता मम सर्व रोगानां, सर्व देव दोषानां, चौर, पन्नग, व्याघ्र, बृश्चिक, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी यन्त्र मन्त्रानेक निवारणार्थे जपे विनियोगः।।

ॐ क्ष्रौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ प्रौं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं मध्यामाभ्यां नमः।
ॐ रौं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ज्रौं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं शिखायै बौषट्।

ॐ रौं कवचाय हूं।

ॐ व्रौं नेत्रत्रयाय बौषट्।

ॐ ज्रौं अस्त्राय फट्।

ध्यानं।।

ॐ सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थितं,
योगारूढ़मतिप्रसन्नवदनं भूषासहस्रोज्ज्वलम्।
तीक्ष्णं चक्रपिनाकसाभयकरान् बिभ्राणमर्कच्छविं,
छत्रीभूतफणीन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मीनृसिंह भजे।।

क्ष्रौं, प्रौं, ह्रौं, रौं ज्रौं नमः स्वाहाः।। ॐ नमो नृसिंहाय, कपिलं जटा सत्यं व्रत्यं ॐ महाऊग्राय, प्रचण्ड रूपाय, ॐ ह्रौं, ह्रौं, ह्रीं, ह्रीं, हूं, हूं, छां, छां, छूं, छूं, फट् स्वाहा। सर्व रोगानां, बन्ध, बन्ध, कीलय, कीलय, सर्व वृश्चिकानां, बन्ध, बन्ध, कीलय, कीलय, सर्व बृश्चिकानां, बन्ध, बन्ध, सर्व भूत प्रेत पिशाचशाकिनी, डाकिनी, यन्त्र, मन्त्र, बन्ध, बन्ध, कीलय, कीलय, मर्दय, मर्दय, चूर्णय, चूर्णय, चक्रेण गदां, बज्रेण भस्मी कुरु, कुरु, स्वाहा। ज्रीं, ज्रीं, ह्रीं, ह्रीं, क्ष्रीं, क्ष्रीं, नृसिंहाय नमः स्वाहाः।।

इति श्रीनृसिंह पुराणे
श्रीश्रीलक्ष्मीनृसिंह कवचम् सम्पूर्णम्
।। हरि ॐ।।

श्रीनृसिंह स्तोत्रम्

ॐ नृसिंहदेवाय नमः।।

ॐ नमो भगवते तस्मै केशवाय महात्मने।
यन्नामकीर्त्तनात् सद्यो नरकाग्निः प्रशम्यति।।१।।
भक्तप्रियाय देवाय रक्षाय हरये नमः।
लोकनाथाय शान्ताय यज्ञेशायादिमूर्त्तये।।२।।
अनन्तायाप्रमेयाय नरसिंहाय ते नमः।
नारायणाय गुरवे शंखचक्र गदाभृते।।३।।
वेदप्रियाय महते विक्रमाय नमो नमः।
वराहाय प्रतर्क्याय वेदांगाय महीभृते।।४।।
नमो द्युतिमते नित्यं ब्राह्मणाय नमो नमः।
वामनाय बहूज्ञाय वेद वेदांग धारिणे।।५।।
वलिवन्धन दत्ताय वेदपालाय ते नमः।
विष्णवे सुरनाथाय व्यापिने परमात्मने।।६।।
चतुर्भुजाय शुद्धाय शुद्धद्रव्याय ते नमः।
जामदग्न्याय रामाय दुष्टक्षत्रान्तकारिणे।।७।।
रामाय रावणान्तकाय नमस्तुभ्यं महात्मने।
अस्मानुद्धर गोविन्द पूतिगन्धान्नमोऽस्तुते।।८।।
स्तोत्रमेतत् पठेद्यस्तु निरयान्मुच्यते च सः।
नास्त्यत्र संशयः स्वल्प प्रत्यहं पाठमाचरेत्।।९।।

इति श्रीनृसिंह पुराणे नारकि कृतं
श्रीनृसिंह–स्तोत्र सम्पूर्णम्

श्रीलक्ष्मीनृसिंह–सहस्रनाम–स्तोत्रम्

ॐ गणेशाय नमः।।

मार्कण्डेय उवाच-

एवं युद्धमभूद्घोरं रौद्रं दैत्यबलैस्सह।
नृसिंहस्यांगसम्भूतै नारसिंहैरनेकशः।।१।।
दैत्यकोटि हतास्तत्र केचिद्भीताः पलायिताः।
तं दृष्टवातीव संक्रुद्धो हिरण्यकशिपुः स्वयम्।।२।।
भूतपूर्वैरमृत्युर्मे इति ब्रह्मवरोद्धतः।
ववर्ष शरवर्षेण नारसिंहो भृशं वली।।३।।
द्वन्द्वयुद्धभभूदुग्रं दिव्यवर्ष सहस्रकम्।
दैत्येन्द्रे साहसं दृष्टवा देवाश्चेन्द्र पुरोगमा।।४।।
श्रेयः कस्य भवेदत्र इति चिन्तापराभवन्।
तदा क्रुद्धो नृसिंहस्तु दैत्येन्द्र प्रहितान्यपि।।५।।
विष्णुचक्रं महाचक्रं कालचक्रं तु वैष्णवम्।
रौद्रं पाशुपतं ब्राह्मं कौबेरं कुलिशासनम्।।६।।
आग्नेयं वारुणं सौम्यं मोहनं सौऽरपार्वतम्।
भार्गवादि बहून्यस्त्राण्यभक्षयत् कोपनः।।७।।
सन्ध्याकाले सभाद्वारे स्वाङ्के निक्षिप्य भैरवः।
ततः खड्गधरं दैत्यं जग्राह नरकेशरी।।८।।

हिरण्यकशिपोर्वक्षो विदार्यातीव रोषितः।
उद्धृत्य चान्त्रमालानि नखैर्वज्रसमप्रभैः।।९।।
मेने कृतार्थमात्मानं सर्वतः पर्यवैक्षत।
हर्षिता देवातास्सर्वाः पुष्पवृष्टिमवाकिरन्।।१०।।
देवदुंदुभयो नेदुविमलाश्च दिशोभवन्।
नरसिंमतीवोग्रं विकीर्णवदनं भृशम्।।११।।
लेलिहानं च गर्जन्तं कालानलसमप्रभम्।
अतिरौद्रं महाकायं महादंष्ट्रं महारुतम्।।१२।।
महासिंहं महारूपं दृष्ट्वा संक्षुभितं जगत्।
सर्वदेवगणैस्सार्धं तत्रागत्य पितामहः।।१३।।
आगन्तुकैर्भूतपूर्वैर्वर्तमानैरनुत्तमैः ।
गुणैरभिसहस्रेण तुष्टाव श्रुतिसम्मतैः।।१४।।

ओं नमः श्रीमद्दिव्यलक्ष्मीनृसिंह सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता अनुष्टुप्छन्दः श्रीनृसिंहः परमात्मा बीजं लक्ष्मीर्मायाशक्तिः जीवो बीजं, बुद्धिः शक्तिः उदानवायुः बीजं सरस्वती शक्तिः व्यञ्जनानि वीजानि स्वराः शक्तयः ओं क्ष्रौं ह्रीं इति बीजानि ओं श्रीं अं आं इति शक्तयः विकीर्णनखदंष्ट्रा युधायेति कीलकं अकारादिति बोधकं श्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रसादसिद्धयर्थे श्रीलक्ष्मीनृसिंह सहस्रनाम स्तोत्रमन्त्र जपे विनियोगः–

ब्रह्मोवाचः	**(करन्यास)**
ओं लक्ष्मीनृसिंहाय नमः	अङ्गुष्ठाय नमः
ओं वज्रनखाय नमः	तर्जनीभ्यां नमः
ओं महारुद्राय नमः	मध्यमाभ्यां नमः
ओं सर्वतोमुखाय नमः	अनामिकाभ्यां नमः
ओं विकटाय नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ओं वीराय नमः	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

(हृदयान्यासः)

ओं श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः हृदयाय नमः

ओं वज्रनखाय नमः शिरसे स्वाहाः

ओं महारुद्राय नमः शिखायै वषट्

ओं सर्वतोमुखाय नमः कवचाय हुम्

ओं विकटाय नमः नेत्राभ्यां वौषट्

ओं वीराय नमः अस्त्राय फट्

(दिग्बन्धनम्)

ओं ऐन्द्रीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं आग्नेयीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं याम्यां दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं नैऋृतिं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं वारुणीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं वायवीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं कौबेरीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं ईशानीं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं ऊर्ध्वां दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं अधस्ता दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

ओं अन्तरिक्षं दिशं सुदर्शनेन बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा

अथ ध्यानं-

सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थितं,
योगारूढमतिप्रसन्नवदनं भूषासहस्रोज्वलम्।
तीक्ष्णं चक्रपिनाकसाभयकरान् बिभ्राणमर्कच्छविं,
छत्रीभूतफणीन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मीनृसिंह भजे।।
उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्म वेदान्तगोचरम्।

भूयोलालितसंसारच्छेदहेतुं जगद्गुरुम्।।

ओं ह्रीं श्रीं ऐं क्ष्रौं नृसिंहाय नमः।। मन्त्रः

ओं नमो नारसिंहाय वज्रदंष्ट्राय वज्रिणे।
वज्रदेहाय वज्राय नमो वज्रनखाय च।।१।।
वासुदेवाय वन्द्याय वरदाय वरात्मने।
वरदाभयहस्ताय वराय वरुरूपिणे।।२।।
वरेण्याय वरिष्ठाय श्रीवराय नमो नमः।
प्रहलादवरदायैव प्रत्यक्षवरदाय च।।३।।
परात्पर परेशाय पवित्राय पिनाकिने।
पावनाय प्रसन्नाय पाशिने पापहरिणे।।४।।
पुरुष्टुताय पुण्याय पुरुहूताय ते नमः।
तत्पुरुषाय तथ्याय पुराणपुरुषाय च।।५।।
पुरोधसे पुर्वजाय पुष्कराक्षाय ते नमः।
पुष्पहासाय हासाय महाहासाय शार्ङ्गिणे।।६।।
सिंहाय सिंहराजाय जगद्वश्याय ते नमः।
अट्टहासाय रोषाय जलवासाय ते नमः।।७।।
भूतवासाय भासाय श्रीनिवासाय खड्गिने।
खड्गजिहवाय सिंहाय खड्गवासाय ते नमः।।८।।
नमो मूलाधिवासाय धर्मवासाय धन्विने।
धनञ्जयाय धन्याय नमो मृत्युंजयाय च।।९।।
शुभञ्जयाय सूत्राय नमश्शत्रुञ्जयाय च।
निरञ्जनाय नीराय निर्गुणाय गुणाय च।।१०।।
निष्प्रपञ्चाय निर्वाणपदाय निबिडाय च।
निरालम्बाय नीलाय निष्कलाय कलाय च।।११।।
निमेषाय निबन्धाय निमेषगमनाय च।
निर्द्वंद्वाय निराशाय निश्चयाय निराय च।।१२।।

निर्मलाय निबन्धाय निर्मोहाय निराकृते।
नमो नित्याय सत्याय सत्कर्मनिरताय च।।१३।।
सत्यध्वजाय मुंजाय मुंश्जकेशाय केशिने।
हरीशाय च शेषाय गुडाकेशाय वै नमः।।१४।।
सुकेशायोर्ध्वकेशाय केशिसंहारकाय च।
जलेशाय स्थलेशाय पद्मेशायोग्ररूपिणे।।१५।।
कुशेशयाय कूलाय केशवाय नमो नमः।
सूक्तिकर्णाय सूक्ताय रक्तजिहवाय रागिणे।।१६।।
दीप्तरूपाय दीप्ताय प्रदीप्ताय प्रलोभिने।
प्रच्छिन्नाय प्रबोधाय प्रभवे विभवे नमः।।१७।।
प्रभञ्जनाय पान्याय प्रमायाप्रमिताय च।
प्रकाशाय प्रतापाय प्रज्वालायोज्वलाय च।।१८।।
ज्वालामालास्वरूपाय जलज्जिह्वाय ज्वालिने।
महोज्ज्वलाय कालाय कालमूर्त्तिधराय च।।१९।।
कालान्तकाय कल्पाय कलनाय कृते नमः।
कालचक्राय शक्राय बषट् चक्राय चक्रिणे।।२०।।
अक्रूराय कृतान्ताय विक्रमाय क्रमाय च।
कृत्तिने कृत्तिवासाय कृतघ्नाय कृतात्मने।।२१।।
संक्रमाय च क्रुद्धाय क्रान्तलोकत्राय च।
अरूपाय स्वरूपाय हरये परमात्मने।।२२।।
अजयायादिदेवाय अक्षयाय क्षयाय च।
अघोराय सुघोराय घोर घोर तराय च।।२३।।
नमोऽस्त्वघोरवीर्याय लसद्घोराय ते नमः।
घोराध्यक्षाय दक्षाय दक्षिणार्याय शम्भवे।।२४।।
अमोघाय गुणौघाय अनघायाघहारिणे।
मेघनादाय नादाय तुभ्यं मेघात्मने नमः।।२५।।

मेघवाहनरूपाय मेघश्यामाय मालिने।
व्यालयज्ञोपवीताय व्याघ्रदेहाय वै नमः।।२६।।
व्याघ्रपादाय च व्याघ्रकर्मिणे व्यापकाय च।
विकटास्याय वीराय विष्टरश्रवसे नमः।।२७।।
विकीर्णनखदंष्ट्राय नखदंष्ट्रयुधाय च।
विष्वकसेनाय सेनाय विह्वालाय बलाय च।।२८।।
विरूपाक्षाय वीराय विशेषाक्षाय साक्षिणे।
वीतशोकाय विस्तीर्णवदनाय नमो नमः।।२९।।
विधानाय विधेयाय विजयाय जयाय च।
विबुधाय विभावाय नमो विश्वम्भराय च।।३०।।
वीतरागाय विप्राय विटङ्कनयनाय च।
विपुलाय विनीताय विश्वयोने नमो नमः।।३१।।
चिदम्बराय वित्ताय विश्रुताय वियोनये।
विह्वलाय विकल्पाय कल्पातीताय शिल्पिने।।३२।।
कल्पनाय स्वरूपाय फणितल्पाय वै नमः।
तटित्प्रभाय तार्याय तरुणाय तरस्विने।।३३।।
तपनाय तरक्षाय तापत्रयहराय च।
तारकाय तमोघ्नाय तत्त्वाय च तपस्विने।।३४।।
तक्षकाय तनुत्राय तटिने तरलाय चः।
शतरूपाय शान्ताय शतधाराय ते नमः।।३५।।
शतपत्राय ताक्ष्र्याय स्थितये शतमूर्त्तये।
शतक्रतुस्वरूपाय शाश्वताय शतात्मने।।३६।।
नमस्सहस्रशिरसे सहस्रवदनाय च।
सहस्राक्षाय देवाय दिशश्रोताय ते नमः।।३७।।
नमः सहस्रजिह्वाय महाजिह्वाय ते नमः।
सहस्रनामधेयाय सहस्राक्षिधराय च।।३८।।

सहस्रवाहवे तुभ्यं सहस्रचरणाय च।
सहस्रार्कप्रकाशाय सहस्रायुध धारिणे।।३९।।
नमः स्थूलाय सूक्ष्माय सुसूक्ष्माय नमो नमः।
सुक्षुण्याय सुभिक्षाय सुराध्यक्षाय शौरिणे।।४०।।
धर्माध्यक्षाय धर्माय लोकाध्यक्षाय वै नमः।
प्रजाध्यक्षाय शिक्षाय विपक्षक्षय मूर्त्तये।।४१।।
कालाध्यक्षाय तीक्ष्णाय मूलाध्यक्षाय ते नमः।
अधोक्षजाय मित्राय सुमित्रवरुणाय च।।४२।।
शत्रुघ्नाय अविघ्नाय विघ्नकोटिहराय च।
रक्षोघ्नाय तमोघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः।।४३।।
भूतपालाय भूताय भूतवासाय भूतिने।
भूतवेतालघाताय भूताधिपतये नमः।।४४।।
भूतग्रहविनाशाय भूतसंयमते नमः।
महाभूताय भृगवे सर्वभूतात्मने नमः।।४५।।
सर्वारिष्ट विनाशाय सर्वसम्पत्कराय च।
सर्वाधाराय शर्वाय सर्वात्तिहरये नमः।।४६।।
सर्वदुःख प्रशान्ताय सर्वसौभाग्यदायिने।
सर्वज्ञायाप्यनन्ताय सर्व शक्ति धराय च।।४७।।
सर्वैश्वर्यप्रदात्रे च सर्वकार्यविधायिने।
सर्वज्वरविनाशाय सर्वरोगपहारिणे।।४८।।
सर्वाभिचारहन्त्रे च सर्वैश्वर्यविधायिने।
पिङ्गाक्षायैकश्रृंगाय द्विश्रृंङ्गाय मरिचये।।४९।।
बहुशृंङ्गाय लिङ्गाय महाशृङ्गाय ते नमः।
माङ्गल्याय मनोज्ञाय मन्तयाय महात्मने।।५०।।
महादेवाय देवाय मातुलिङ्गधराय च।
महामाया प्रसूताय प्रस्तुताय च मायिने।।५१।।

अनन्तानन्तरूपाय मायिने जलशायिने।
महोदराय मन्दाय मददाय मदाय च।।५२।।
मधुकैटभहन्त्रे च माधवाय मुरारये।
महीवीर्याय धैर्याय चित्रवीर्याय ते नमः।।५३।।
चित्रकूर्माय चित्राय नमस्ते चित्रभानवे।
मायातीताय मायाय महावीराय ते नमः।।५४।।
महातेजाय बीजाय तेजोधाम्ने च बीजिने।
तेजोमय नृसिंहाय नमस्ते चित्र भावने।।५५।।
महादंष्ट्राय तुष्टाय नमः पुष्टिकराय च।
शिपिविष्टाय हृष्टाय पुष्टाय परमेष्ठिने।।५६।।
विशिष्टाय च शिष्टाय गरिष्ठायेष्ठदायिने।
नमो जेष्ठाय श्रेष्ठाय तुष्टायामिततेजसे।।५७।।
अष्टाङ्गन्यस्तरूपाय सर्वदुष्टान्तकाय च।
वैकुण्ठाय विकुण्ठाय केशिकण्ठाय ते नमः।।५८।।
कण्ठीरवाय लुण्ठाय निश्शठाय हठाय च।
सत्वोद्रिक्ताय रुद्राय ॠग्यजुस्सामगाय च।।५९।।
ॠतुध्वजाय वज्राय मन्त्रराजाय मन्त्रिणे।
त्रिनेत्राय त्रिवर्गाय त्रिधाम्ने च त्रिशूलिने।।६०।।
त्रिकालज्ञानरूपाय त्रिदेहाय त्रिधात्मने।
नमस्त्रिमूर्त्ति विद्याय त्रितत्वज्ञानिने नमः।।६१।।
अक्षोभ्यायानिरुद्धाय अप्रमेयाय भानवे।
अमृताय अनन्ताय अमितायामितौजसे।।६२।।
अपमृत्युविनाशाय अपस्मारविघातिने।
अन्नदायान्नरूपाय अन्नायान्नभुजे नमः।।६३।।
नाद्याय निरवद्याय विद्यायाद्भुत कर्मणे।
सद्योजाताय सङ्घाय वैद्युताय नमो नमः।।६४।।

अध्वातीताय सत्वाय वागतीताय वाग्मिने।
वागीश्वराय गोपाय गोहिताय गवाम्पते।।६५।।
गन्धर्वाय गभीराय गर्जितायोर्जिताय च।
पर्जन्याय प्रबुद्धाय प्रधानपुरूषाय च।।६६।।
पद्माभाय सुनाभाय पद्मनाभाय मानिने।
पद्मनेत्राय पद्माय पद्मायाः पतये नमः।।६७।।
पद्मोदराय पूताय पद्मकल्पोद्भवाय च।
नमो हृद् पद्मवासाय भूपद्मोद्धरणाय च।।६८।।
शब्दब्रह्म स्वरूपाय ब्रह्मरूपधराय च।
ब्रह्मणे ब्रह्मरूपाय पदमनेत्राय ते नमः।।६९।।
ब्रह्मदाय ब्राह्मणाय ब्रह्मब्रह्मात्मने नमः।
सुब्रह्मण्याय देवाय ब्रह्मण्याय त्रिवेदिने।।७०।।
परब्रह्म स्वरूपाय पञ्चब्रह्मात्मने नमः।
नमस्ते ब्रह्मशिरसे तदाऽश्व शिरसे नमः।।७१।।
अथर्वशिरसे नित्यमशनिप्रमिताय च।
नमस्ते तीक्ष्ण द्रंष्ट्राय लोलाय लेलिताय च।।७२।।
लावण्याय लवित्राय नमस्ते भासकाय च।
लक्षणज्ञाय लक्षाय लक्षणाय नमो नमः।।७३।।
लसद्दीप्ताय लिप्ताय विष्णवे प्रभविष्णवे।
वृष्णिमूलाय कृष्णाय श्रीमहाविष्णवे नमः।।७४।।
पश्यामि त्वां महासिंह हारिणं वनमालिनम्।
किरीटिनं कुण्डलिनं सर्वाङ्ग सर्वतोमुखम्।।७५।।
सर्वतः पाणिपादोरं सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम्।
सर्वेश्वरं सदातुष्टं समर्थं समरप्रियम्।।७६।।
बहुयोजन विस्तीर्णं बहुयोजनमायतम्।
बहुयोजनहस्ताङ्घ्रिं बहुयोजन नासिकाम्।।७७।।

महारूपं महावक्त्रं महादंष्ट्रं महाभुजम्।
महानादं महारौद्रं महाकायं महाबलम्।।७८।।
आनाभेर्ब्रह्मणो रूपमागलाद्वैष्णवं तथा।
आशीर्षाद्रन्ध्रमीशानं तदग्रे सर्वतःशिवम्।।७९।।

नमोऽस्तु नारायण नारसिंह नमोऽस्तु नारायण वीरसिंह।
नमोऽस्तु नारायण क्रूरसिंह नमोऽस्तु नारायण दिव्यसिंह।।८०।।
नमोऽस्तु नारायण व्यघ्रसिंह नमोऽस्तु नारायण पुच्छसिंह।
नमोऽस्तु नारायण पूर्णसिंह नमोऽस्तु नारायण रौद्रसिंह।।८१।।
नमो नमो भीषण भद्रसिंह नमो नमो विह्वलनेत्रसिंह।
नमो नमो बृंहित भूतसिंह नमो नमो निर्मलचित्रसिंह।।८२।।
नमो नमो निर्जित कालसिंह नमो नमः कल्पितकल्पसिंह।
नमो नमः कामद कामसिंह नमो नमस्ते भुवनैकसिंह।।८३।।
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
द्रृष्टवाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।।८४।।
अमी हित्वा सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा मुनयसिद्धसङ्घाः स्तुवन्तित्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः।।८५।।
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेदेवा मरुतस्सोमपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुर सिद्ध सङ्घाबीक्षन्ति त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे।।८६।।
लेलिह्यसेग्रसमानस्समन्ताल्लोकान् समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।।८७।।

भविष्णुस्त्वं सहिष्णुस्त्वं भ्राजिष्णुरेव च।
पृथिवीमन्तरिक्षं त्वं पर्वतारण्यमेव च।।८८।।
कलाकाष्ठा विलिप्तस्त्वं मुहूर्त्त प्रहरादिकम्।
अहोरात्रं त्रिसन्ध्या च पक्ष्मासर्त वत्सराः।।८९।।
युगादियुग भेदस्त्वं संयुगे युगसन्धयः।
नित्यं नैमित्तिकं दैनं महाप्रलयमेव च।।९०।।

करणं कारणं कर्त्ता भर्त्ता हर्त्ता त्वमीश्वरः।
सत्कर्त्ता सत्कृतिर्गोप्ता सच्चिदानन्द विग्रहः।।९१।।
प्राणस्त्वं प्राणिनां प्रत्यगात्मा त्वं सर्वदेहिनाम्।
सुज्योतिस्त्वं परं ज्योतिरात्म ज्योतिस्सनातनः।।९२।।
ज्र्योतिर्लोकस्वरूपस्त्वं त्वं ज्योतिर्ज्योतिषां पतिः।
स्वाहाकारः स्वधाकारो वषट्कारः कृपाकरः।।९३।।
हन्तकारो निराकारो वेगाकारश्च शङ्करः।
अकारादिहकारान्त ओंकारो लोककारकः।।९४।।
एकात्मा त्वमनेकात्मा चतुरात्मा चतुर्भुजः।
चतुर्मूर्त्तिश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्वेद मयोत्तमः।।९५।।
लोकप्रियो लोकगुरुर्लोकेशो लोकनायकः।
लोकसाक्षी लोकपतिर्लोकात्मा लोकलोचनः।।९६।।
लोकाधारो बृहल्लोको लोकालोकमयो विभुः।
लोककर्त्ता विश्वकर्त्ता कृतावर्त्तः कृतागमः।।९७।।
अनादिस्त्वमनन्तस्त्वमभूतो भूत विग्रहः।
स्तुतिस्तुत्यस्स्तवप्रीतः स्तोता नेता नियामकः।।९८।।
त्वं गतिस्त्वं मतिर्मह्यं पिता माता गुरुस्सखा।
सुहृदश्चात्मरूपस्त्वं त्वां विना नास्ति मे गतिः।।९९।।
नमस्ते मन्त्ररूपाय अस्त्ररूपाय ते नमः।
बहुरूपाय रूपाय पञ्चरूपधराय च।।१००।।
भद्ररूपाय रूढाय योगरूपाय योगिने।
समरूपाय योगाय योगपीठस्थिताय च।।१०१।।
योगगम्याय सौम्याय ध्यानगम्याय ध्यायिने।
ध्येयगम्याय धाम्ने च धामाधिपतये नमः।।१०२।।
धराधराय धर्माय धारणाभिरताय च।
नमो धात्रे च सन्धात्रे विधात्रे च धराय च।।१०३।।

दामोदराय दान्ताय दानवान्तकराय च।
नमस्संसारवैद्याय भेषजाय नमो नमः।।१०४।।
सीरध्वजाय शीताय वातायाप्रमिताय च।
सारस्वताय संसारनाशनायाक्ष-मालिने।।१०५।।
असिधर्मधरायैव षट्कर्मनिरताय च।
विकर्माय सुकर्माय परकर्म विधायिने।।१०६।।
सुशर्मणे मन्मथाय नमो बर्माय बर्मिणे।
करिचर्मवसानाय कराल बदनाय च।।१०७।।
कवये पद्मगर्भाय भूतगर्भ घृणानिधे।
ब्रह्मगर्भाय गर्भाय बृहद्गर्भाय घूर्जटे।।१०८।।
नमस्ते विश्वगर्भाय श्रीगर्भाय जितारये।
नमो हिरण्यगर्भाय हिरण्यकवचाय च।।१०९।।
हिरण्यवर्ण देहाय हिरण्याक्ष विनाशिने।
हिरण्यकशिपोर्हन्त्रे हिरण्यनयनाय च।।११०।।
हिरण्यरेतसेतुभ्यं हिरण्यवदनाय च।
नमो हिरण्यश्रृङ्गाय निश्श्रृङ्गाय च श्रृङ्गिने।।१११।।
भैरवाय सुकेशाय भीषणायान्त्रिमालिने।
चण्डाय रुण्डमालाय नमो दण्डधराय च।।११२।।
अखण्डतत्वरूपाय कमण्डलुधराय च।
नमस्ते खण्डसिंहाय सत्यसिंहाय ते नमः।।११३।।
नमस्ते श्वेतसिंहाय पीतसिंहाय ते नमः।
नीलसिंहाय नीलाय रक्तसिंहाय ते नमः।।११४।।
नमोहारिद्रसिंहाय धूम्रसिंहाय ते नमः।
मूलसिंहाय मूलाय बृहत्सिंहाय ते नमः।।११५।।
पातालस्थितसिंहाय नमः पर्वतवासिने।
नमो जलस्थसिंहाय अन्तरिक्षस्थिताय च।।११६।।

कालाग्निरुद्रसिंहाय चण्डसिंहाय ते नमः।
अनन्तसिंहसिंहाय अनन्तगतये नमः।।११७।।
नमो विचित्रसिंहाय बहूसिंहस्वरूपिणे।
अभयङ्कर सिंहाय नरसिंहाय ते नमः।।११८।।
सप्तब्धिमेखलायैव सत्यसत्यस्वरूपिणे।
सप्तलोकान्तरस्थाय सप्तस्वरमयाय च।।११९।।
सप्तलोकान्तरस्थाय सप्तस्वरमयाय च।
सप्तार्चीरूपदंष्ट्राय सप्ताश्वरथरूपिणे।।१२०।।
सप्तवायुस्वरूपाय सप्तच्छन्दोमयाय च।
स्वच्छाय स्वच्छरूपाय स्वच्छन्दाय ते नमः।।१२१।।
श्रीवत्साय सुवेधाय श्रुतये श्रुतिमूर्त्तये।
शुचिश्रवाय शूराय सुप्रभाय सुधन्विने।।१२२।।
शुभ्राय सुरनाथाय सुप्रभाय शुभाय च।
सुदर्शनाय सूक्ष्माय निरुक्ताय नमो नमः।।१२३।।
सुप्रभाय स्वभावाय भवाय विभवाय च।
सुशाखाय विशाखाय सुमुखाय मुखाय च।।१२४।।
सुनखाय सुदंष्ट्राय सुरथाय सुधाय च।
सांख्याय सुरमुख्याय प्रख्याताय प्रभाय च।।१२५।।
नमः खट्टवाङ्ग हस्ताय खेटमुद्गर पाणये।
खगेन्द्राय मृगेन्द्राय नागेन्द्राय दृढ़ाय च।।१२६।।
नागकेयूरहाराय नागेन्द्रायाद्य मर्दिने।
नदीवासाय नग्नाय नानारूपधराय च।।१२७।।
नागेश्वराय नागाय नमिताय नराय च।
नागान्तकरथायेव नरनारायणाय च।।१२८।।
नमो मत्स्यस्वरूपाय कच्छपाय नमो नमः।
नमो यज्ञवराहाय नरसिंहाय ते नमः।।१२९।।

विक्रमाक्रान्तलोकाय वामनाय महौजसे।
नमो भार्गवरामाय रावणान्तकराय च।।१३०।।
नमस्ते बलरामाय कंस प्रध्वंसकारिणे।
बुद्धाय बुद्धरूपाय तीक्ष्णरूपाय कल्किने।।१३१।।
आत्रेयायाग्निनेत्राय कपिलाय द्विजाय च।
क्षेत्राय पशुपालाय पशुवक्त्राय ते नमः।।१३२।।
गृहस्थाय वनस्थाय यतये ब्रह्मचारिणे।
स्वर्गापवर्गदात्रे च तद्भोक्त्रे च मुमुक्षवे।।१३३।।
शालग्रामनिवासाय क्षीराब्धिशयनाय च।
श्रीशैलाद्रिनिवासाय शिलावासाय ते नमः।।१३४।।
योगिहृत्पदम्वासाय महाहासाय ते नमः।
गुहावासाय गुह्याय गुप्ताय गुरवे नमः।।१३५।।
नमो मूलाधिवासाय नीलवस्त्रधराय च।
पीतवस्त्राय शस्त्राय रक्तवस्त्रधराय च।।१३६।।
रक्तमालाविभूषाय रक्तगन्धानुलेपिने।
धुरन्धराय धूर्त्ताय दुर्धराय धराय च।।१३७।।
दुर्मदाय दुरन्ताय दुर्धराय नमो नमः।
दुर्निरीक्ष्याय निष्ठाय दुर्दर्शाय द्रुमाय च।।१३८।।
दुर्भेदाय दुराशाय दुर्लभाय नमो नमः।
दृप्ताय दृप्तवक्त्राय अदृप्त नयनाय च।।१३९।।
उन्मत्ताय प्रमत्ताय नमो दैत्यारये नमः।
रसज्ञाय रसेशाय अरक्तरसनाय च।।१४०।।
पथ्याय परितोषाय रथ्याय रसिकाय च।
ऊर्ध्वकेशोर्ध्वरूपाय नमस्ते चोर्ध्वरेतसे।।१४१।।
ऊर्ध्वसिंहाय सिंहाय नमस्ते चोर्ध्वबाहवे।
परप्रध्वंसकायैव शङ्खचक्रधराय च।।१४२।।

गदापद्म धरायैव पंचबाणधराय च।
कामेश्वरायैव कामाय काम पालाय कामिने।।१४३।।
नमः काम विहाराय कामरूपधराय च।
सोमसूर्याग्नि नेत्राय सोमपाय नमो नमः।।१४४।।
नमः सोमाय वामाय वामदेवाय ते नमः।
सामस्वनाय सौम्याय भक्तिगम्याय वै नमः।।१४५।।
कुष्माण्डगणनाथाय सर्वश्रेयस्कराय च।
भीष्माय भीष्मदायैव भीमविक्रमणाय च।।१४६।।
मृगग्रीवाय जीवाय जितायाजितकारिणे।
जटिने जामदग्नाय नमस्ते जातवेदसे।।१४७।।
जपाकुसुमवर्णाय जप्याय जपिताय च।
जरायुजायाण्डजाय स्वेदजायोद्भिजाय च।।१४८।।
जनार्दनाय रामाय जाह्नवीजनकाय च।
जराजन्मादिदूराय प्रद्युम्नाय प्रमोदिने।।१४९।।
जिह्वारौद्राय रुद्राय वीरभद्राय ते नमः।
चिद्रुपाय समुद्राय कद्रुद्राय प्रचेतसे।।१५०।।
इन्द्रियार्येंद्रियज्ञाय नमोस्त्विन्द्रानुजाय च।
अतीन्द्रियज्ञाय साराय इन्दिरापतये नमः।।१५१।।
ईशानाय च ईडयाय ईशिताय इनाय च।
व्योमात्मने च व्योम्ने च नमस्ते व्योमकेशिने।।१५२।।
व्योमाधाराय च व्योमवक्त्रायासुरघातिने।
नमस्ते व्योमदंष्ट्राय व्योमवासाय ते नमः।।१५३।।
सुकुमाराय रामाय शुभाचाराय वै नमः।
विश्वाय विश्वरूपाय नमो विश्वात्मकाय च।।१५४।।
ज्ञानात्मकाय ज्ञानाय विश्वेशाय परात्मने।
एकात्मने नमस्तुभ्यं नमस्ते द्वादशात्मने।।१५५।।

चतुर्विंशतिरूपाय पंचविंशतिमूर्त्तये।
षडिंवशकात्मने नित्यं सप्तविंशतिकात्मने।।१५६।।
धर्मार्थकाम मोक्षाय विरक्ताय नमो नमः।
भावशुद्धाय सिद्धाय साध्याय शरभाय च।।१५७।।
प्रबोधाय सुबोधाय नमो बुद्धिप्रियाय च।
स्निग्धाय च विदग्धाय मुग्धाय मुनये नमः।।१५८।।
प्रियंवदाय श्रव्याय स्रुकस्रुवाय श्रिताय च।
गृहेशाय महेशाय ब्रह्मेशाय नमो नमः।।१५९।।
श्रीधराय सुतीर्थाय हयग्रीवाय ते नमः।
उग्राय उग्रवेगाय उग्रकर्मरताय च।।१६०।।
उग्रनेत्राय व्यग्राय समग्रगुणशालिने।
बालग्रह विनाशाय पिशाचग्रहघातिने।।१६१।।
दुष्टग्रह निहन्त्रे च निग्रहानुग्रहाय च।
बृषध्वजाय वृष्णाय वृषाय वृषभाय च।।१६२।।
उग्रश्रवाय शान्ताय नमः श्रुतिधराय च।
नमस्ते देवदेवेश नमस्ते मधुसूदन।।१६३।।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते दुरितक्षय।
नमस्ते करुणासिन्धो नमस्ते समितिंजय।।१६४।।
नमस्ते नरसिंहाय नमस्ते गरुडध्वज।
यज्ञनेत्र नमस्तेऽस्तु कालध्वज जयध्वज।।१६५।।
अग्निनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते ह्यमरप्रिय।
महानेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते भक्तवत्सल।।१६६।।
धर्मनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते करुणाकर।
पुण्यनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽभीष्टदायक।।१६७।।
नमो नमस्ते जयसिंहरूप नमो नमस्ते नरसिंह रूप।
नमो नमस्ते रणसिंहरूप नमो नमस्ते नरसिंह रूप।।१६८।।

उद्धृत गर्वितं दैत्यं निहत्याजौ सुरद्विषम्।
देवकार्यं महत्कृत्वा गर्जसे स्वात्मतेजसा।।१६९।।
अतिरुद्रमिदं रूपं दुस्सहं दुरतिक्रम्।
दृष्ट्वा तु शङ्कितास्सर्वा देवतास्त्वामुपागताः।।१७०।।
एतान्पश्य महेशानं ब्रह्माणं मां शचीपतिम्।
दिकपालान् द्वादशादित्यान् रुद्रानुरगराक्षसान्।।१७१।।
सर्वान् ऋृषिगणान्सप्तमातृगौरीं सरस्वतीम्।
लक्ष्मीं नदीश्च तीर्थानि रतिं भूतगणान्यपि।।१७२।।
प्रसीद त्वं महासिंह उग्रभावमिमं त्यज।
प्रकृतिस्थो भव त्वं हि शान्तिभावं च धारय।।१७३।।
इत्युक्त्वा दण्डवद्भूमौ पपात स पितामहः।
प्रसीद त्वं प्रसीद त्वं प्रसीदेति पुनः पुनः।।१७४।।

मार्कण्डेय उवाच-

दृष्टवा तु देवताः सर्वाः श्रुत्वा तां ब्रह्मणोगिरम्।
स्तोत्रेणापि च संहृष्टः सौम्यभाव मधारयत्।।१७५।।
अब्रवीन्नारसिंहस्तु वीक्ष्य सर्वान्सुरोत्तमान्।
संत्रस्त्रान् भयसंसिग्नान् शरणं समुपागतान्।।१७६।।

श्रीनृसिंह उवाच-

भो! भो! देववरास्सर्वे पितामह पुरोगमाः।
श्रृणुध्वं मम वाक्यं च भवन्तु विगतज्वराः।।१७७।।
यद्धितं भवतां नूनं तत्करिष्यामि साम्प्रतम्।
एवं नामसहस्रं मे त्रिसन्ध्यं यः पठेत् शुचि।।१७८।।
श्रृणोति वा श्रावयति पूजान्ते भक्तिसंयुतः।
सर्वान्कामानवाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम्।।१७९।।
यो नामभिर्नृसिंहाद्यैरर्चयेत्क्रमशो मम।
सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्।।१८०।।

सर्वपूजासु यत्प्रोक्तं तत्सर्वं लभते भृशम्।
जातिस्मरत्वं लभते ब्रह्मज्ञानं सनातनम्।।१८१।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः तद्विष्णोः परमं पदम्।
मन्नाम कवचं बध्वा विचरेद्विगत ज्वरः।।१८२।।
भूतवेतालकूष्माण्ड पिशाचब्रह्मराक्षसाः।
शाकिनीडाकिनी ज्येष्ठा नीली बाल ग्रहादिकाः।।१८३।।
दुष्टग्रहाश्च नश्यन्ति यक्षराक्षस पन्नगाः।
ये च सन्ध्याग्रहाः सर्वे चाण्डाल ग्रहसंज्ञिकाः।।१८४।।
निशाचर ग्रहास्सर्वे प्रणश्यन्ति च दूरतः।
कुक्षिरोगं च हृद्रोगं शूलापस्मारमेव च।।१८५।।
एकाहिंक द्वयाहिकं च चातुर्थिकमथ ज्वरम्।
आधयो व्याधयोस्सर्वे रोगा रोगाऽधिदेवताः।।१८६।।
शीघ्रं नश्यन्ति ते सर्वे नृसिंहस्मरणात्सुराः।
राजानो दासतां यान्ति शत्रवो यान्ति मित्रताम्।।१८७।।
जलानि स्थलतां यान्ति बह्मयो यान्ति शीतताम्।
विषा अप्यमृता यान्ति नृसिंह स्मरणात्सुराः।।१८८।।
राज्यकामो लभेद्राज्यं धनकामो लभेद्धनम्।
विद्याकामो लभेद्विद्यां बद्धो मुच्येत बन्धनात्।।१८९।।
व्याल व्याघ्र भयं नास्ति चौरसर्पादिकं तथा।
अनुकूला भवेद्भार्या लोकैश्च प्रति पूज्यते।।१९०।।
सुपुत्रं धनधान्यं च भवन्ति विगतज्वराः।
एतत्सर्वं समाप्नोति नृसिंहस्य प्रसादतः।।१९१।।
जल सन्तरणे चैव पर्वतारण्यमेव च।
वनेऽपि विचरन्मर्त्यो दुर्गमे विषमे पथि।।१९२।।
कलिप्रवेशने चापि नरसिंहं न विस्मरेत्।
ब्रह्मघ्नश्च पशुघ्नश्च भ्रूणहा गुरुतल्पगः।।१९३।।

मुच्यते सर्वपापेभ्यः कृतघ्न स्त्रीविघातकः।
वेदानां दूषकश्चापि मातापितृविनिन्दकः।।१९४।।
असत्यस्तु तथा यज्ञनिन्दको लोकनिन्दकः।
स्मृत्वा सकृन्नृसिंहं तु मुच्यते सर्वकिल्विषैः।।१९५।।
बहुनात्र किमुक्तेन स्मृत्वा मां शुद्धमानसः।
यत्र यत्र चरेन्मर्त्यो नृसिंहस्तत्र रक्षति।।१९६।।
गच्छन् तिष्ठन् स्वपन् भुञ्जन् जाग्रन्नपि हसन्नपि।
नृसिंहेति नृसिंहेति नृसिंहेति सदा स्मरण।।१९७।।
पुमान्नलिप्यते पापै र्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।
नारी सुभगतामेति सौभाग्यं च स्वरूपताम्।।१९८।।
भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं च विन्दति।
न सपत्नीं च जन्मान्ते सम्यक् ज्ञानी भवेद्द्विजः।।१९९।।
भूमिप्रदक्षिणन्मर्त्यों यत्फलं लभते चिरात्।
तत्फलं लभते नारसिंहमूर्त्तिप्रदक्षिणात्।।२००।।

मार्कण्डेय उवाच-

इत्युक्तवा देवदेवेशो लक्ष्मीमालिंग्य लीलया।
प्रहलादस्याभिषेकं तु ब्रह्मणे चोपदिष्टवान्।।२०१।।
श्री शैलस्य प्रासादे तु लोकानां च हिताय वै।
स्वरूपं स्थापयामास प्रकृतिस्थोऽभवत्तदा।।२०२।।
ब्रह्मापि दैत्यराजानं प्रहलादमभ्यषेचयत्।
दैवतैस्सह सुप्रीतो ह्यात्मलोलं ययौ स्वयम्।।२०३।।
हिररण्यकशिपो र्भीत्या प्रपलाय शचीपतिः।
स्वर्गराज्यपरिभ्रष्टो युगानामेकविंशतिः।।२०४।।
नृसिंहेन हते ,दैत्ये स्वर्गलोकमवाप सः।
दिक्पालाश्च सुसम्प्राप्तः स्वस्वस्थानमनुत्तमम्।।२०५।।

धर्मे मतिस्समस्तानां प्रजानामभवत्तदा।
एवं नाम सहस्रं मे ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।।२०६।।
पुत्रानध्यापयामास सनकादीन्महामतिः।
ऊचुस्ते च ततः सर्वलोकानां हितकाम्यया।।२०७।।
देवता ऋषयः सिद्धा यक्षविद्याधरोरगाः।
गन्धर्वाश्च मनुष्याश्च इहामुत्रफलैषिणः।।२०८।।
यस्य स्तोत्रस्य पाठाद्धि विशुद्धं मनोऽभवत्।
सनत्कुमारः सम्प्राप्तो भारद्वाजो महामतिः।।२०९।।
तस्मादाङ्गिरसः प्राप्तस्तस्मात्प्राप्तो महाक्रतुः।
जैगीषव्याय स प्राह सोऽब्रवीच्छ चवनाय च।।२१०।।
तस्मा उवाच शाण्डिल्यो गागीय प्राह वै मुनिः।
क्रतुञ्जायाय स प्राह जतुकर्ण्याग संयमी।।२११।।
विष्णुवृद्धाय सोऽप्याह सोऽपि बोधायनाय च।
क्रमात्स विष्णवे प्राह स प्राहोद्धामकुक्षये।।२१२।।
सिंहतेजाश्च तस्माश्च श्रीप्रियाय ददौ च सः।
उपदिष्टोऽस्मि तेनाहमिदं नाम सहस्रकम्।।२१३।।
तत्प्रसादादमृत्युर्मे यस्मात्कस्माद्भदंनहि।
मया च कथितं नारसिंह स्तोत्रमिमं तव।।२१४।।
त्वंहि नित्यं शुचिर्भूत्वा तमाराधय शाश्वतम्।
सर्वभूताश्रयं देवं नृसिंह भक्तवत्सलम्।।२१५।।
पूजयित्वा स्तवं जप्त्वा हुत्वा निश्चल मानसः।
प्राप्स्यसे महर्ती सिद्धिं सर्वान्कामान्वरोत्तमान्।।२१६।।
अयमेव परोधर्मस्त्विदमेव परन्तपः।
इदमेव परं ज्ञानमिदमेव महद्भतम्।।२१७।।
अयमेव सदाचार स्त्वयमेव सदा मखः।
इदमेव त्रयो वेदाः सच्छास्त्राण्यागमानि च।।२१८।।

नृसिंह मन्त्रादन्यश्च वैदिकं तु न विद्यते।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।।२१९।।
कथितं ते नृसिंहस्य चरितं पापनाशनम्।
सर्व मन्त्रमयं तापत्रयोपशमनं परं।।२२०।।
सर्वार्थ साधनं दिव्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।२२१।।

इति श्रीनृसिंह पुराणे नृसिंह प्रार्दुभावे सवार्थसाधनं दिव्यं श्रीमन्लक्ष्मी नृसिंह सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीलक्ष्मी नृसिंहाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

।।ॐ गणेशाय नमः।।

नारसिंहो महासिंहो दिव्यसिंहो महावलः।
उग्रसिंहो महादेवः स्तम्भजश्चोग्रलोचनः।।१।।
रौद्रस्सर्वाद्भुतश्श्रीमान्योगानन्दस्त्रिविक्रमः।
हरिः कोलाहलश्चक्री विजयो जयवर्धनः।।२।।
पंचाननः परं ब्रह्म चाघोरो घोर विक्रमः।
ज्वलन्मुखो ज्वालमाली महाज्वालो महाप्रभुः।।३।।
निटलाक्षः सहस्राक्षो दुर्निरीक्षः प्रतापनः।
महादंष्ट्रायुधः प्राज्ञश्चण्डकोपी सदाशिवः।।४।।
हिरण्यकशिपुध्वंसी दैत्यदानव भंजनः।
गुणभद्रो महाभद्रो बलभद्रस्सुभद्रकः।।५।।
करालो विकरालश्च विकर्त्ता सर्वकर्तृकः।
शिंशुमारस्त्रिलोकात्मा ईशस्सर्वेश्वरो विभुः।।६।।
भैरवाडम्बरो दिव्यश्चाच्युतः कविमाधवः।
अधोक्षजोऽक्षरश्शर्वो वनमाली वरप्रदः।।७।।
विश्वम्भरोऽद्भुतो भव्यश्श्रीविष्णुः पुरुषोत्तमः।
अनघास्त्रो नखास्त्रश्च सूर्यज्योतिस्सुरेश्वरः।।८।।
सहस्रबाहुस्सर्वज्ञस्सर्व सिद्धि प्रदायकः।
वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो महानन्दः परन्तपः।।९।।
सर्वयन्त्रैकरूपश्च सर्वयन्त्र विदारणः।
सर्वतन्त्रात्मकोऽव्यक्तस्सुव्यक्तो भक्तवत्सलः।।१०।।
वैशाखशुक्ल भूतोत्थ शरणागत वत्सलः।
उदार कीर्त्तिः पुण्यात्मा महात्मा चण्डविक्रमः।।११।।

वेदत्रयप्रपूज्यश्च भगवान्परमेश्वरः।
श्रीवत्साङ्क श्रीनिवासो जगद्व्यापी जगन्मयः।।१२।।
जगत्पालो जगन्नाथो महाकायो द्विरूपभृत्।
परमात्मा परंज्योतिः निर्गुणश्च नृकेशरी।।१३।।
परतत्वं परंधाम सच्चिदानन्दविग्रहः।
लक्ष्मीनृसिंहस्सर्वात्मा धीरः प्रहलाद पालकः।।१४।।
इदं श्रीमन्नृसिंहस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद्भक्तया सर्वाभीष्टमवाप्नुयात्।।१५।।

इति श्रीनृसिंह पटले लक्ष्मीनृसिंह पूजाकल्पे
नृसिंहाष्टोतर शतनामस्तोत्रं सम्पूर्णं

श्रीनृसिंह गद्य स्तोत्रम्

–मार्कण्डेय ऋषि कृतः

ॐ गणेशाय नमः

मार्कण्डेय उवाच।

नमोऽस्तु ते देव देव महाचित्त महाकाय महाप्राज्ञ महोद्भव महाकीर्त्ते ब्रह्मेन्द्र चन्द्र सूर्य्यार्चित पादयुगल श्रीपद्महस्त संयमदैत्यदेह अनन्त भोग शयनार्पित सर्वाङ्ग सनक–सनन्दन–सनातन सनत् कुमाराद्यैःर्योगिभिर्नासान्यस्तलोचनैरनवरतमभिचिन्तित मोक्षतत्व गन्धर्वविद्याधरयक्ष किन्नर किम्पुरुषैऽहरहर्गीयमान दिव्य यशः नृसिंह नारायण पद्मनाभ गोविन्द गोवर्धन गुहा निवास योगीश्वर देवेश्वर जलेश्वर महेश्वर योगधर महामायाधर विद्याधर यशोधर कीर्त्तिधर त्रिगुणनिवास त्रितत्वधर त्रेताग्निधर त्रिवेदभाक् त्रिनिकेत त्रिसुपर्ण त्रिदण्डधर स्निग्ध मेघाभ चितिद्युति विराजित पीताम्बरधर कीरीट कनककेयूरहारमणिरत्नांशुदीप्तिविद्योतित सर्वदिश कनकमणि–कुण्डल मण्डित गण्डस्थल मधुसूदन विश्वमूर्त्ते लोकनाथ यज्ञेश्वर यज्ञप्रिय तेजोमय भक्तिप्रिय वासुदेव दुरितापहाराध्य पुरुषोत्तम नमोऽस्तुते नमोऽतुते नमो नमः।।

एतन्नृसिंहगद्यन्तु त्रिकालं यः पठेन्नरः।
मार्कण्डेय इवासौ स्याच्चिरजीवी न संशयः।।

इति मार्कण्डेय ऋषि कृतः
श्री नृसिंह गद्य स्तोत्रं
समाप्तम्

(जगन्नाथपुरी धाम (उड़ीसा) के श्री जगन्नाथ मुक्ति मण्डप ग्रन्थागार से स्व० पण्डित रघुनाथ पञ्चतीर्थ शास्त्री महोदय द्वारा प्रतिलिपि प्राप्त की)

–सम्पादक

(दाक्षिणात्य) नृसिंह–शावर–मन्त्रराज :

(यह पाठ आचार्य पं० रामप्रसाद शर्मा 'ब्रजवासी' ज्योतिष, तन्त्रवेत्ता, वृन्दावन (भोपाल) निवासी से प्राप्त हुआ। उन्हें किन्हीं दाक्षिणात्य विद्वान् ने ताड़पत्र की पोथी से प्रतिलिपि दी थी। इसका अनुष्ठान नृसिंह चतुर्दशी यदि शनिवार, स्वाति नक्षत्र का योग प्राप्त हो तो उक्त महायोग में या किसी सूर्यग्रहण तथा अक्षय तृतीया के दिन सामान्य पूजन पश्चात् एक माला के २१ बार जाप से सिद्ध हो जाता है। सर्व बाधाओं, विपदाओं में रक्षक तथा आत्मोन्नति में सहायक सिद्ध है।)

–सम्पादक

ॐ श्रीनृसिंह गणपतये नमः।।
ॐ वद वद वदन्तं वदत्त्वां दृश्यन्तं विकटा।
व्याघ्र कराल वदना भुक भुक भुकाभ्य प्रज्वलित नयना।
नरहरि तव भुकृतं यं भुजं भावुक्तं प्रकट कटाकार,
कटाभ्यः विकट वदनेति प्रसन्नम्।।१।।

गह गह गह गहाभ्यः ग्रहण ग्रहण ग्रह ग्रहितं
ग्रहणं ग्रहेति हस्तोयां यान्तरं त्राशै बज्रनखै ब्रजोद्भव
जयं जराश्चवजागैः वज्रदंष्ट्रा कराल वज्राद वज्रवत्
बज्रोहं ग्रहैः परात्परः वज्रावताराय सिंहौ जनदं
पदं वज्रेष्टेति प्रसन्नम्।।२।।

नृसिंह होम्दवति नग्न नग्न्यां नग्न्यां गोत्प्रकाश्य
स्यौ भज्वल भज्वल भज्वलश्चलित ज्वाला ज्वाल
माला कराला। कंप कंप कंप कंपाय कंगमूहा कपीन्द्र
द्रंष्टा गर्ज्जित काल काला धग धग धृतये धगभ्य:
दैत्य पहारौ जनदं पदं ज्वाल वदनेति प्रसन्ना।।३।।

क्रुम्भ क्रुम्भ क्रुम्भाभ्य: क्रुद्धै: क्रूरं-क्रूरं, कुंजारं
कुजैक श्रृष्टि चण्डा कम्पय देव लोकैक हा हा हा
हरीन्द्र सिंहैति किं कृत कुहू कर्म, कुहूकूर्मात्कुर्मेति्
पद्धरत भयान्दितौ भूतैश्च पलायतो दंष्ट्रा जनदं
पदं सिंह वदनेति प्रसन्नम्।।४।।

भख, भख भखाभ्य: भखैति भूतै: प्रेत पिशाचै:
दैत्य शस्त्रै समस्तै:श्च दानव ज्वाल ज्वार्ल
प्रज्वर्ल ज्वालितं, जूष्णरं ज्वालिता कल कल
कलाभ्य: कालरूपस्या धवलमीक्त विकारोत्कर
केशव केशरी भक्त जनपदं करालं बदनेति प्रसन्ना।।५।।

रूद्र, रूद्र, रूद्राभ्यां, रूद्रास्वां
गमयानकै:। द्विप्रीतौ छन्नोत्रुत: रूतार्थय हिरण्याक्ष्यं
देवो गर्जिता गर्वेऽदेकं।। दह दह दह दहाभ्य:
द्रक्ता कृत्यं भन्यांछं पूर्णष्कपिलयेश सिंहौश
शरणं जनदं पदं क्रोड वदनेति प्रसन्नम्।।६।।

प्रणाम मन्त्रः-

ॐ तप्त हाटक केशाग्र ज्वलत पावकलोचन।
वज्राधिक नखस्पर्श वज्रसिंह नमोऽस्तुते।।
ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमो नमः।।

संकष्टनाशन–श्रीलक्ष्मी–नृसिंह स्तोत्रम्

–जगद्गुरू शंकराचार्य

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे,
भोगीन्द्र भोगमणिरंजित पुण्यमूर्त्ते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि पोत,
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।१।।

ब्रह्मेन्द्र रुद्रमरुदर्क किरीट कोटि,
संघट्टितांघ्रि कमलामलकान्ति कान्त।
लक्ष्मी लसत्कुचसरोरुह राजहंस,
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।२।।

संसार घोर गहने चरतो मुरारे,
मारोग्र भीकर मृग प्रवरार्दितस्य।
आर्त्तस्य मत्सरनिदाघ निपीड़तस्य,
लक्ष्मीनृसिंह ममदेहि करावलम्बम्।।३।।

संसार कूपमतिघोरमगाध मूलं,
सम्प्राप्य दु:ख शतसर्प समाकुलस्य।

दीनस्य देव कृपणापदमागतस्य,

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।४।।

संसार सागर विशाल कराल काल,

नक्र ग्रह ग्रसन निग्रह विग्रहस्य।

व्यग्रस्य राग रसनोर्मिनिपीड़ितस्य,

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।५।।

संसार वृक्षमघबीज मनन्त कर्म,

शाखा शतं करणपत्रमनंग पुष्पम्।

आरुह्य दुःख फलितं पततो दयालो,

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।६।।

संसार सर्पघन वक्र भयोग्रतीव्र,

दंष्ट्राकरालविषदग्धविनष्ट मूर्त्तेः।

नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे,

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।७।।

संसार दावदहनातुरभीकरोरु,

ज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य।

त्वत्पाद पद्म सरसी शरणागतस्य,

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।८।।

संसार जाल पतितस्य जगन्निवास,

सर्वेन्द्रियार्थ बडिशार्थभक्षोपमस्य।

प्रोत्खण्डित प्रचुरतालुक मस्तकस्य,

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।९।।

संसार भीकर करीन्द्र कुलाभिघात,

निष्पिष्ट मर्म वपुषः सकलार्त्तिनाशः।

प्राण प्रयाण भवभीति समाकुलस्य,

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।१०।।

अंधस्य मे हतविवेक महाधनस्य,

चोरैः प्रभोबलिभिरिन्द्रियनामधेयैः।

मोहान्ध कूप कुहरे विनिपातितस्य,

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।११।।

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो,

वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष।

ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव,

देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम्।।१२।।

यन्माययोर्जितवपुः प्रचुर प्रवाह,

मग्नार्थमत्र निवहोरुकरावलम्बम्।

लक्ष्मीनृसिंह चरणाब्ज मधुव्रतेन,

स्तोत्रं कृतं सुखकरं भुवि शंकरेण।।१३।।

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छंकराचार्य विरचित

"संकष्टनाशनलक्ष्मीनृसिंहस्तुतिः"

सम्पूर्णा

श्रीनृसिंह–नखस्तुतिः

–जगद्गुरु श्रीमध्वाचार्य

पान्त्वस्मान् पुरुहूतवैरिबलवन्मातङ्गमाद्यदघटा
कुम्भोचाद्रिविपाटनाधिकपटुप्रत्येक वज्रायिताः।
श्रीमत्कण्ठीरवस्य प्रततसुनखरा दारिताऽरातिदूर–
प्रध्वस्तध्वान्तशान्तप्रवितमनसा भाविता भूरि भागैः।।१।।

अर्थः– परमकारुणिक आनन्दतीर्थ श्रीमन्मध्वाचार्य पाद भक्तजनों पर अनुग्रह करके सर्वारिष्ट विनाशक भक्तेष्ट चिन्तामणि स्वरूप श्रीनृसिंह भगवान् के श्रीनखों की स्तुति करते हुए कहते हैं–

श्रीनृसिंह भगवान् के विंशति संख्यक, विशाल एवं सुन्दर नख हम सबकी रक्षा करें जो कि, इन्द्र के वैरी बलवान मदमत्त हाथियों के समान दैत्यसमूह के मस्तकरूप उच्च पर्वत को विदीर्ण करने में अत्यन्त चतुर हैं एवं प्रत्येक नख वज्र का सा कार्य करते हैं। जिससे काम क्रोधादिक छैः शत्रु नष्ट हो गये, रागद्वेषादि–दोषरहित, अज्ञानान्धकार शून्य, भगवन्निष्ठ, शान्त, दान्त ऐसे अपने विशाल मन से, विशिष्ट भाग्यशाली भक्तजनों ने प्रतिदिन जिनका ध्यान किया और (भक्त प्रहलाद) की भाँति करते रहते हैं। इस प्रथम श्लोक का छन्दः 'उपजाति' हो गया है।

लक्ष्मीकान्त! समन्ततोऽपि कलयन्नैवेशितुस्ते समं
पश्याम्युत्तमवस्तु दूरतरतोऽपास्तं रसोयोऽष्टमः।
यद्रोषोत्कर दक्षनेत्र कुटिल प्रान्तोत्थिताग्नि स्फुरत्
खद्योतापमविष्फुरलिङ्गभसिता ब्रह्मेश शक्रोत्कराः।।२।।

हे लक्ष्मीकान्त! भगवान्! श्रीनृसिंहदेव! मैं अपने मन से अथवा प्रमाणों से विचार करता हुआ भी, सबके स्वामी आपके सदृश किसी उत्तम वस्तु को, तीनों लोकों में भी नहीं देखता हूँ। कारण कि-लोक और वेद में-"मधुर- लवण-तिक्त, अम्ल, कटु-कषाय" भेद से **छैः** ही रस प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त सातवाँ रस तो शशश्रृंग के समान है ही नहीं- फिर आठवाँ रस तो बहुत दूर ही अपास्त हो गया। अर्थात् छैः रसों से भिन्न कोई सातवाँ या आठवाँ रस भी नहीं है। इसी प्रकार श्रीनृसिंह के सदृश ही कोई देवता नहीं तो उत्तम का तो सर्वथा अभाव है। प्रश्न उठता है-क्या ब्रह्मादि अन्य देवता श्रीनृसिंह के समान या अधिक नहीं हो सकते?

उत्तर- ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र आदि देवताओं के समूह तो जिन श्रीनृसिंहदेव के रोष समूह से भरे दक्षिण नेत्र के कुटिल प्रान्तभाग से उत्पन्न जो प्रलयकालीन अग्नि, उससे चमकते हुए खद्योतों (पटबीजनाओं) के समान प्रकट जो अग्निकण, अर्थात् पतङ्गे हैं, उन्हीं से प्रलयकाल में भस्मीभूत हो जाते हैं। ब्रह्मादि देवताओं के द्वारा क्रियमाण उत्पत्ति, स्थिति, लय आदि कार्य भी श्रीनृसिंहदेव के नेत्रप्रान्त के इशारे के अधीन होने से, ब्रह्मादि देव, न उनके समान हैं, न उत्तम ही हैं, अतः स्वकल्याण चाहने वाले जनों को श्रीनृसिंह भगवान् का ही ध्यान सर्वदा करते रहना चाहिए।।२।।

इति श्री वनमालिदास शास्त्री विरचिता श्रीनृसिंह स्तुति
व्याख्याने मध्वमोदिनी भाषा टीका समाप्ता

नरसिंह महिमा

नृसिंहः।। नरसिंह चक्रवर्ती जागर्ति यदा हृदय वत्तरि।
कामोरिपु स्वरूपः कियान् वरीवर्त्ति मांडलिक भूपः।।१।।
क्रोधांधी कृत नेत्रः सदाजनः स्याद्यदिन भूयात्।
तदुपशमाय विवेकांजन मंजयिता नृसिंहभिषक्।।२।।
लोभाब्धि निपतितानां जनतानां निश्चितं जाने।
श्रीमन्नृसिंह चरणद्वन्द्वं शरणं भवति पोतः।।३।।
श्रीमन्नृसिंह भानोर्यदिभानोर्हृदयकुहरे स्यात्।
मोह तिमिरातिपोषः प्रचण्ड एषः कथं निवृत्तःस्यात्।।४।।
मद मदिरा मद घूर्णित नयनः सुजनऽस्तु पतित एवस्यात्।
नृहरौ प्रायश्चित्तं प्रायश्चित्तंहि विषय दंष्ट्रा स्यात्।।५।।
मात्सर्याशी विषचरदाशी विषमूर्छितोहि लोकःस्यात्।
नरसिंहः कारुणिकश्चे विषवैद्यो जांगलिकः सखेनस्यात्।।६।।
हृदयदरी कुहरान्मे प्रादुर्भूयारि षड्वर्गे।
नरचरास्त्रं सु समर्थं नरसिंह दयानिधे तेस्तु।।७।।
नृहरे निश्चित मेतस्वमव्ययी भावतां भजसि।
जानेच्चयेन साकं त्वया समर्थेन यत्समासोस्ति।।८।।
उत्तरपदप्रधानं तत्पुरुषं त्वां हि तत्पुरुष जाने।
भेदाभेद विवक्षा विषयेप्युभयत्र साधुता तवास्ति यतः।।९।।

तद्धितविषये स्वोत्तरपदे च परतः समाहारे।
द्विगुरि च नरसिंहोयं स्वानुगृहीतेषु विजयते नित्यं।।१०।।
लक्ष्मीपते प्रधाना प्रर्द्यूनयोग वयोर्याचे।
सा मानाधिकरिण्याद् भेदमिह कर्मधारयवत्।।११।।
नृहरे यतो विजयसे प्रथमांत विभक्ति ता परो बहुव्रहिः।
चित्रमिदं ना कलये स्वान्य पदार्थ प्रधानं तां भजसि।।१२।।
भेदेपि विद्यमाने सदा वयो द्वंद्ववन्नृहरे।
याचेदशा विशेषे नियमेन तवैकवद्भावं।।१३।।
ग्रस्तः क्रूराहन्ता डाकिन्या मन्मनोबालः।
मुक्तः कथमपि नस्याद्य दिनस्यान्मात्रिको नृहरिः।।१४।।
विषयेपुयाहि ममता मम तापं सा कथं तनुतां।
भक्त जनेषु सहृदये हृदये नृहरौ सुधाकरे वसति।।१५।।
नृहरेः सुदक्षिणं हस्तः दोवि पत्ति संदोह संहारि।
नित्यं यदीय मस्तके सुख मारते निश्चितं सजनः।।१६।।
नरसिंह चरण कमल द्वितयी यस्यांतरे वीरीवर्ति।
स नरः कदापि लोके न दुःख भाग्यवति निश्चितं जाने।।१७।।
हृदय दरी कुहर च्छात्सिंहादिव नारसिंहान्नु।
भीताहि दुःखकरिणः प्रयान्ति पुरतः कदापिन न मे।।१८।।
नरसिंह सत्प्रर्तप प्रताप सन्तापितान्तिरां।
अति दुःसहा विनीतात् शीतान्नहि वे यतेकायः।।१९।।
ग्रीष्मोष्ण करोष्ण दवाग्निना सखे किं न दग्धःस्यां।
नरसिंह दृष्टि पीयूष वृष्टि धाराभिराप्लुतो हि यदि न स्यां।।२०।।
विषयेषुयोनुरागः सापराधस्तत् चित्तसोनुरागश्चेत्।
नरहरि चरणाम्भोज़द्वितये हि कृतार्थ मेनस्यात्।।२१।।
नरसिंह महागर्जित भय तर्जित एष कुत्र विगत स्यात्।
द्वेषहरिणः पलाय्य प्रायः खल हृदय कन्दरा नस्युः।।२२।।

नरसिंह भक्तियुक्तः सदा विमुक्तः सुखी सुभक्त जनः।
स्वर्ग प्राप्ति वरेण्यं यागज पुण्यंन्न याचते शिथिलम्।।२३।।
नृहरे तवैव साक्षात्कृतात्कटाक्षान्मदीय हि।
कृत मानस सन्तापं प्रयात पापं यतः समागतं तत्र।।२४।।
मत्संपत्ति विपत्ति यतः समुत्पत्ति मापन्ने।
नरसिंह कृपादूती तत्रैव प्राययतु शीघ्रं।।२५।।
यदि नरसिंह दयास्ते मदीय मस्ते सखे नित्यं।
जाने हृदि बन्धे न च मोक्षेण च नैव मे कार्यं।।२६।।
स्वातन्त्र्यं लभते यः क्रिया प्रधानत्वमाप्तः सन्।
आख्यातार्थः कर्त्ता नृहरिश्रू समानतां भजति।।२७।।
सकर्त्तुरीप्सिततमं फलं प्रधानं विकार्य निवर्त्य।
सप्प्राप्यं च तदात्वं कर्म च नृहरिं समं जाने।।२८।।
साधकतमं च करणं संसारमहार्णवं तरितुम्।
नरसिंह चरणयुगलं करणं च समानतां भजति।।२९।।

।।इति केनचित्।।

श्रीनारसिंह–महामन्त्र–प्रयोग:

–आचार्य पं० केशवदेव शास्त्री
वृन्दावन

हरि: ॐ अद्यत्यादि देशकाल तिथिवारादि उच्चारण कर "अद्य मम वर्त्तमान शरीरस्थ कायिक वाचिक मानसिक भुक्ताभुक्त पीतापीत ज्ञाताज्ञात जन्मजन्मान्तरीय महापाप रूप सकल विधि रोग पीड़ा, भूत प्रेतादि दुष्ट ग्रहबाधादि सर्वारिष्ट शान्तये संर्वतो विजयारोग्य समृद्धि प्राप्तये च यथा संख्यैतद्दिनावधि पर्यन्त श्रीनृसिंह महामन्त्रैर्नित्यहवनमहं करिष्ये"। प्रसन्नतां यातु भगवान् नृसिंह:।

श्रीनृसिंह मूल मन्त्र:– ॐ क्ष्रौं ह्रीं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहम् भीषणं भद्रं मृत्यु–मृत्युं नमाम्यहम् ह्रीं क्ष्रौं नृसिंहाय नम:।। ॐ सहस्रार हुं फट्। अष्टोत्तर शतं नित्यं जपेत्।

अथ हवन मन्त्रा:– ॐ आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट् ॐ उग्राय नमो ममाद्य वर्त्तमान व्याधि रूप सर्वारिष्ट नाशनाय ॐ आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट् स्वाहा:।।

इसी प्रकार से आद्यन्त बीज "ममाद्य वर्त्तमान के आगे जो रोग पीड़ा ग्रह बाधा शत्रुशमन विजय" आदि पद लगाकर मन्त्र पूर्ण पढ़कर हवन करें। हवन के लिए घी, खाँड़ (शक्कर) पंचमेवा अथवा शुद्ध गौदुग्ध की खीर, घी, मेवा मिलाकर अभावे यव, तिल हवन सामग्री से ही करें। जो भी सुलभ हो सो निम्नोक्त नव मन्त्रों से एक सहस्र १०८–७२–५४–३६–२८ (से कम न करें) श्रद्धा एवं निष्ठा प्रधान हैं। मन्त्र यथा:– ॐ उग्राय नम: स्वाहा:। ॐ वीराय नम: स्वाहा। ॐ महाविष्णवे नम: स्वाहा:। ॐ ज्वलन्ताय

नमः स्वाहाः। ॐ सर्वतोमुखाय नमः स्वाहाः। ॐ नृसिंहाय नमः स्वाहाः। ॐ भीषणाय नमः स्वाहाः। ॐ भद्राय नमः स्वाहाः। ॐ मृत्युमृत्यवे नमः ॐ आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट् स्वाहाः। इनका हवन, जप जितेन्द्रिय, आहार व्यवहार शुद्धक्रम से करें। यदि श्रीवैष्णव हो तो अति ही उत्तम। इस विधान से कठीन से कठीन रोगादि शान्ति सहज है। १०८ हवन ४० दिन तक करने वाला भयङ्कर बाधा का नाश हो जाता है।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के रिक्त स्थलों में प्रायः कुछ सावर मन्त्र या औषधी प्रयोग विधिः लिखे रहते हैं। उनमें निम्न दो मन्त्रों के नमूने-

ऊपरी बाधा एवं भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र

1. ॐ नमो नरसिंहाय ॐ ह्लां ह्लीं हूं भूत नायक समस्त भुवन भूतानि साधय हूं हूं हूं फट् स्वाहा। (इस मन्त्र से मोर पंख को तीन बार झाड़ा लगाना)

2. ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्षस्थल विदारण्य त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भव समस्त दोषान् हन हन सर सर कम्प कम्प मथ मथ हुं फट् फट् फट् ढः ढः ढः महारुद्रो जाययानि स्वाहाः।।

(विधिः- इस मन्त्र से मोरपंख द्वारा १०८ बार झाड़ा लगा दें भूत-प्रेत तथा अन्य बाधा समाप्त हो जाता है)

3. "श्रीनृसिंह, जय नृसिंह, जय जय नृसिंह" का जाप करते हुए यात्रा करने पर शुभ होता है।

प्रह्लाद कृत: नृसिंहस्तव:

नारद उवाच

एवं सुरादय: सर्वे ब्रह्मरुद्रपुर:सरा:।
नोषैतुमशकन् मन्युसंरम्भं सुदुरासदम्।।१।।
साक्षाच्छ्री: प्रेषिता देवैर्दृष्ट्वा तन्महदद्भुतम्।
अदृष्टाश्रुतपूर्वत्वात् सा नोपेयाय शङ्किका।।२।।
प्रह्लादं प्रेषयाभास ब्रह्मावस्थितमन्तिके।
तात प्रशमयोपेहि स्वपित्रे कुपितं प्रभुम्।।३।।
तथेति शनकै राजन् महाभागवतोऽर्भक:।
उपेत्य भुवि कायेन ननाम विधृताञ्जलि:।।४।।
स्वपादमूले पतितं तमर्भकं विलोक्य देव: कृपया परिप्लुत:।
उत्थाप्य तच्छीर्ष्ण्यदधात् कराम्बुजं कालाहिवित्रस्तधियां कृताभयम्।।५।।
स तत्करस्पर्शधुताखिलाशुभ: सपद्यभिव्यक्तपरात्मदर्शन:।
तत्पादपद्मं हृदि निर्वृतो दधौ हृष्यत्तनु: क्लिन्नहृदश्रुलोचन:।।६।।
अस्तौषीद्धरिमेकाग्रमनसा सुसमाहित:।
प्रेमगद्गदया वाचा तन्न्यस्तहृदयेक्षण:।।७।।

प्रह्लाद उवाच

ब्रह्मादय: सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धा: सत्त्वैकतानमतयो वचसां प्रवाहै:।
नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रु: किं तोष्टुमर्हति स मे हरिरुग्रजाते:।।८।।

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौजस्तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः।
नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो भक्त्या तुतोष भगवान् राजयूथपाय।।९।।
विप्राद् द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखाच्छ्वपचं वरिष्ठम्।
मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थप्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः।।१०।।
नैवात्मनः प्रभुरयं निजलाभपूर्णो मानं जनादविदुषः करुणो वृणीते।
यद् यज्जनोभगवते विदधीत मानं तच्चात्मने प्रतिमुखस्य यथा मुखश्रीः।।११।।
तस्मादहं विगतविक्लव ईश्वरस्य सर्वात्मना महि गृणामि यथामनीषाम्।
नीचोऽजया गुणविसर्गमनुप्रविष्टः पूयेत येन हि पुमाननुवर्णितेन।।१२।।
सर्वे ह्यमी विधिकरास्तव सत्त्वधाम्नो ब्रह्मादयो वयमिवेश न चोद्विजन्तः।
क्षेमाय भूतय उतात्मसुखाय चास्य विक्रीडितं भगवतो रुचिरावतारैः।।१३।।
तद् यच्छ मन्युमसुरश्च हतस्त्वयाद्य मोदेत साधुरपि वृश्चिकसर्पहत्या।
लोकाश्च निर्वृतिमिताः प्रतियन्ति सर्वेरूपं नृसिंह विभयाय जनाः स्मरन्ति।।१४।।
नाहं विभेम्यजित तेऽतिभयानकास्यजिह्वार्कनेत्रभ्रुकुटीरभसोग्रदंष्ट्रात्।
आन्त्रस्रजः क्षतजकेसरशङ्कुकर्णान्निर्ह्रादभीतदिगिभादरिमिन्नखाग्रात्।।१५।।
तस्तोऽस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्रसंसारचक्रकदनाद् ग्रसतां प्रणीतः।
बद्धः स्वकर्मभिरुशत्तम तेऽङ्घ्रिमूलं प्रीतोऽपवर्गशरणं ह्वयसे कदा नु।।१६।।
यस्मात् प्रियाप्रियवियोगसयोगजन्मशोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः।
दुःखौषधं तदपि दुःखमतद्धियाहं भूमन् भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्।।१७।।
सोऽहं प्रियस्य सुहृदः परदेवताया लीलाकथास्वत नृसिंह विरिश्चगीताः।
अन्नस्तितर्म्यनुगृणन् गुणविप्रमुक्तो दुर्गाणि ते पदयुगालयहंससङ्गः।।१८।।
बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह नार्तस्य चागदमुदन्वति मज्जतो नौः।
तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्टस्तावद् विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्।।१९।।
यस्मिन् यतो यर्हि येन च यस्य यस्माद् यस्मै यथा यदुत यस्त्वपरः परोवा।
भावः करोति विकरोति पृथक्स्वभावः संचोदितस्तदखिलं भवतः स्वरूपम्।।२०।।
माया मनः सृजति कर्ममयं बलीयः कालेन चोदितगुणानुमतेन पुंसः।
छन्दोमयं यदजयार्पितषोडशारं संसारचक्रमज कोऽतितरेत् त्वदन्यः।।२१।।

सत्वं हि नित्यविजितात्मगुणः स्वधाम्ना कालो वशीकृतविसृज्यविसर्गशक्तिः।
चक्रे विसृष्टमजयेश्वर षोडशारे निष्पीड्यमानमुपकर्ष विभो प्रपन्नम्।।२२।।
दृष्टामयादिविविमोऽखिलधिष्ण्यपानामायुः श्रियो विभव इच्छति याञ्जनोऽयम्।
येऽस्मपितुः कुपितहासविजृम्भितभ्रूविस्फूर्जितेन लुलिताः स तु ते निरस्तः।।२३।।
तस्मादमूस्तनुभृतामहमाशिषो ज्ञ आयुः श्रियं विभवमैन्द्रियमाविरिश्चात्।
नेच्छामि ते विलुलितानुरुविक्रमेण कालात्मनोपनय मां निजभृत्यपार्श्वम्।।२४।।
कुत्राशिपः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः क्वेदं कलेवरमशेरुजां विरोहः।
निर्विद्यते न तु जनो यद्पीति विद्वान् कामानलं मधुलवैः शमयन् दुरापैः।।२५।।
क्वाहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन् जातः सुरेतरकुले क्व तवानुकम्पा।
न ब्राह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः।।२६।।
नैषा परावरमतिर्भवतो ननु स्याज्जन्तोर्यथाऽऽत्मसुहृदो जगतस्तथापि।
संसेवया सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवानुरूपमुदयो न परावरत्वम्।।२७।।
एवं जनं निपतितं प्रभवाहिकूपे कामाभिकाममनु यः प्रपतन् प्रसङ्गात्।
कृत्वाऽऽत्मसात् सुरर्षिणा भगवान् गृहीतः सोऽहं कथं नु विसृजे तवभृत्यसेवाम्।।२८।।
मत्प्राणरक्षणमनन्त पितुर्वधश्च मन्ये स्वभृत्यऋषिवाक्यमृतं विधातुम्।
खड्गं प्रगृह्य यदवोचदसद्विधित्सुस्त्वामीश्वरो मदपरोऽवतु कं हरामि।।२९।।
एकस्त्मेव जगदेतदमुष्य यत् त्वमाद्यन्तयोः पृथगवस्यसि मध्यतश्च।
सृष्ट्वा गुणव्यतिकरं निजमाययेदं नानेव तैरवसितस्तदनुप्रविष्टः।।३०।।
त्वं वा इदं सद्सदीश भवांस्ततोऽन्यो माया यदात्मपरबुद्धिरियं ह्यपार्था।
यद् यस्य जन्म निधनं स्थितिरीक्षणं च तद् वै तदेव वसुकालवदष्टितर्वोः।।३१।।
न्यस्येदमात्मनि जगद् विलयाम्बुमध्ये शेषेऽऽत्मना निजसुखानुभवो निरीहः।
योगेन मीलितदृगात्मनिपीतनिद्रस्तुर्ये स्थितो न तु तमो न गुणांश्च युङ्क्षे।।३२।।
तस्यैव ते वपुरिदं निजकालशक्त्या संचोदितप्रकृतिधर्मण आत्मगूढम्।
अम्भस्यनन्तशयनाद् विरमत्समाधेर्नाभेरभूत स्वकणिकावटवन्महाब्जम्।।३३।।
तत्सम्भवः कविरतोऽन्यदपश्यमानस्त्वां बीजमात्मनि ततं स्वबहिर्विचिन्त्य।
नाविन्ददब्दशतमप्सु निमज्जमानो जातेऽङ्कुरे कथमु होपलमेत बीजम्।।३४।।

स त्वात्मयोनिरतिविस्मित आस्थितोऽब्जं कालेन तीव्रतपसा परिशुद्धभावः।
त्वामात्मनीश भुवि गन्धमिवातिसूक्ष्मं भूतेन्द्रियाशयमये विततं ददर्श।।३५।।
एवं सहस्रवदनाङ्घ्रिशिरःकरोरुनासास्यकर्णनयनाभरणायुधाढ्यम्।
मायामयं सदुपलक्षितसंनिवेशं दृष्ट्वा महापुरुषमाप मुदं विरिञ्चः।।३६।।
तस्मै भवान् हयशिरस्तनुवं च बिभ्रद् वेदद्रुहावतिबलौ मधुकैटभाख्यौ।
हत्वाऽऽनयच्छ्रुतिगणांस्तु रजस्तमश्च सत्त्वं तव प्रियतमां तनुमामनन्ति।।३७।।
इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझषावतारैर्लोकान् विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्।
धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं छन्नः कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम्।।३८।।
नैतन्मनस्तव कथासु विकुण्ठनाथ सम्प्रीयते दुरितदुष्टमसाधु तीव्रम्।
कामातुरं हर्षशोकभयैषणार्तं तस्मिन् कथं तव गतिं विमृशामि दीनः।।३९।।
जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृप्ता शिश्नोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित्।
घ्राणोऽन्यतश्चपलदृक् क्व च कर्मशक्तिर्बह्व्यः सपत्न्य इव गेहपतिं लुनन्ति।।४०।।
एवं स्वकर्मपतितं भववैतरण्यामन्योन्यजन्ममरणाशनभीतभीतम्।
पश्यञ्जनं स्वपरविग्रहवैरमैत्रं हन्तेति पारचर पीपृहि मूढमद्य।।४१।।
को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन् प्रयास उत्ताराणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः।
मूढेषु वै महदनुग्रह आर्तबन्धो किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः।।४२।।
नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्यास्त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः।
शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थमायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान्।।४३।।
प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा मौनं चरन्ति बिजने न परार्थनिष्ठाः।
नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एको नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये।।४४।।
यन्मैथुनादि गृहमेधिसुखं हि तुच्छं कण्डूयनेन करयोरिव दुःखदुःखम्।
तृप्यन्ति नेह कृपणा बहुदुःखभाजः कण्डूतिवन्मनसिजं विषहेत धीरः।।४५।।
मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्मव्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः।
प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम्।।४६।।
रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे बीजाङ्कुराविव न चान्यदरूपकस्य।
युक्ताः समक्षमुभयत्र विचिन्वते त्वां योगेन वह्निमिव दारुषु नान्यतःस्यात्।।४७।।

त्वं वायुरग्निरवनिर्वियदम्बुमात्राः प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदनुग्रहश्च।
सर्वं त्वमेव सगुणो विगुणश्च भूमन् नान्यत् त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम्।।४८।।
नैते गुणा न गुणिनो महदादयो ये सर्वे मनःप्रभृतयः सहदेवमर्त्याः।
आद्यन्तवन्त उरुगाय विदन्ति हि त्वामेवं विमृश्य सुधियो विरमन्ति शब्दात्।।४९।।
तत् तेऽर्हत्तम नमःस्तुतिकर्मपूजाः कर्म स्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम्।
संसेवया त्वयि विनेति षडङ्गया किं भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत।।५०।।

नारद उवाच

एतावद्वर्णितगुणो भक्त्या भक्तेन निर्गुणः।
प्रह्लादं प्रणतं प्रीतो यतमन्युरभाषत।।५१।।

श्रीभगवानुवाच

प्रह्लाद भद्रं ते प्रीतोऽहं तेऽसुरोत्तम।
वरं वृणीष्वाभिमतं कामपूरोऽस्म्यहं नृणाम्।।५२।।
मामप्रीणत आयुष्मन् दर्शनं दुर्लभं हि मे।
दृष्ट्वा मां न पुनर्जन्तुरात्मानं तप्तुमर्हति।।५३।।
प्रीणन्ति ह्यथ मां धीराः सर्वभावेन साधवः।
श्रेयस्कामा महाभागाः सर्वासामाशिषां पतिम्।।५४।।
एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः।
एकान्तित्वाद् भगवति नैच्छत् तानसुरोत्तमः।।५५।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे
प्रह्लादचरिते भगवत्स्तवो नाम नवमोऽध्यायः ९

परिशिष्ट

वैष्णव सम्प्रदायों के मन्दिरों में वर्ष भर में मनाये जाने वाले उत्सवों की श्रृंखला में गाये जाने वाले पदों को वर्षोत्सव पद कहा जाता है। उसी क्रम में "श्रीनृसिंह चतुर्दशी उत्सव" पदों में से दो पद यहाँ देखें-

नृसिंह जयन्ती पद

१. <u>कान्हरो धमार</u>

निकसे स्तम्भ बीच तें नरहरि
हिरण्यकशिपु को उदर विदारयें
दै सिर तिलक भक्त अपने कों,
हस्त कमल सिर उपर धारयौ।।
जल ते राखि, अग्नि तें राख्यो,
गिर पर तें लै डारयौ।
जय जयकार भयो भू ऊपर,
सुर नर मुनिजन कोटि निहारयौ
कमला हरि जू के निकट न आवें,
ऐसो रूप कबहूँ न धारयो।
प्रहलादें चूमत अरु चाटत,
भक्त हृदय धरि क्रोध निवार्‌यौ
असुर मारि कियो निस्तारो,
धरनी को सब भार उतारयौं।
'श्रीभट' के प्रभु दियो अभय पद,
भक्त ताप तत छिन निस्तारयो।।

-श्रीभट देवाचार्य कृतः

(उत्सव सुख) युगल शतक

२. <u>धमार</u>

अपनो जन प्रहलाद उबारयो
खम्भ बीच तें प्रगटे नरहरि हिरणाकशिपु उर नखन बिदार्यौ।।
बरषत कुसुम शब्द धुनि जै जै देखत सब कौतुक तिहारो।
कमला हरि जू के निकट न आवे, ऐसो रूप हरि कबहूँ न धारयो।
दीनो राज भक्त अपने कों हस्त कमल सिर उपर धारयो।
'सूरदास' प्रभु भक्त वत्सल हरि अपनो जन सङ्कट ते टारयौ।

ऐसे अनेक पद हैं। मात्र दो ही यहाँ दिया गया। गोकुल में एकबार नृसिंह चौदस में उत्सव दर्शन एवं समाज गायन श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ था। ऐसे ही बंगला में 'श्रीकृष्ण प्रेम तरंगिणी' से प्रहलाद चरित गायन, तथा असम के वैष्णव मठ एवं सत्रों में महापुरुष श्री शंकरदेव रचित संगीत पद में भागवत के अन्तर्गत श्री प्रहलाद चरित गायन होता है। उड़ीसा में श्रीजगन्नाथ दास रचित पदों में "उड़ीया भागवत" के अन्तर्गत श्रीनृसिंह लीला गायन एवं लीलानुकरण होता है। महाराष्ट्र में "तमाशा" में गायन मण्डली गायन एवं साजसज्जा में प्रह्लाद चरित प्रदर्शन करते हैं। दक्षिण भारत में कुचिपुड़ी नृत्यम् तथा अन्य नृत्य में प्रहलाद चरित प्रभावशाली होता है। जयपुर के नृसिंह चौदश के दिन उत्सव श्रृंखला में पूजा अभिषेक पद गायन तथा नृसिंह नृत्य जो कि घुटनों के बल पर ताल पर घूमते हुए राजमार्ग पर शानदारी से निकाला जाता है। राजस्थान के अन्य भागों में भी यह उत्सव प्रसिद्ध है।

अन्त में निवेदन यह है कि इस घोर कलियुग में भगवान के पावन नाम का ही एक मात्र आश्रय है। चाहे वह स्तव,

स्तोत्र या सहस्रनाम हो, वे सभी प्रभु के नाम, रूप गुणावली स्मरण में सहायक है। भगवान श्रीनृसिंह देव की महिमा उनके स्तव, कवच, आदि में व्याप्त है। कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि भव उतरहिं पारा।। गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज कहते हैं:-

रामनाम नरकेशरी, कनककशिपु कलिकाल।
जापक जन पहलाद जिमि पालिहिं दलि सुरसाल।।

-(रा०च०मा० बाल दोहा २७)

श्रीनृसिंहदेवशरणं ममास्तु!

भागवतान्तर्गत श्री नृसिंह मंत्र

विभिन्न पुराणों में भगवान् श्रीनृसिंह देव की महिमा स्तुति, यशोगान वर्णित है। श्रीनृसिंह परिचर्या ग्रन्थ में भगवान् नृसिंह विग्रह की पूजा, अर्चना महाभिषेक आदि का प्रकार एवं विधि है, वहाँ कहा गया है कि श्रद्धापूर्वक भगवान् के विग्रहों का दर्शन ध्यान से जीव मात्र का कल्याण सम्भव है। भगवान् श्रीनृसिंह देव की प्राचीन अर्च्चा विग्रहों की चित्रावली का ग्रन्थ में यथा साध्य समावेश किया गया है।

श्रीमद् भागवत पंचम स्कन्ध: के अष्टादशाध्याय में एक मन्त्र है उक्त मन्त्र के जप से बाधायें दूर होती हैं तथा प्रभु की कृपा प्राप्ति में सहायक हैं-

''ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भव बज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान् रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा अभयमभयमात्मनि भूयिष्ठा ॐ क्षौम्।।''

चित्रावली

केशीघाट वृन्दावन में स्वरूप धारण कर नृत्य करते हुए
भगवान श्री नृसिंह के रुप में श्री ब्रजेश गोस्वामी, वृन्दावन

भक्त विष्वकसेन की निष्ठा पर शिवलिंग से नृसिंह प्राकट्य

उग्र नृसिंह का हिरण्यकशिपु से युद्ध

प्राची[illegible]

(अठखम्भा, [illegible])

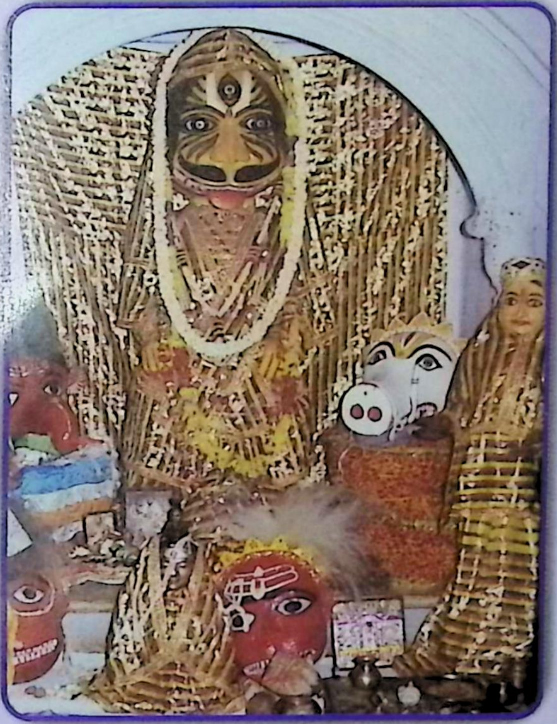

श्री योग्यानन्द

(दक्षिण भारत)

भगवान नृसिंह देव

(केशीघाट, वृन्दावन)

जगन्नाथदेव का
नृसिंह वेश, पुरीधाम

जगन्नाथदेव का
नृसिंह रूप, चित्रपट

भगवान नृसिंह

इस्कॉन, न्यू वृन्दावन (अमेरिका)

भगवान नृसिंह

इस्कॉन, मायापुर (प. बंगाल)

भगवान नृसिंह

सोलिंघर (दक्षिण भारत)

भगवान नृसिंह

नमक्कल (दक्षिण भारत)

भगवान नृसिंह

मेलकोट 1 (चेन्नई)

भगवान नृसिंह

मेलकोट 2 (चेन्नई)

भगवान नृसिंह

सिंगापेरुमल कॉइल (दक्षिण भारत)

भगवान नृसिंह

तिरूकोषतिवुर (दक्षिण भारत)

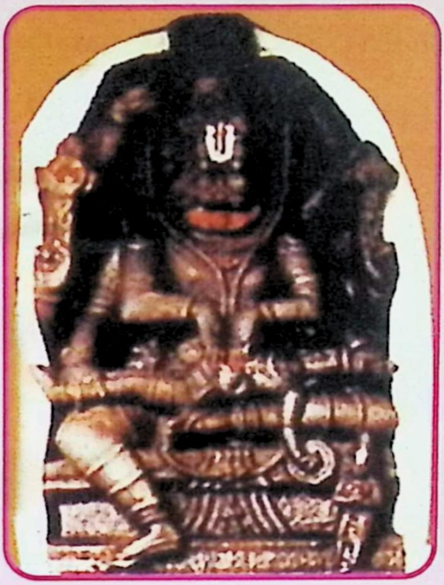

श्री ज्वाला

(दक्षिण भारत)

श्री चत्रवत

श्री अहोबिला

(चेन्नई)

श्री भार्गव

श्री क्रोदा

श्री क्रंजा

(दक्षिण भारत)

श्री पावना

श्री मालोआ

(दक्षिण भारत)

वृन्दावन शोध संस्थान के प्रकाशन

ब्रज की रासलीला : लेखक डॉ. प्रभुदयाल मीतल — रु. 100.00

दशश्लोकी (सटीक) : संपादक-डॉ. कमलेश पारीक — रु. 30.00

केवलराम कृत रासमान के पद : संपादक-प्रो. एलन एंट्विसिल — रु. 30.00

स्वामी चरणदास कृत रहस्यदर्पण एवं रहस्यचन्द्रिका
संपा.-डॉ. रामदास गुप्त और डॉ. शरण विहारी गोस्वामी — रु. 45.00 पेपरबैक रु. 60.00 सजिल्द

रसिक कर्णाभरण (लीला) : संपादक-डॉ. नरेशचन्द्र बंसल — रु. 40.00 पेपरबैक रु. 60.00 सजिल्द

स्मरण दर्पण : संपादक-गोपालचन्द्र घोष — रु. 25.00 पेपरबैक रु. 35.00 सजिल्द

यमुना एवं यमुनाष्टक : संपादक-वृन्दावन विहारी गोस्वामी — रु. 110.00 पेपरबैक रु. 125.00 सजिल्द

छन्दः कौस्तुभ : संपादक- डॉ. कमलेश पारीक — रु. 175.00 पेपरबैक रु. 210.00 सजिल्द

मथुरा माहात्म्य : संपादक-डॉ. उमा भास्कर — रु. 100.00 पेपरबैक रु. 150.00 सजिल्द

श्री गोपाल पाठावली :
संपादक- चन्द्रधर त्रिपाठी और गोपालचन्द्र घोष — रु. 40.00 पेपरबैक रु. 100.00 सजिल्द

ब्रज की लोक कथाएँ : डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' — रु. 80.00 पेपरबैक रु. 90.00 सजिल्द

श्रृंगार सरसी : अनुवाद/संपादन डॉ. कमलेश पारीक — रु. 300.00

Rasman Ke Pad (Keval Ram)
Edt. by Prof. Alan W. Entwistle — Rs.45.00 (English Version)

Vrindavan in Vaishnava Literature
by Dr. M. Corocoran — Rs.375.00

An Early Testamentary Documents in Sanskrit
By Tarapada Mukherjee & Prof. J.C. Wright — Paper Back Rs. 10.00

चन्द्रकला, संपादक-डॉ. नरेशचन्द्र बंसल, — रू. 350.00

राधिका पाठावली, संपादक- गोपालचन्द्र घोष, — रु. 100.00

Vaishnava Tilakas, Prof. Alan W. Entwistle — रु. 150.00

गोधूलिबेला, डॉ. रामदास गुप्त का काव्य संकलन — रु. 250.00

गीत-गन्धा, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' का गीत संकलन — रु. 100.00

Recent Advances of Conservation of Manuscripts
Edit. Pro. Govind Sharma & Pradeep Banerjee — Rs.175.00

श्रीमद्भागवत दिव्य दर्शन, डॉ. रजनी भटनागर — रु. 80.00

रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (उ० प्र०) भारत

फोन-91-0565-2540628, फैक्स-2540576

e-mail-vrivbn@sancharnet.in website: www.vrindavanresearch.org

Vidyalaya Press

J
JAC